जीवन-संघर्ष

जीवन-संघर्ष

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

JEEVAN-SANGHARSH (जीवन-संघर्ष)
A Maithili Novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-29-2
दाम: 350/- (भा.रु.)

छठम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2010, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती मिंकी दास, ओलीपुर (मधुबनी), बिहार: 847404
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक

ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार

संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रमः

एक

कातिकक अनहरिया। रौदियाह समय भेने जेठेक रौद जकाँ रौदो कड़गर, तैपर सँ जनमारा उम्मस। जहिना छींच स्नानसँ देहपर पानिक टघार चलैत तहिना पसेना देहपर टघरैत। दस बजेक पछाइत बाध-बोन दिस आँखि नै उठौल जाइत, तेते झड़क! मुदा घरोमे चैन कहाँ? माथक पसेना नाकपर होइत टप-टप खसैत! देहक वस्त्र गन्हकैत! औल-बौल करैत सबहक मन..!

आठमे दिन दियारी छी तहूमे काली-पूजा करैक विचार सेहो सौंसे गौंआँ मिलि कऽ केलैन। दुनू अमावासिये दिन हएत। ओना, अदौसँ दिवाली एक दिना पाबैन होइत आएल अछि मुदा काली-पूजा धूम-धामसँ मनबैक विचार भेने, पाँचो दिन सभ अपन-अपन अँगनमे सेहो दीप जरबैक विचार कऽ लेलैन। आठमे दिन पावनिक दिन, तँए सात-दिनक पेसतरे घर-अँगनाक टाट-फरक सेरिऔनाइ, छाउर-गोबरक ढेरी हटौनाइ, दुआर-दरबज्जासँ लऽ कऽ अपन-अपन घर लगक बाटकेँ छिलनाइ-बनौनाइ इत्यादि, कनीए काज अछि! तैपर सँ आन-आन गामसँ अबैत सड़को सभकेँ तँ अपना सीमान धरि मरम्मत करैए पड़त किने। गुण अछि जे रौदी भेने खेत-पथारमे काज नइए। जँ रहैत तँ सबहक लटैक जाइत!

गाममे काली-पूजाक पैघ आयोजनक विचार अछि तँए काजोक भरमार अछिए। ओना, लोकक उत्साहे तेहेन अछि जे कोढ़िलो बोझसँ हल्लुक बुझि रहल अछि। मालो-जालक भार सभ स्त्रीगणेपर छोड़ि देलैन। सभ किछु होइतो आ रहितो मुँहक चुहचुहीमे सेब-तड़क छैन। कारण धानक खेतीमे गामक किसान बँटा गेल छैथ। ओना, खेतक बुनाबट सेहो तेहेन अछि जे बँटाएब सोभाविके। अधिक ऊँच, मध्यम ऊँच, नीच आ अधिक नीच रूपमे गामक खेत अछि। जइसँ पानि आ रौदक एक-रंग असर नै होइए। जेकर सद्य: प्रभाव उपजापर पड़िते अछि। गामक किसानो

बँटा गेल छैथ। जिनका मध्यम आ ऊँच खेत छैन हुनका-ले गरमा धानक खेती उपयोगी छैन। मुदा जिनकर खेत नीच आ अधिक नीच छैन, जइमे शुरूक बर्खासँ अगहन-पूस धरि पानि जमल रहैए, ओइ खेत-ले अगहनीए धानक खेती उपयोगी अछि। ओना, वैचारिक भेद सेहो अछि। अखनो गरमा धानकेँ अशुद्ध बुझल जाइए। जइसँ किछु गोरे विरोध स्वरूप कम उपजा खुशीसँ पबै छैथ।

आइ धरि बँसपुरामे ने कहियो कोनो होम-यज्ञ भेल आ ने कोनो तेहेन दसगरदा उत्सवे। जइसँ परोपट्टाक लोक बँसपुराबलाकेँ अधरमी सेहो बुझैए..। ओना, गाम मेहनती किसान-बोनिहारक छी। गाम भरिमे ने एक्कोटा कम्पनीक एजेंट अछि आ ने चोर-डकैत आ ने ठक-फुसियाह। मुदा तँए की बँसपुराबला धर्मक काज नै करै छैथ? बखूबी करै छैथ। साले-साले महावीरजी स्थानमे अष्टयामक संग रामनवमी मनैबते छैथ। समय नीक हौउ कि अधला मुदा उत्सवमे कोनो बाधा नै होइत, भलेँ नै पान तँ पानक डण्टियोसँ काज चलिते अछि। तेकर अतिरिक्तो बेकता-बेकती भनडारा, अगहनमे जनार, आसीनमे सलहेसक पूजा इत्यादि करिते छैथ।

रौदी सबहक मनकेँ हौंर रहल छैन मुदा तैयो मनमे नव उत्साह जगले छैन। भिनसरसँ लऽ कऽ खाइ-पीबै राति धरि सभ पूजेक कोनो-ने-कोनो काजो करैत, नै तँ पूजेक जुति-भाँतिक विचारमे लगल रहै छैथ। डिहवारो स्थानक चलती आबि गेल। स्थानक सौंसे आँगनकेँ चिक्कैन माटिसँ दुनू साँझ नीपलो जाइए आ गामक पुतोहु आ ढेरबा बेटी-जाति सभ, कमसँ कम पाँचटा उचिती-विनती सेहो सुनैबते छैन। कुमारि भोजन तँ पाबैन दिन हएत। मुदा अनेको तरहक सुगन्ध अगरबत्ती आ सरर-धुमनक माध्यमसँ पसैरते अछि। केना नै पसरत? पहिले-पहिल गाममे पाँच दिनक मेला लागत। रंग-बिरंगक दोकानमे रंग-बिरंगक वस्तुक बिकरी गाममे हएत। सभ अपन-अपन जिनगीक अनुरूप कीनबो करत...।

मेलाक प्रति लोकक मन एतेक उड़ि गेल अछि जे ने आन काज आ ने आन गप करैत नीक लगैत। घरक सोलहन्नी भार स्त्रीगणेपर पड़ि गेलैन। मुदा तरे-तर रोगक एकटा किड़ी फड़ि गेल। ओ किड़ी ई जे खिस्सकरक चलती आबि गेल। सुननिहारक कमीए नहि। बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ

धिया-पुता धरि। खिस्सकरो रंग-बिरंगक, कियो कालीकेँ समैयक गति बुझि बजैत तँ कियो महादेवक छातीपर पएर देब कहैत। जहिना अपन खेत छोड़ि किसान वसन्त-पंचमी दिन एक्के परतीकेँ बेरा-बेरी जोतैत तहिना कालियोक चर्च करैत।

अदौसँ दिवाली एकदिना पाबैन होइत आएल अछि। संगे एक-लाटेमे गोधन पूजा, भरदुतिया, दवातक पूजा सेहो होइत आएल अछि। तैपर सँ पाँच दिनक काली पूजाक मेला सेहो हएत। गाममे गहगट मचि जाएत। बिना ब्लिचिंग पौडर छिटने पेशावक गन्ध मेटाएत? दोहरी पूजा भेने जेहने सबहक मनमे खुशी होइत तेहने काजक तबाही सेहो। एक-लखाइत दस-बारह दिन खटब असान नहि। के बिमार पड़त, केकरा रद-दस्त हेतै तेकर कोन ठेकान। तहूमे धिया-पुता अकड़-धकड़ खेबे करत। रोकने थोड़े मानत। तैपर सँ भरि राति नाचो-तमाशा देखबे करत। सोचिनहार सभकेँ तरे-तर सोगो होइत। तेतबे नहि, आरो सोग सभ एकाएकी मनमे अबैत जाइत। एक तँ ओहिना दिल्ली-कलकत्ता दुआरे भाए-बहिनक पाबैन- भरदुतिया- रोगा गेल अछि, तैपर सँ गामक मेला। जँ पूजाक हकारो देल जाएत तँ के एहेन अभागल हएत जे लक्ष्मी पूजा छोड़ि गाम औत? भलेँ ऊक पुरुखे फेड़त मुदा तम्मा तरमे दूबि-पाइ सिरा आगू तँ जनीजातिये रखै छैथ। ओ पुरुख केना करता? एहेन पाबैन छोड़ब केते उचित हएत?

गामक मेला सबहक मनकेँ बिर्ड़ोक झोंक जकाँ उड़बैत। तँए नीक-अधलापर नजैर केकरो टिकबे ने करैत। तहिना कातिकक जरैया बोखार आ पेट-झर्ड़ीपर नजैर केकरो जेबे नै करैत। सभ उन्मत! सभ बेहाल! जहिना फगुआ दिन भाँग पीब गाममे नचैए तहिना सभ घरसँ गाम-धरिक लोक काजक पाछू नचैत। जहिना घरक ओलतीक पानि टघैर कऽ अँगनासँ निकलैत-निकलैत पानिक बेग बनि पोखैर पहुँच जाइत तहिना बेकती ससैर कऽ समाजमे मिलि रहल अछि।

गाममे काली-पूजा किए हएत? जे एते दिन नै भेल ओ ऐ सालसँ किए हएत? अनेरे खर्चाक उतड़ी गौंआँ गरदैनमे पहिरैले किएक तैयार भऽ गेल? तेकर कारण ई अछि जे बँसपुरासँ कोस भरि सटले सिसौनीमे

पच्चीसो बर्खसँ बेसीए दिनसँ दुर्गा-पूजा होइत अबैए। चरिकोसीक लोक दुर्गा-पूजा देखए सिसौनी जाइ छैथ। गामेक नहि, आनो-आनो गामक स्त्रीगण दुर्गा-स्थानमे साँझो दिअ अबै छैथ। कुमारि भोजन सेहो करबै छैथ। कबुलाक छागर सेहो चढ़बै छैथ।

बलि-प्रदानमे सिसौनीक जोड़ा जिलामे नै अछि। दुर्गा-पूजा होइसँ एक महिना पहिनेसँ बकरी पोसनिहारक चलती आबि जाइ छइ। तहूमे एकरंगापर तँ डाक-डकौबैल भऽ जाइए। तेतबे नहि, पाठ केनिहार सभ सेहो अभ्यास करए लगैत। गाममे दुर्गा-पूजाक समय परीक्षाक समय बनि जाइत। जे बेसीठाम सम्पूट पाठ केलैन ओ डिस्टिंग्सनक संग फस्ट डिवीजन घोषित होइ छैथ। आमदनियोँ नीक आ डिपलोमो नमहर! ओना, केतबो कियो अभ्यास करैथ मुदा छन्ठे पंडीजी फस्ट करता, ई सबहक मन बीस सालक अनुभवसँ मानैत आएल छैन। हद छैथ ओहो। एक तँ ओहिना तेज बोली छैन तैपर सँ तेते स्पीडमे धड़ै छैथ जे चौपाइक पहिल शब्द आ अन्तिमो शब्द सुनि पाएब कि नहि! ओना, किछु हौउ मुदा किनुआँ सर्टिफिकेट नै रखने छैथ। मेहनत कऽ कऽ अनने छैथ।

ऐबेर सिसौनीक दुर्गा-स्थानमे एकटा घटना भेल। घटना ई भेल जे बँसपुराक एकटा अठारह-बीस बर्खक लड़की, जेकर पैछले साल बिआह भेल छेलै आ तीनियेँ मास सासुर बसल छल, केँ पूजा कमिटीक तीन गोरे फूसला कऽ भण्डार घर लऽ गेल। मेला-गनगनाइत। नाच-तमाशाक लोड-स्पीकर चरिकोसीक नीन उड़ौने। तीनू गोरे ओइ लड़कीक संग दुरबेवहार केलक। बेवश भऽ ओ लड़की सभ किछु बरदास केलक। चारि बजे भोरमे ओकरा सभ छोड़ि देलक। मेला भरि ओ किछु ने बाजल। मुँह-कान झाँपि मेलासँ निकैल सोझे गामक रस्ता धेलक। गामक सीमापर पहुँचते छाती चहैक गेलइ। छाती चहैकते हबो-ढकार भऽ कानए लगल...।

भिनसुरका कानब सुनि एक्के-दुइए गामक लोक घर-आँगनसँ निकैल रस्तापर आबि-आबि देखए लगल। टोल प्रवेश करिते एका-एकी लोक पुछए लगलै। अपन बीतल घटना सुनबए चाहैत मुदा बजले ने होइ...।

बेटीकेँ कनैत देख, बिनु किछु पुछने माए छाती पीट-पीट कनैत दुनू

हाथे पँजिया कऽ पुछलक- “की भेलौ, हम माए छियौ, हमरा नै कहमे तँ केकरा कहबीही।”

जेना-जेना माए बेटीक मुँहक बात सुनैत तेना-तेना देहमे आगि सुनगए लगलै। सुनैत-सुनैत बमैछ कऽ पतिकेँ कहलक- “जहिना हमर बेटीक इज्जत सिसौनीबला लूटलक तहिना सिसौनीक दुर्गास्थानमे मनुक्खक बलि पड़त।”

कहि घरमे रखल झोलाएल फौरसा निकालि, साड़ी समेट कऽ बान्हि सिसौनीबला सभकेँ गरियबैत विदा भेल। पत्नीक काली रूप देखि पति सेहो तौनीक मुरेठा बान्हि हरोथिया लाठी नेने गारि पढ़ैत बढ़ल। बताहि जकाँ माए चिकैर-चिकैर गरियेबो करैत आ देवी-दुर्गा लगा-लगा सरापबो करैत। जेते डेग आगू-मुहेँ बढ़ै तेते तामसो ऊपरे-मुहेँ चढ़ल जाइ। एमहर भुमहुरक आगि जकाँ तरे-तर गौंआँक करेजमे आगि लहैर गेल। सभसँ पहिने सातो दियादी परिवारक पुरुख, स्त्रीगण सहित धियो-पुतो, जेकरा जएह सोझमे भेटलै, से सएह लऽ कऽ सिसौनीक रस्ता धेलक। दियाद-वादकेँ आगू बढ़ैत देखि टोलोक आ जातियोक सभ विदा भेल। गाम दलमलित हुअ लगल। जेकरा जएह मनमे उठै से सएह जोर-जोरसँ बजैत सिसौनी दिस विदा भेल।

बुधियार लोक सबहक मन दड़कए लगल जे दुनू गामक बीच खून-खरापी हेबे करत। एकरा कियो नै रोकि सकैए। मुदा तैयो आगिमे जरैसँ रोकैक परियासमे किछु लोक आगू बढ़ि रस्ता रोकलक। कियो बात मानैले तैयारे नहि। दुनू परानी कुसुमलालकेँ माने लड़कीक माए-बापकेँ चारि-चारि गोरे पकैड़ कऽ रोकलक। कुसुमलाल तँ ठमैक गेल मुदा पवित्री मानैले तैयारे नहि। चरि-चरि हाथ कुदि चारू गोरेक हाथ छोड़ा-छोड़ा आगू बढ़ि बजैत- “सभ दिनसँ पुरुख स्त्रीगणपर अतियाचार करैत आएल अछि आ अखनो करैए। ऐ अतियाचारकेँ के रोकत? पुरुख-पुरुख सभ एक छी। जहिना गाएसँ गाए नै पाल खाइत तहिना पुरुख बुते पपियाह पुरुखकेँ सिखौल हेतइ! आइ सिखा देबइ!”

जहिना भादवक वादलमे बिजलोको छिटकैत आ चारू भर आवाजो होइत, तहिना हँसेरीक बीचसँ रंग-बिरंगक बात अकासमे उड़ए

लगल- “सिसौनीमे आगि लगा लंका जकाँ जरा देब!”

“इज्जत-आबरू लूटि, गाममे आगि लगा देब!”

“चौराहापर अपराधीकेँ आनि मुँहपर थूक फेक देहमे आगि लगा देब!”

“सिसौनीक बहु-बेटीकेँ पकैड़ लऽ आएब!”

क्रोधक चिनगारी उड़ि-उड़ि फुलझड़ी जकाँ अकासमे चमकए लगल। मुदा ई सभ विचार बेकता-बेकती होइत सामूहिक नहि। ने कियो केकरो बात सुनैले तैयार आ ने अपन मुँह रोकैले। मुदा तैयो बुधियार सभ रस्ता छोड़लैन नहि। घरमे लगल आगि मिझबैमे हाथ-पएर झड़ैकते छइ।

गाममे सभसँ बेसी उमेरक मनधन बाबा। जहिना नब्बे माघक जाड़ कटने छैथ, तहिना अनेको झाँट, पाथर, शीतलहरी, बिहाड़ि आ भुमकम सेहो देखि-भोगि चुकल छैथ। गामक लोककेँ एकमुहरी देखि बाँसक फराठी नेने टुघरल-टुघरल मनधनो बाबा पहुँचला। पाछुएसँ देखलखिन तँ मन मानि गेलैन जे सिसौनी आ बँसपुराक बीच मारि हेबे करत। ब्रह्माक बापो नै बँचा सकै छैथ। केमहर के मरत, केतेक हाँड़-पाँजर टुटत, तेकर कोनो ठेकान नै रहत..!

विचारैत-विचारैत दुनू आँखिसँ नोरक टघार चलए लगलैन। छाती छहों-छीत भऽ गेलैन। बुकौर लागि गेलैन। देहक हूबा टुटि गेलैन। बोम फाड़ि कानए लगला। गंगोत्रीक गंगा जकाँ दुनू आँखिसँ अनघोल करैत अश्रु अर्ड़ाहट मारैत मुँहक बोल आ थर-थर कँपैत छातीसँ बेकाबू मनधन बाबा भऽ गेला। जहिना कोसीक धारक बीच मोइनमे पाछुक पानिक धारा आबि घुमए लगैत तहिना मनधनक विचार घुमए लगलैन। हूबा करि कऽ उठि आगू-मुहेँ ससरए लगला। आगू पहुँच रस्तापर फराठीसँ चेन्ह दैत पड़ि रहला। मन थिरे ने होइन। कखनो आँखिक सोझमे दू गामकेँ नष्ट होइत देखैथ तँ कखनो पुश्त-पुश्तानिक दुश्मनी सेहो होइत देखैथ! मोन पड़लैन जुड़शीतल पावनिक घटना।

एकटा नढ़ियाक खातीर बेला आ मैनही गामक शिकार खेलनिहारक बीच मारि भेल। धमगज्जर मारि। परिस्थितियो अनुकूले

पड़लै। पाबैन मनबए सभ लाठी, सोहत, तीर-धनुष लऽ लऽ शिकार खेलए गेले रहए। ने लोकक कमी आ ने मारि करैक वस्तुक। मुद्दो तेहने भारी, एकटा मुइल नढ़िया। मुदा प्रतिष्ठाक प्रश्न तँ गामक रहबे करइ। अही प्रतिष्ठा लऽ कऽ केतेको लोकक कपार फूटल, केतेकोकेँ हाथ-पएर टुटल आ दुनू दिस एक-एकटा खूनो भेल। कियो केकरो देखैबला नै रहल। जे जेतइ से तेतइ कुहरैत रहए। केकरा के उठा कऽ लऽ जाइत आ इलाज करबैत। हो-ने-हो तहिना कहीं आइयो ने हुअए!

फेर, मनधन बाबाक मनमे उठलैन जे सभकेँ मनाही करी मुदा सुनत के? विचित्र स्थितमे मन ओनाए लगलैन। आँखि उठबैथ तँ देखथिन जे जे स्त्रीगण सभदिन सोझमे मुड़ी नै उठबै छल, आइ ओहो सभ बताहि जकाँ साड़ीक भरकौंच बन्हने लाठी फरका रहली अछि! सबहक मन मारिये-पर टँगल छै! केना उतरत?

मुदा तरे-तर खुशियो होइत रहैन जे नीक वस्तुक कीमतो बेसी होइए। गुन-धुनमे फँसल मनधन बाबाक मन अपन दायित्वपर पड़लैन। मुदा ऐ हँसेरीक बोनमे दायित्वक मोजर के देत? मुदा तैयो एक भाग फराठीकेँ पकैड़ दोसर भाग उठा इशारासँ सभकेँ शान्त होइले कहलखिन। मुदा सभ अपने ताले, बेताल! गामक जेते कुकुर जेतए रहए ओ बान्हक निच्चाँ खेते-खेत भूकैत आगू पहुँच गेल। छह-मसुआ बच्चा सभ चारि बेर भुकै आ कनी काल सुसता लिअ...।

मनधन बाबाक मनमे उठलैन जे बँसपुराक लड़कीक संग जे दुरबेवहार सिसौनीबला लुच्चा सभ केलक ओ गामक इज्जतक संग जुड़ल सबाल अछि। इज्जत-ले जान देब पुरुखक काज छी। एकरा अधला के कहत? सभकेँ अप्पन-अप्पन इज्जत-आबरू बनबैले, बना कऽ निमाहैले, कटए-मरए पड़तै। से जँ नै रहत तँ कखन केकर इज्जत के लूटि लेत तेकर कोन ठेकान अछि। भदबरिया बेंग जकाँ साले-साल तेते लुच्चा-लम्पटक जन्म भऽ रहल अछि जे गामे-गाम सोहरल जाइए! मुदा गामक भीतर तँ एहेन-एहेन किरदानी सदिकाल होइते रहैए। तहन कहाँ कियो किछु बजैए? तैकाल साला सभ कहत जे धुर्र छौड़ा-छौड़ीक खेल छी...।

दुनू बात मनमे उठिते मनधन बाबाकेँ मुहसँ हँसी फुटए लगलैन।

मुदा गामक लोकक रूखि हँसीकेँ दाबि देलकैन। सोचए लगला जे एक्के रंगक काज-ले एकठाम लोक कटए-मरए चाहैए आ दोसर ठाम धिया-पुताक खेल बना उड़बैए! अजीब अछि लोकोक बुधि-विचार! जहिना सदिकाल एक पुरुख दोसर महिलापर नजैर उठबैत रहैए मुदा अपन पत्नीकेँ दोसरक संग बजैत देखि आगि-बबुला भऽ किछु-सँ-किछु करैले तैयार भऽ जाइए तहिना ने अखनो भऽ रहल अछि। जइ घटनाकेँ सामूहिक रूपेँ इज्जत बुझल जाइए ओइ इज्जतक रक्षो तँ समूहेकेँ करए पड़तै। जँ खेल बूझत तँ खेल जकाँ बुझह नै जँ इज्जत बूझत तँ इज्जत जकाँ सुरक्षित राखह। नै जँ गुल-गुल बुझि दुनू करत तँ इज्जत-आबरूक बाते करब छोड़ह...।

मन सक्कत हुअ लगलैन। रस्तापर फराठीक नोकसँ डाँरि दैत कहलखिन- "ऐ डाँरिसँ जँ कियो एक्को डेग पएर बढ़ेबऽ तँ एतै पराण गमा देब। नै तँ अखन सभ शान्त भऽ जाह। नहाइयो-खाइ बेर भेल जाइए। भानसो-भात सबहक बन्ने छह। तँए अखन जाइ जाह। खा-पी कऽ चारि बजे बरहम स्थानक आगूमे बैस आगूक रस्ता बना लिहऽ।"

मनधन बाबाक विचार सभ मानि घरमुहाँ भेल। तत्खनात झंझट ठमैक गेल। मुदा मनक धधरा मिझाएल नहि। जहिना चेराक धधकैत आगिमे पानि ढारलासँ धधरा पझा जाइए मुदा ताउ रहबे करै छै, तहिना लोकोक मनक आगिमे भेल। छोट-छोट टुकड़ी बनि सभ विदा भेल। मुदा रस्तामे सभ क्रोध बोकैरते रहए। सभकेँ डोरियाइत घर दिस जाइत देखि मनधन बाबाक मन थीर भेलैन। घर दिस घुमिते मनमे उठलैन जे जखन गामक लोकमे एते आगि लगल अछि तखन दुनू परानी कुसुमलालकेँ केते लगल हेतइ! से नइ तँ ओकरा ऐठाम जा बोल-भरोस दऽ अबिऐ।

अपन अँगनाक रस्ता छोड़ि मनधन बाबा कुसुमलालक ऐठाम पहुँचला। दुनू परानी कुसुमलाल दुखक अथाह समुद्रमे उगि-डुमि रहल अछि। दुनू निराश। आशाक केतौ दरस नहि। दुनूक चेहराक रंग मलीन भेल। मनमे बेर-बेर उठैत जे बिनु इज्जतक जिनगी जीब नै जीब दुनू बरबैर!

दुनू बेकतीकेँ देखि मनधन बाबा चुपचाप मेह जकाँ डेढ़ियापर ठाढ़।

ने कुसुमलाल किछु बजैत आ ने बाबा। मनमे होनि जे कुसुमलाल हमरे सोलहन्नी दोखी बुझैत हएत। जहिना प्रेमक अन्तिम सीढ़ी बिआह छी, तहिना तँ क्रोधक खूनो छी। हो-ने-हो कोनो उझट बात कहि दिअए...।

फेर मनमे एलैन जे आएले तँ छी बोले-भरोस दइले। जीबठ बान्हि कहलखिन-

"बौआ कुसुम! हमरा आगू तूँ बच्चा छह। तोरासँ बहुत बेसी ऐ दुनियाँक चक्कर-भक्कर देखने छी। मनकेँ थीर करह। जे भऽ गेल ओ तँ नै घुमत। मुदा तइले की करी, केते करी, ई सभ बुझए पड़तह। एहेन तँ नै ने जे सभ कियो ओही लगल पराण गमा देब। तूँ दुनू गोरे तँ बापे-माए छहुन। दुखी भेनाइ उचिते छह। मुदा आइ की देखलहक? देखलहक किने जे समुच्चा गामक लोककेँ असीम दुख भेल छइ। ई विचार मनसँ हटाबह जे हम्मर इज्जत चलि गेल। गरीब लोकक सभसँ पैघ दुश्मन ओकर गरीबी छिऐ। गरीबी केवल अन्ने-पानि धरि नै होइए, जिनगीक सभ पहलु-ले होइए। गरीबीक बान्ह ओइ रूपेँ बन्हने अछि जइमे गारि-फज्झैतसँ लऽ कऽ धन-सम्पैत, माए-बहिनक इज्जत लुटै धरि अछि। तहन जँ कियो हँसी-खुशीसँ जीविये लइए वएह एक लाख।

बौआ, गरीबीक ताला लोहोक तालासँ नमहर आ सक्कत अछि। लोहाक तालामे एक्केटा मुँह आ दाँत होइ छै जइमे कुन्जी घुमौलासँ भक-दे खुजि जाइए। मुदा गरीबीक जे ताला अछि ओइमे अनेको मुँह आ अनेको दाँत अछि। एकटा खोलबह दोसर लगि जेतह। सोझे लगबे टा नै करतह, पहिलुकासँ केते गुना कस-कसा कऽ लगि जेतह। तँए, जहिना कोनो आमक गाछ साले-साल रौद, बर्खा, पानि-पाथर, बिहाड़ि जाड़ सहि नमहर भऽ फड़ैए आ ओ फड़ मनुक्खसँ लऽ कऽ अनेको जीव-जन्तु धरि बिलहैए तहिना मनुक्खोक जिनगी छी। जखने गरीब घरमे जन्म लेलह तखने बुझि जाहक जे आँखि देखैले नै कनैले अछि, गारि सुनैले कान अछि आ मारि खाइले देह अछि। गरीबक आँखिमे जेते इजोत बढ़ैए तेते नोरक समुद्र दिस जाइए आ जेते समुद्रक लग पहुँचैए तेते नोरक टघार अनवरतताक रूपमे बदलैए जइसँ अनवरत टघरैत रहैए! तोहर दुख समाजक दुख बनि गेल अछि। समाज ओहन कारखाना छी जइमे देवतासँ

लऽ कऽ छुतहर धरि बनैए। तँए, ने केकरो कहने केकरो इज्जत अबैए आ ने जाइए। लोककेँ अपने केने होइ छै आ गमौने जाइ छै...।"

मनधन बाबाक बात सुनैत-सुनैत पवित्री बोम फारि कानए लगली हुचैक-हुचैक बजली- "बाबा, ई तँ गामक मेह छथिन तँए हिनकर बात मानि लेलिऐन। नै तँ आइ सिसौनीमे आगि लगौने बिना नै छोड़ितिऐ। जखनसँ बेटी आएल तखनसँ एक्को बेर मुँह उठा नै तकैए। कनैत-कनैत दुनू आँखि डोका जकाँ भऽ गेल छइ। सदिखन एक्केटा रट लगेने अछि जे जीवियेे कऽ की हएत। जखन इज्जत चलिए गेल तखन कोन मुँह समाजकेँ देखाएब।"

पवित्रीक बात सुनि मनधन बाबाक हृदय छँहोछीत भऽ गेलैन। आँखिमे नोर ढबढबा गेलैन। दुनू हाथसँ आँखि पोछि बजला- "कनियाँ, जेकरा अहाँ इज्जत जाएब बुझै छिऐ ओ जाएब नै छी, जोर-जबरदस्ती छिऐ। जोर-जबरदस्ती मुँहक कहलासँ नै मेटाइ छइ। ओकरा शक्तिसँ रोकए पड़ै छइ। गरीबक बीच ओहन शक्ति अखन नै भेल अछि, जखन हएत स्वत: रूकि जाएत। अखन जोर-जबरदस्ती केनिहार बलगर अछि तँए सूझि-बूझिसँ चलए पड़त। इलाकामे कोन गाम एहेन अछि जइ गाममे एहेन-एहेन किरदानी नै होइ छइ। सभसँ पहिने गरीबकेँ अपना पैरपर ठाढ़ हुअ पड़तै। जखन ओ ठाढ़ भऽ संगठित हएत तखन शोषक संगे, जबरदस्ती केनिहारक संगे संघर्ष होएत। संघर्षोसँ समाज बदलैए समाज बदलने सभ किछु बदैल जाइए तँए कानू-खीजू नहि। समाजक संग पएर-मे-पएर मिला कऽ चलू।"

कहि विदा भऽ गेला। घर दिसक बाट तँ मनधन बाबा धऽ लेलैन मुदा डेग उठबे ने करैन। तैयो बलजोरी बढ़ला। फराठी हाथे कहुना-कहुना कऽ घरपर आबि गेला मुदा देहमे आगि लगले रहलैन। जइसँ विचार ओझरा गेलैन। धरती-पहाड़क दूरी देखि सोचैथ जे कोनो आँगुर कटने अपने घा हएत। भलेँ अखन धरि ई घटना छौड़ा-छौड़ीक खेल बुझल जाइ छल मुदा आइ सही रस्तापर आबए चाहैए। तँए घटनाकेँ रोकब उचित नै हएत।

फेर मनमे उठलैन जे दू गामक बीचक घटना छी। एक गामक रहैत

तँ कनी हल्लुको रहैत मुदा दू गामक बीच एहेन घटनाकेँ केते नमहर मानल जाए? मुदा छोड़नाइयो तँ उचित नहि। अदौसँ पहाड़ी धार जकाँ निच्चाँ-मुहेँ बहैत आएल अछि, जेकरा रोकनाइयो जरूरी अछि। जँ से नइ हएत तँ वैश्वीकरणक बिर्ड़ोमे उड़ि कऽ अकास ठेक जाएत। मुदा जइ रूपेँ घटनाक जवाब बढ़ए चाहैए ओ तँ आरो विनाशक अछि। जहिना ऐ गामक लोक सामाजिक प्रतिष्ठा बना कटै-मरैले तैयार अछि तहिना जँ कहीं सिसौनीबला सभ गामक प्रतिष्ठा बुझि ठाढ़ भऽ जाएत, तहन की हएत? ठाढ़ो होइक केते कारण भऽ सकैए। ओना, सार्वजनिक स्थानक घटना होइतो गाम आबि लड़की बाजल। जेकरा गौंआँ मानि रहल अछि। मुदा सही घटना रहितो सिसौनीबला मानियेँ लेत सेहो जरूरी नै अछि। एक गाम दोसर गामपर बलजोरी केते काल कऽ सकैए?

मनधन बाबाकेँ कोनो बाटे नै सुझैन। दू गामक बीच तँ विचारेसँ रोकल जा सकैए। मुदा जँ एहेन घटना रोकल नै जाएत तँ सार्वजनिक स्थानक महत्ते केते दिन टिकत?

भुँइयेँमे दलानक ओसारपर कर बदैलते मनमे एलैन जे एहेन घटना सामाजिक स्तरपर रोकब नीक हएत। मन असथिर भेलैन।

बेरुका बैसारमे जाइ आकि नहि? मुदा बाजल तँ हमहीं छी। फेर मनमे एलैन, चारि बजे सौंसे गौंआँकेँ बैस कऽ विचार करैले कहलिऐ आकि ई कहलिऐ जे तोरा सभकेँ विचार सुना देबह। दस मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। पाकल आम भेलौं, कखन छी कखन नै छी। ईहो कोनो जरूरी नै अछि जे हम्मर विचार सभकेँ सोहेबे करइ। जँ नै सोहेतै तहन तँ औरो मनमे दुख हएत। तहूमे मूलत: ई घटना महिलाक छी। जे पुरुख हजारो बर्खसँ एहेन अपराध करैत आएल अछि ओ सुहरदे-मुहेँ मानि लेत? आन गामक घटना कहीं गामे दिस ने चलि आबए। अखनो धरि समाजमे एहेन किरदानीकेँ लोक हँसीए-चौल बुझैए।

फेर मनमे उठलैन, अपनो तँ आब बलजोरीए जीब रहल छी, नै तँ अपन बतारी कएकटा गाममे अछि। तँए कि समाजसँ हटि जाइ? जँ हटब तँ मुइला पछाइत डाहैले के औत? ओना, से देखबो करैले तँ नै आएब। अपनो परिवारमे देखै छी जे सिनेमा कलाकार आ खेलाड़ी सबहक कुल-

खुटक नाओं जनैए आ अपना कुल-खुटक जनिते ने अछि। एहेन तँ गँरिबहू गाम अछि! केकरा कहबै, स्त्रीगणो सभ तेहेन-तेहेन आबि गेल अछि जे पुरुख सभकेँ गारि पढ़ि-पढ़ि कहैए जेहने छुतहर कुल-खुट रहतह तेहने ने चालि रहतह! आब कहू जे कुल-खुटक केन दोख छइ। नान्हि-नान्हिटा छौड़ा शिखर-पराग खाए लगल अछि, ऐमे केकर दोख? जीबैतमे एहेन-एहेन लीला देखै छी आ परोछ भेलापर हीरा सजौल मन्दिर बना देत? तैबीच पोती आबि कऽ टोकलकैन- “खाइले चलू ने बाबा? नहेबै नहि?”

केचुआएल साँप जकाँ बाबा कहलखिन- “चलै-फीड़ैक होश नै अछि अहीठाम नेने आबह। पहिने एक लोटा पानि नेने आबह। कनी मुँह-हाथ धोइ लेब।”

जहिना गदगरल मन रहने खाइक इच्छा नै होइत तहिना मनधनो बाबाकेँ बुझि पड़ैन। मुदा तैयो जी-जाँति कऽ खाए लगला। लाभर-जिभर चारि कौर खा लोटो भरि पानि पीब पोतीकेँ कहलखिन- “अन्न नै धँसैए। लऽ जाह।”

हाथ मुँह धोइ मनधन बाबा चौकीपर ओंधरा गेला। मुदा जहिना ज्वर-एलासँ कछमछी अबैए तहिना चौकीपर एक करसँ दोसर कर घुमैथ। बेर टगल देखि मनधन बाबा उठि कऽ फराठी हाथे बरहम स्थान दिस विदा भेला।

तीनियेँ बजेसँ एका-एकी लोक बरहम स्थान पहुँचए लगल। चारि बजेसँ पहिनहि गामक लोक एकत्रित भऽ गेल। मुदा एकटा नव घटना सेहो भेल। ओ ई भेल जे गाममे आइ धरि कोनो पनचैती वा सार्वजनिक काजमे महिला भाग नै लइ छेली से आइ घरा-घरी सभ पहुँच गेली। ओना, आइ धरि हुनका सभकेँ कहलो नै जाइ छेलैन। मुदा जखन सबहक बीच माने पुरुख-महिलाक बीच समय निर्धारित भेल तखन हुनको सभकेँ हौसला जगलैन। हौसला जगिते टाट-फरकक परदा तोड़ि घरसँ निकैल तीत-मीठक सुआद लइले निकलली। अखन धरि जे बुधि-विचारक गाछ माटिक तर बीज रूपमे पड़ल छेलैन ओ एकाएक अँकुर गेलैन। नजैर नचलैन तँ देखली जे अदौसँ आइ धरि महिला पुरुखक चारागाह छोड़ि आर किछु नै रहली! जबकि बुधि-विवेक आ हाथ-पएर तँ हमरो सभकेँ अछि। केवल

नीन तोड़ि जगैक जरूरत अछि। चरैत-चरैत पुरुख महिलाक सम्पूर्ण जिनगीकेँ, पाण्डु रोगी जकाँ निरस बना देने अछि! बिआहसँ पूर्व शिक्षा-विहिन बच्चा जिनगी आ बिआहक पाँचे दिनक पछाइत समाजक कलंकित विधवाक जिनगी! जहिना सामूहिक हत्याराकेँ जहलमे यातना भेटैत तहिना महिलाक संग भेल अछि..! मुदा आइ बँसपुरामे नव सुरूजक उदय भेल।

बैसारमे पुरुख-नारी तँ पहुँचली मुदा एक-संग नै बैस फूट-फूट बैसली। एक भाग पुरुख आ दोसर भाग महिला। बिनु अनुशासक बैसार तँए दुनू बैसारमे सभ अपन-अपन पेटक बात बोकरए लगल जइसँ दुनू दिस अनधोल हुअ लगल। कियो केकरो बात सुनैले तैयार नहि। सभ अपने बजैमे बेहाल। मुदा पेटक बात सठिते सभ पोखैरक पानि जकाँ शान्त भऽ गेल।

कातमे बैसल मनधन बाबा समाजक रूखि चुपचाप अँकैत रहैथ। सभकेँ चानिपर पसेनाक टघार देखैथ। जइसँ बुझि पड़लैन जे भीतरक गरमी निकैल रहल छैन। समस्याकेँ दू ढंगसँ समाधान करब सोचि उठि कऽ ठाढ़ होइत मनधन बाबा बजला- “अनकर घेघ देखैसँ पहिने अपन देखू। जँ से नइ देखब तँ ओहन दशा हएत जेहेन हँसि कऽ बजलासँ गम्भीर विचारक होइत। सभसँ जरूरी अछि गामक बीच जे एहेन-एहेन कुचालि सभ चलि रहल अछि, ओकरा बन्न करए पड़त। जँ से नइ करब, तँ आइ ओहन लकड़ीमे आगि धऽ लेलक जे एक गामक कोन बात जे साइयो गामकेँ जरौत। औझुका सूमा जे देखि रहल छी ओ पुरुखसँ कम महिलामे नै अछि। तँए दू बैसारकेँ एक बनाउ।”

एक बैसार सुनि दुनू दिस गल्ल-गुल्ल शुरू भेल। दू तरहक विचार दुनू दिस टकराए लगल। टकराहट देखि केते पुरुख उठि कऽ विदा हुअ लगला। मुदा बाबाक बात महिला सभ मानि अपन बैसार उसारि पुरुखेक बैसारमे बैस चिकैर-चिकैर बाजए लगली- “बाबा, अहाँक पीठपर हम सभ तैयार छी, उठि कऽ निर्णए दियौ।”

महिलाक आवाज सुनि बाबाकेँ भेलैन जे ई आवाज शरीरक नै शरीरी क छी। हृदयसँ सभ कल्याण चाहि रहल छैथ। एकरा रोकब तँ

असम्भव अछि मुदा मोड़ल जा सकैए...।

एक तँ बुढ़ाड़ी दोसर मनमे आगि लगल, मनधन बाबा थर-थर कँपैत फराठी बलेँ उठि कऽ ठाढ़ होइत बजला- “बाउ, हमरा आगू सभ बच्चे छह। जहन बच्चा बौआ आ बुच्ची बनैत तहिए-सँ दूजा-भाव शुरू भऽ जाइए। मुदा हम सभकेँ बच्चे बुझै छिअ तँए कहै छिअ जे अपन कल्याणक बाट सभ पकैड़ चलह। अखन जइ घटना, जइ समस्या दुआरे सभ एकठाम भेल छी, ओ मात्र दू बेकतीक बीचक नै दू समाजक बीचक छी। दू बेकतीक बीचक जँ रहैत तँ ओकरा छोट मानल जाइत मुदा दू गामक समस्याकेँ छोट मानब गलत आँकब हएत। ई ओहन अछि जे एक-सँ-अनेक रूपमे पसैर जाएत। जहिना तूँ सभ कहै छहक जे सिसौनीमे आगि लगा देब, मारब, बेइज्जत करब तहिना तँ ओहो सभ करतह। तहूँ सभ मारबहक ओहो सभ मारतह। तहूँ कपार फोड़बहक ओहो सभ फोड़तह। अखन ने बुझि पड़ै छह जे सोलहन्नी हमहीं सभ मारबै आ ओ सभ मारि खाएत। मुदा से केतौ देखलहक हेन। दुनू दिसक लोक मारबो करैए आ मारियो खाइए।”

मनधन बाबाक विचार सुनि सभ मुड़ी डोला-डोला सोचए लगल। एक दोसर दिस तकबो करैत आ नजैर निच्चोँ कऽ लइत। सबहक मनमे मारिक गम्भीरता नाचए लगल। मुदा तैयो मनक गरमी पूर्ण शान्त नै भेलइ। विचार गजपटाए लगलै। कखनो शान्तीक रस्ता मनमे जोर पकड़ै तँ कखनो उनैट कऽ मारि-दंगाक रस्ता पकैड़ लइ। जे चढ़ैत-उतरैत विचार मुँहक रूखिसँ साफ बुझि पड़इ। लोकक रूखि देखि बाबा फेर ठाढ़ होइत बजला- “गामेमे देखै छहक जे कनी हूबगर अछि ओ मुँहदुबराक संग केहेन बेवहार करैए? भलेँ अप्पन जातिए, दियादे किएक ने होइ..!”

बीचमे कनी काल चुप भऽ मनधन बाबा आगू बजला-

“भीतरसँ अप्पन गाम फोंक छह। देखिते छहक जे सभ अपन-अपन नून-रोटीमे दिन-राति लगल रहैए। ने अपना पेटसँ छुट्टी होइ छै आ ने दोसराक आकि समाजक कोनो चिन्ता छइ। समाज की छिऐ से लोक बुझबे ने करैए। अपने पेटक खातिर बेइमानी-शैतानी, चोरी-डकैती सभ करैए। सभ मिलि समाजकेँ परिवार जकाँ ठाढ़ कऽ काज करी, से केकरो

मनमे छैहे नहि। ओना, सिसौनियो सएह अछि मुदा तैयो तँ अपना गामसँ कनी निस्सन अछिए। कम-सँ-कम तँ सभ मिलि दुर्गा-पूजा तँ कइए लइए जखने दस-पनरह दिन सभ एकठाम भऽ एक काजक पाछू लगैए, तखने ने अपनामे गप-सप्प भेने साल भरिक छोट-छोट झगड़ा मेटाइए, जइसँ सामुहिक बल बढ़ै छइ। तँए समाजकेँ आगू बढ़बैले दसगरदा काज जरूरी अछि।

जाधैर लोकक मनमे दसनामा काजक प्रति झुकाउ नै हेतै ताधैर समाज आगू-मुहेँ केना ससरत? ऐ नजैरसँ देखबहक तँ बुझि पड़तह जे अपना गामसँ थोड़े आगू सिसौनी बढ़ल अछि। सिसौनियोसँ आगू पछबारि गाम 'बरहरबा' अछि। देखिते छहक जे ओइ गाममे दुर्गो-पूजा होइए आ पढ़ै-लिखैले हाइयो स्कूल छइ। बरहरबोसँ अगुआएल दछिनबरिया गाम 'कटहरबा' अछि।

कटहरबामे हाइयो स्कूल छै, अस्पतालो छै आ सालमे एक-बेर सभ मिलि चारि दिनक मेला कालियो-पूजा लगा लइए। जइ गाममे जेते सार्वजनिक काज हएत ओ गाम ओते तेजीसँ आगू बढ़त। गाम अगुआइक माने संस्थे बनि जाएब आ पूजे हएब नै बल्कि आचार-विचार-बेवहार-चालि-ढालि सभ किछु बदलब होइत। जाधैर कोनो गाम पछुआएल रहैए ताधैर ओइ गाममे सदिखन राँड़ी-बेटखौकी, मारि-मरौबैल, हल्ला-फसाद होइते रहैए। जाधैर लोक झूठ-फूस बजैत रहत, छोट-छीन बात लऽ कऽ लड़ैत-झगड़ैत रहत, ताधैर ओकर समैयक कोनो मोल नै हएत। जखने मूल्यहीन जिनगी चलैत रहत तखने श्रमक कोनो महत नै रहत। जे श्रम सार छी, मनुक्खक पूजी छी ओ धूरा-गर्दा जकाँ उड़ैत रहत! भाग्य-तकदीर बनौनिहार चानी कटैत रहत। जइसँ लोकक कमाइ लूटाइत रहत आ आँखिकेँ सदिकाल नोर दबने रहतै! जेकर आँखि नोरसँ झाँपल रहत ओ दुनियाकेँ केना देखि सकत?"

मनधन बाबा बजिते रहैथ कि सुननिहारक बीच गल-गुल शुरू भेल। लोकक गल-गुलसँ मनधन बाबाकेँ दुख नै भेलैन, खुशीए भेलैन। मनमे उठलैन जे भरिसक लोकक परती बुधिमे जोत-कोर भऽ रहल छइ। नजैर खिरा-खिरा मरदो दिस आ जनीजातियो दिस देखए लगला। बैसले-बैसल

जोगिन्दर जोरसँ बाजल- "दुर्गा-पूजा तँ आब पौरुकाँ हएत मुदा कालीपूजा तँ लगिचाएल अछि। तँए हम सभ आइए संकल्प लऽ ली जे हमहूँ सभ काली-पूजा गाममे करब।"

जोगिन्दरक बातपर सभ थोपड़ी बजा समर्थन दऽ देलक। अही प्रतिक्रियाक फल छी गाममे काली-पूजा।

ओना, रौदियाह समय भेने गामक किसानो आ बोनिहारोक दशा दयनीय अछि मुदा सिसौनीक घटना तेना उत्साहित कऽ देलक जे सभ बिसैर गेल। उत्साहित भऽ बोनिहारो सभ एकावन-एकावन रुपैआ चन्दाक घोषणा कऽ देलक। बोनिहारक उत्साह किसानकेँ झकझोड़ि देलक।

प्रतिष्ठाक प्रश्न सामनेमे उठि गेलइ। तैपर सँ परदेसिया आरो रंग चढ़ा देलक। जेना एक दुखकेँ दबैले अनेको दबाइ आ पथ्य सामने आबि गेलइ। समाजक संग मिलि चलैक अछि, तँए बेकतीगत दुखकेँ दाबए पड़त। सार्वजनिक काजमे पाछुओ हटब उचित नहि। गामक बहु-बेटी आन गाम मेला देखए जाइत रहल, ओइ प्रतिष्ठाकेँ प्राप्त करब। सभसँ पैघ बात बदला लेबाक रस्ता बनि रहल अछि। हमरा गामक लोककेँ जँ आन गामक लोक बेइज्जत करत तँ ओहू गामक लोककेँ हमसभ करबै। जइसँ आन गामक बरबैरमे अपनो गाम औत। उत्साहित भऽ प्रेमलाल उठि कऽ ठाढ़ भऽ जोर-जोरसँ बाजए लगल-

"भाय लोकैन! अपना गामक भाए-बहिन आन गामक मेलामे जा बेइज्जत होइए। एकर की कारण छइ? कारण छै जे अपना गाममे कोनो तेहेन सार्वजनिक काजे ने होइए। जखने अपनो सभ तेहेन काज करब तँ अनेरे आन गाम बलाकेँ दहसैत हेतइ। वएह दहसैत गामकेँ उजागर करत, प्रतिष्ठित बनौत। गोसाँइ जी रामायणमे कहने छैथ, बिनु भय होइ न पीरीती।"

प्रेमलालक मुँह तँ बन्न भऽ गेल मुदा बजैले मन लुसफुसाइते रहलै। मुदा, आगूक बात मनमे एबे नै करै आ बजले बात दोहरौनाइ उचित नै बुझि, बैस रहल। प्रेमलालकेँ बैसते फेर गल-गुल हुअ लगल। गल-गुल एते बढ़ि गेलै जे जहिना सौजनियाँ भोजमे होइत तहिना भऽ गेल। गल-गुल देखि अनुप उठि कऽ हाथक इशारासँ शान्त करैत गरमा कऽ बाजल-

“देखू, गल-गुल केने किछु ने हएत। सिसौनीबला सभकेँ एते गरमी किए चढ़ल रहै छै से बुझै छिऐ? ओ सभ दस हजार रुपैआ खर्च कऽ कऽ दुर्गा-पूजा कए लइए! तँए ओकरा सबहक गरमी हेट करैक अछि। तँए हम सभ पचास हजार रुपैआ काली-पूजामे खर्च करब। जँ सबैया-डेढ़ा खर्च कऽ पूजा करब तँ ओ सभ मद्दियो ने देत। तँए समधानि कऽ हरदा बजबैक अछि।

अखने पूजा कमिटी बना लिअ। ओना, अखन बीस-बाइस दिन काली-पूजाक अछि। मुदा अखनेसँ गाम-सँ-आन गाम धरि माहौल बनबैक अछि। पूजा समितिमे सभ टोल आ सभ जातिक सदस्य बनाउ। जँ सभ टोल आ सभ जातिक सदस्य नै बनाएब तँ अनेरे अखनेसँ अनोन-बिसनोन शुरू भऽ जाएत। तेतबे नहि, सभ जातिक सदस्य बनौने काजो असान हएत। सभ अपन-अपन लूरि-बुधिसँ सहयोग करत।”

अनुपक विचारसँ सभ सहमति भेला। समिति बनए लगल। सभ मिला एक्केस गोरेक समिति बनल जइमे पाँच महिला। एक्कैसो गोरे उठि कऽ ठाढ़ भेला तँ एक दिव्य स्वरूप चमकल। सभ नौजवान। एक्कैसोक मनमे खुशी जे सामाजिक क्षेत्रमे आगू बढ़ि रहल छी। समितिक सदस्य एक भाग आ गौंआँ दोसर भागमे बैस विचार आगू बढ़ौलैन। समितिक संचालन-ले पदाधिकारीक जरूरत होइत। कमसँ कम अध्यक्ष, उपाध्यक्ष आ कोषाध्यक्षक जरूरत हेबे करैत। मुदा अध्यक्ष के बनत? गम्भीर प्रश्न। सभ सबहक मुँह देखए लगला।

केकरो अनुभव नहि। ओना, समितिक अधिकांश सदस्यकेँ अध्यक्ष बनैक इच्छा मुदा अनुभव नै रहने डरो होइत। सभकेँ चुप देखि रघुनाथ अपन पितियौत भाय देवनाथक नाओं अध्यक्ष-ले प्रस्ताव केलक।

देवनाथक परिवार गाम भरिमे जातियो आ पूजियोमे सभसँ बीस। देवनाथक नाओं सुनि अधिकांश सदस्य धकमकए लगल। विरोधमे दोसर किनको नाओं नै सुनि मंगल अपन नामक प्रस्ताव अपने केलैन।

दू गोरेक नाओं अबिते बैसारमे गुन-गुनी शुरू भेल। धनो आ जातियोमे मंगल देवनाथसँ पछुआएल। मुदा जेहने बजैमे फरकोर तेहने इमानदार आ बी.ए. पास सेहो। जे सभ बुझैत।

देवनाथ आ मंगल संगे-संग बी.ए. पास केने रहए। ओना, पढ़ैमे मंगल चन्सगर मुदा रिजल्ट देवनाथक नीक रहलै। तेकर कारण रहै जे देवनाथ धुड़फन्दा शुरूहेसँ रहए।

मंगलक नाओं सुनि देवनाथो आ रघुनाथो आँखिक इशारासँ गप-सप्प करए लगल। कनीए कालक पछाइत मंगलकेँ पलौसी दैत रघुनाथ बाजल- "भैया, हमरा लिये जेहने अहाँ तेहने भैया छैथ। अहूँ दुनू गोरे संगीए छी। आग्रह करब जे देवनाथ भैयाकेँ अध्यक्ष आ अहाँ उपाध्यक्ष बनि काज चलाबी।"

मंगलक मनमे केवल पूजे समिति चलाएब नहि, समाजकेँ आगू बढ़बैक विचार सेहो। बच्चेसँ देवनाथक चालि-ढालि मंगल देखैत आएल। मुदा समाज तँ पोखैरक पानि सदृश होइए। जइमे हवा-बिहाड़िक लहैर सेहो उठैए आ लगले असथिर भऽ शान्त सेहो भऽ जाइए। मंगलक मनमे देवनाथक प्रति एकटा आरो बात घुरियाइत रहैन। ओ ई जे एक दिन, करीब चारि साल पहिने एकटा गामेक लड़कीक संग छेड़खानी करैत देवनाथकेँ मंगल पकड़ने छला। हाटसँ अबैत मंगलकेँ देखि ओ लड़की फफैक-फफैक कानए लगल।

साइकिल ठाढ़ कऽ सभ बात सुनलैन। तामसे बेकाबू भऽ गेला। देवनाथकेँ बिनु किछु पुछनहि चारि-पाँच चाट मुँहमे लगा देलखिन। क्रोधो कमलैन। मुदा डरसँ देवनाथ थर-थर काँपए लगल। मंगल देवनाथकेँ कहलखिन- "बच्चा, अखन धरिक संगी छेलेँ तँए छोड़ि दइ छियौ। नै तँ समाजक बेटीक संग एहेन बेवहार करैबलाकेँ जिनगी भरिक पाठ पढ़ा दैतिऐ।"

दुनू हाथ जोड़ि देवनाथ, न्यायालयक अपराधी जकाँ मंगलक आगूमे ठाढ़ भऽ गेला। विचित्र स्थितमे मंगल उलैझ गेला। मनमे क्रोध आ दयाक बीच घिच्चम-घिच्चा हुअ लगलैन। कखनो दया दिस मन ससरैत रहैन तँ कखनो क्रोध दिस बढ़ि जाइत रहैन। मनकेँ असथिर करैत कहलखिन- "अखन धरिक संगी होइक नाते छोड़ि रहल छियौ। नै... तँ...। कान पकैड़ कऽ बाज जे एहेन गलती फेर केकरो संग नै करब! जाधैर कोनो लड़कीकेँ बिआह-दुरागमन नै होइत ताधैर माए-बापक सन्तान

बुझल जाइत मुदा सासुर जाइते गामवाली माने गामक बेटी बनि जाइए।”

यएह बात मंगलक मनमे घुरियाइत रहैन। रघुनाथक बात सुनि मंगल जवाब देलखिन- “बौआ रघू, दसगरदा काजक शुरूआत गाममे भऽ रहल अछि। मुदा समाज तँ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ छिड़ियाएल अछि। तँए जरूरत अछि जे एक-एक टुकड़ीकेँ ओरिया-ओरिया पकैड़ दोसरमे सटबैक अछि। से जाधैर नै हएत ताधैर कोनो सार्वजनिक काज सफल हएब सन्दिग्ध बनल रहत। खण्डित भऽ जाएत। देखिते छहक जे कोनो भोज होइ छै तँ दस कोस, पनरह कोससँ पंच आबि-आबि खाइए मुदा भोजैतक घर लगहक परिवार भूखले रहैए। एहेन अन्यायी समाजमे न्याय कहिया औत आ के आनत?

अखन जे सामाजिक ढाँचा बनि ठाढ़ अछि, ओ गँरि-मुराह अछि। जहिना कोनो बोझ गँरि-मुराह भेने कखन माथपर सँ खसि छिड़िया जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि, तहिना समाजोक अछि। तँए बोझे जकाँ समतुल्यपर बान्ह पड़ैक चाही। जइसँ कहियो छिड़ियेबाक शंका नै रहत। दसनामा काजमे समाजक बच्चा-बच्चाकेँ बरबैरक हिस्सा भेटक चाही। मुइल-टुटल कियो किएक ने हुअए मुदा ओकरा मनसँ ई विचार निकैल जेबा चाही जे ई काज हमर नै फल्लाँक छिऐ। हम सोझे करैबला छी करबैबला नहि। केकरो बाप-पुरखा हर जोतैत आएल अछि, अखनो जोतैए आ आगुओ जोतैत रहत। जँ से नइ जोतत तँ खेती केना हएत? मुदा ओहो समाजक ओहने अंग छी जहिना पढ़ि-लिखि कियो करैए।

अखन गामक सभ बैसल छी तँए पूजा-प्रकरणक सभ निर्णए सबहक बीच भऽ जाए। सिसौनीमे अखनो देखै छी जे दुर्गास्थानमे सबहक पहुँच नै अछि।”

मंगलक बात सुनि सभ स्तब्ध भऽ गेला। मनमे उठा-पटक हुअ लगलैन। ओना, बहुतोक बुधिमे सभ बात अँटबो ने कएल मुदा जेतबे अँटल ओ आगिक लुत्ती जकाँ चमकए लगल। बेवहारिक जिनगी आ वास्तविक जिनगीक बीचक दूरी बहुत बेसी भऽ गेल अछि। बेवहारिक जिनगीकेँ वास्तविक जिनगी दिस झुकौने चलए पड़त। जँ से नइ हएत तँ सदिखन चलैक रस्ता गजपट होइते रहत। परोछमे उचित बात बजनिहारक

कमी नहि मुदा सोझहा-सोझही बजनिहार कियो नहि! तेकरो केतेको कारण अछि...।

गुन-गुन, फूस-फूस होइत देखि मंगल बुझि गेला। मनमे उठलैन बुद्धदेवक ओ बात जइमे कहने छैथ जे वीणाक तारकेँ ओते ने कसि दिऐ जे टुटि जाए, आ ने ओते ढीले रहए दिऐ जे आवाजे ने निकलै...।

मंगल बजला- “अध्यक्ष पदसँ हम अपन नाओं आपस लइ छी। देवनाथे अध्यक्ष होथि। मुदा अखनसँ लऽ कऽ जखन तक पूजाक प्रकरण चलैत रहत ताधैर सभ काजक निर्णय, समितिक बीच हुअए।”

मंगलक बात सुनि देवनाथ सेहो ठाढ़ होइत बजला-

“जिनगीमे पहिल-पहिल दिन समाजक काज करैक मौका भेट रहल अछि तँए मनमे असीम खुशी अछि। सभ तँ अनाड़ीए छी, जइसँ बिनु बुझलो केतेक गलती भऽ सकैए। मुदा ओइ सभकेँ भुल-चुक मानि सम्हारैक उपाय हेबा चाही। अखन सभ कियो छी तँए मुख्य-मुख्य काजक निर्णय अखने भऽ जाए। ओना, अखन दिनगर अछि मुदा सबहक नजैरमे रहब बढ़ियाँ रहत।”

देवनाथक विचार सुनि सबहक मुहसँ निकलल- “बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ।” कहि समर्थन देलक।

निर्णय भेल-

(1) गामेक कारीगर माने मूर्ति बनौनिहार मूर्ति बनबए। ओना, एक-पर-एक कारीगर दुनियाँमे अछि मुदा पूजाक मूर्तिमे कला नै देवी-देवताक स्वरूप देखल जाइए। दोसर जँ हम अपन बनौल मूर्तिकेँ अपने अधला कहब तँ गामक कलाकार आगू केना ससरत? तँए जे गामक कला अछि ओकरा सभ मिलि प्रोत्साहित करी।

(2) काली मण्डप गामेक घरहटिया बनबैथ। जिनका घर बनबैक लूरि छैन ओ मण्डप किए ने बना सकै छैथ। संगे ईहो हएत जे गामक अधिक-सँ-अधिक लोकक सहयोग सेहो होएत।

(3) मनोरंजन-ले गामोक कलाकारकेँ अवसर भेटैन। संगे बाहरोक ओहन-ओहन तमाशा आनल जाए जेहेन ऐ परोपट्टामे नै आएल

हुअए।

(4) पूजा-ले, परम्परासँ अबैत ओहनो पुजेगरीकेँ अवसर भेटैन जे पूजाक प्रेमी छैथ।

(5) गामक जेते गोरे काज करैथ ओइमे नीक केनिहारकेँ पुरस्कृत आ अधला केनिहारकेँ आगू मौका नै देल जाइन।

पाँचो निर्णय सर्वसम्मतिसँ भऽ गेल। बैसार उसैर गेल।

खा-पीब कऽ मंगल सुतैले बिछान बिछबैत रहैथ। रातिक एगारह बजैत रहइ। सतरंजी बिछा दुनू हाथे जाजीम झारलखिन। तैबीच जोगिन्दर मंगलसँ भेँट करए आएल। जाजीमक आवाज सुनि जोगिन्दर घबड़ा गेल। मनमे भेलै जे केम्हरौ थ्री-नट्टा ने तँ चलल! हियासि-हियासि चारूकात ताकए लगल। मुदा केकरो सुनि-गुनि नै पाबि मन असथिर भेलइ। असथिर होइते मंगलकेँ सोर पाड़लक।

कोठरीएसँ मंगल आवाज दैत बहरेला। बाहर अबिते जोगिन्दरकेँ देखि बजला- “आबह। आबह भाय। एती रातिकेँ किए एलह?”

दुनू गोरे ओसारक चौकीपर बैस गप-सप्प करए लगला। जोगिन्दर कहलकैन- “भाय, आइ तक तोरा एना भऽ कऽ नै चिन्हने छेलिअ। मुदा तोहर औझुका विचार सुनि छाती बारह हाथक भऽ गेल। भाँइमे कियो दादा हुअए!”

जोगिन्दरक बात सुनि मंगल बजला- “भाय, बहुत राति भऽ गेल अछि, भोरे उठैओक अछि। किए एलह से कहऽ।”

“अखन अबैक खास कारण अछि, तँए निचेन बुझि एलौं। तहूँ तँ देखिते छहक जे अखन धरि हम गाममे दहलाइते छी। ने रहैक बढ़ियाँ ठर अछि आ ने जीबैक कोनो आश। मुदा...।”

“मुदा की?”

“मुदा यएह जे करोड़पति रहितो कोनो मोजर गाममे नै अछि।”

करोड़पति सुनि मंगल चौंकैत बजला- “करोड़ केतेक होइ छै, से बुझै छहक?”

"हँ। सौ लाख।"

"एते रुपैआ अनलह केतएसँ?"

"ऐ बातकेँ छोड़ह। जहिए-सँ दिल्ली नोकरी करए गेलौं तहिए-सँ रुपैआक ढेरी लग पहुँच गेलौं। शुरूमे जे बोरामे कसल रुपैआ देखिऐ तँ हुअए जे छपुआ कागत छिऐ। मुदा कनी दिन रहलापर रुपैआ हथियबैक लूरि भऽ गेल। अखन, दिन भरिमे लाख रुपैआ हौंसतब कोनो भारी कहाँ बुझै छिऐ! मुदा ओइ काजसँ मन उचैट गेल। आब एक्केटा इच्छा अछि जे मनुक्ख बनि गाममे रही।"

"हमरा की कहए चाहै छह?"

"अखन तँ सभ पूजामे ओझराइल छी। पूजाक पछाइत मदैत कऽ दिहऽ। एक लाख रुपैआ अनने छी। अपन जे आदमी अछि जदी ओकरा जरूरी होइ तँ बिना सुइदेक सम्हारि देबइ। खाली मूरक-मूर घुमा देत। संगे तोरो कहै छिअ जे रुपैआ दुआरे पूजामे कोनो कमी नै होइ।"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगलक मनमे बिर्ड़ो उठि गेलैन। एक मन कहैन जे रुपैआ दुआरे काज पछुआ जाइए। से आब नै हएत। तँ फेर सोचैथ जे डकैत-तकैतक भाँजमे ने तँ पड़ल जाइ छी! जोगिन्दरकेँ अखन धरि एकटा साधारण आदमी बुझि परदेसिया बुझै छेलौं। परदेसमे की करै छेलै से तँ नै बुझै छेलौं। मुदा खतरनाक आदमी बुझि पड़ैए। एसमगलर छी आकि हवालाक धन्धा करैए। तत्-मत् करैत मंगल पुछलक-

"एते रुपैआ केना भेलह?"

मंगलक प्रश्न सुनि जोगिन्दर चौकन्ना भऽ चारू दिस तकलक। केकरो नै देखि घुन-घुना कऽ बाजल-

"भाय, जैठीम नोकरी करै छेलौं ओ बड़ भारी कारोबारी अछि। हजारो नोकर-चाकर छइ। देखौआ कारोबारक संग चोरनुकबा कारोबार सेहो करैए। आन-आन देशक रुपैआ भजबैए। कोन-कोन देशक लोक कोन-कोन रंगक रुपैआ भजबैए से कि सभकेँ चिन्हबो करै छेलिऐ। मुदा हमरापर सेठवाकेँ खूम बिसवास छइ। हरदम अपने लग रखैए। टहल-टिकोरासँ लऽ कऽ चाह-पान धरि आनि-आनि दइ छेलिऐ। निशिभाग

रातिमे एक आदमी गाड़ीपर अबै आ भरि दिन जेते बाहरी रुपैआ भेल रहै छै ओ सभ लऽ जाइ छइ। आपस किछु ने करै छइ। खाली पास-बुकपर रुपैआ चढ़ा दइ छइ। सेठबाकेँ जखन जेते रुपैआक जरूरत होइ, हमहीं बैंकसँ आनि-आनि दइ छेलिऐ।"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगलक भक्क जेना खूजि गेलैन। बिच्चेमे बजला- "दिल्ली सनक शहरमे सी.आइ.डी. आ पुलिस किछु ने कहै छइ?"

मुस्की दैत जोगिन्दर उत्तर देलक- "सभकेँ महिना बान्हल छइ।"

जोगिन्दरक बात सुनिते मंगलक मनकेँ, निराशाक कारी मेघ टोपर बान्हि जेना चारू-भरसँ घेर लेलकैन, तहिना हतोत्साह भऽ गेला। मनमे उठलैन, केकरापर करब सिंगार पिया मोरा आन्हर रे..! जइ देशक शासन कमजोर रहत ओइ देशक सुरक्षा भगवान छोड़ि के कऽ सकैए..!

मंगल भीतरे-भीतर डरा गेला। मुदा मनकेँ असथिर करैत पुछलखिन-

"तूँ ओही सेठक संग रहै छह की..?"

जोगिन्दर-

"दस बरख ओइ सेठबा ऐठीन रहि सभ तरी-घटी देखि लेलिऐ। ओकरा ऐठीनसँ हटैक मन भऽ गेल। मुदा नोकरी नै छोड़लौं। कहलिऐ, माए अस्सक अछि तँए किछु अगुरवारो रुपैआ दिअ जे इलाज कराएब। भरि दिन दारूए पीऐत रहैए। सारकेँ लगबो करै छै कि नहि। एते भारी कारोबार केना सम्हारि लइए। मनमे उठल जे जहिना ई सार दुनियाकेँ ठकि धन जमा केने अछि तहिना हमहूँ किए ने एकरे ठकी। दबाइक दोकानसँ एकटा कड़गर निशाँबला दबाइ कीनि आनि दारूक बोतलमे फेँट देलिऐ। आठ बजे साँझमे जखन दारू मंगलक तँ वएह बोतल दऽ देलिऐ आ कहलिऐ जे हमरा गाम दिसक गाड़ी चारि बजे भोरमे अछि तँए रातिए-मे चलि जाएब। कहलक, बड़बढ़ियाँ। दारू पीलक।

हम ससैर कऽ मलिकाइन लग जा कऽ कहलिऐ जे गाम जाएब। फेर ओइठीनसँ थानापर चलि गेलौं। सभकेँ कहि देलिऐ जे आइ गाम

जाएब। सभ चिन्हरबे रहए। घुमि कऽ एलौं तँ देखलिऐ जे सेठबा बेमत् अछि। खाइले गेलौं। खेलौं। खा कऽ आबि सिरमा तरसँ कुन्जी निकालि रुपैआबला कोठरी खोललौं। बाप रे! सौंसे कोठरी रुपैएसँ भरल। मझोलका बैगमे रुपैआ भरि कोठरी बन्न कऽ कुन्जी रखि देलिऐ। अपन जे नेपलिया रैक्सीनबला बैग रहए ओइमे रुपैओक बैग आ कपड़ो-लत्ता लेलौं। बारह बजे रातिमे जखन रोड खाली भेल तखन एकटा टेम्पूसँ ममियौत भाय लग चलि गेलौं। भैया बड़ होशगर छैथ। कहलैन जे जहन रुपैआ हाथ आबि गेल तहन चलि केना जाएत। वएह रुपैआ छी।"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगल बजला- "अपन की अभियन्तर छह?"

"मनमे अछि जे दस कट्ठा घराड़ी-जोकर जमीन भऽ जाए आ पाँच बीघा घनहर। दसो कट्ठा घराड़ीकेँ छहरदेवालीसँ घेर दिऐ। बीचमे डेढ़ कट्ठामे चौबगली घर-अँगना बना लेब। दू कट्ठा खुनि भरियो लेब आ दुनू कट्ठामे माछो पोसब। दू कट्ठामे फल-फलहरीक गाछ लगा लेब। तीमन-तरकारीले चौमासो भइये जाएत। काजो-उदेम आ खरिहाँनो-ले आगूमे खस्ते रखि लेब।"

जोगिन्दरक विचार सुनि मंगलक मनमे आश जगलैन। बजला- "देखिते छहक जे बथनाहामे अवधिया सभ अछि। ओकरा सभकेँ बहुत जमीन छइ। ओइमे सँ एकगोरे बैंकमे नोकरी करैए। समांगोक पातर अछि। असगरे नोकरी करत आकि खेती करत। सभ खेत बटाइ लगौने अछि। दस बीधा जमीन अपना गाममे ओकर छइ। जँ इच्छा हुअ तँ दसो बीघा कीनि लएह। अखन धरि ओकर जमीन ऐ दुआरे बँचल छै जे एक्केठाम बेचए चाहैए। नै तँ कहिया ने बिका गेल रहितै। मुदा एकटा बात पुछै छिअ जे अखन धरिक जे तोहर जिनगी रहलह ओ हमरासँ विपरीत रहलह। तोंही कहऽ जे दुनू गोरेक बीच केते दिन निमहत?"

मंगलक प्रश्न सुनि जोगिन्दर अवाक् भऽ गेल। कनी कालक पछाइत बाजल- "मंगल भाय, तोहर शंका सोलहन्नी सही छह। दस गोरेक बीच बजैबला मुँह बनौने छह। मुदा सप्पत-किरिया खा कऽ कहै छिअ जे अपनो अपना जिनगीसँ मन उचैट गेल अछि, सदिखन होइत रहैए कखन सड़कपर घुमै छी आ कखन जहल चलि जाएब। ओना, रोडक सिपाहीसँ

लऽ कऽ नीक-नीक पाइबला सभसँ चिन्हारे ऐछे मुदा ओ सभ पाइयक दोस छी। कहियो काल जे सुतलमे सपनाइ छी तँ ओहिना देखै छी जे आगू-पाछू बन्दुकक हाथे सिपाही घेरने अछि आ हाथमे कड़ी लगौने जहल नेने जाइए! कखनो सोचै छी तँ बुझि पड़ैए जे अपनाकेँ आगू-मुहेँ जाइत देखै छी, आ लगले होइए जे पाछू-मुहेँ तेजीसँ खसल जाइ छी! कखनो चैन नै रहैए..!”

बजैत-बजैत जोगिन्दरक आँखिमे नोर ढबढबा गेल। दुनियाँक आकर्षण देखि मंगलोक मन जेना पीघलए लगलैन। मनमे उठलैन मनुक्खमे एहेन अद्भुत शक्ति होइ छै जे एकाएक बदैल जाइए। डकैतसँ महात्मा बनि जाइए आ महात्मासँ डकैत। तँए मनुक्खक सम्बन्धमे किछु निश्चित कहब असम्भव अछि, अनुपमेय अछि। मुदा तैयो एकटा नमहर खाधि बुझि पड़ैए। हमरा तपमे बिसवास अछि जहन कि एहेन जिनगी उनटा छइ। उम्रमे भलेँ बेसी अन्तर नै हुअए मुदा जिनगी तँ दु-दिसाह अछि..!

मंगलकेँ अपन मात्रिकक एकटा बात मोन पड़लैन। मात्रिक कोशिकन्हामे अछि। पूबसँ कोसी आ पच्छिमसँ कमला गामकेँ घेरने रहए। बिचला सभ धार एक-दोसरमे मिलल। ओइ गाममे बाँसक बोन। बाँसक एकटा बीट गहींरगरमे छल। खूब सहजोर बाँस रहए। चालीस-चालीस हाथक बाँस ओइमे। अगते धार फुला गेल। बाढ़ि आबि गेल। गामक सभ माल-जालक संग गाम छोड़ि कुटुमारे चलि गेल। कातिकेमे घुमि कऽ औत। एहेन परिस्थितिमे मातृभूमि केना स्वर्ग बनि सकैए! ओइ बाँसक बीटमे दस-बारह हाथ पानि लगल रहए। ओइ बीटमे दस-बारह हाथ ऊपरसँ सौंसे बीट कोंपर दऽ देलक। जे अपनो देखनहि रही...।

मोन पड़िते मंगल सोचलैन जे अगर जँ मनुक्ख संकल्पित भऽ जिनगी मोड़ए चाहत तँ जरूर मोड़ि सकैए। अपन परिवारक पाछू लोक चोरी-डकैती, बेइमानी, शैतानी सभ किछु करैए। हम तँ एकटा गिरल आदमीकेँ उठबए चाहै छी। मनमे खुशी उपकलैन। मुस्कियाइत बजला-

“भाय, जहिना तूँ दरबज्जापर आबि कहलह तहिना तँ हमरो मदैत करब फर्ज बनैए। मुदा आइ धरि अधला काज नै केलौं, तेकरो तँ निमाहैक

अछि।”

मंगलक बात मंगलक पिता गणेशी सेहो सुनलैन। ओ लग्घी करए निकलल रहैथ। हाँइ-हाँइ कऽ लग्घी कऽ लगमे दुनू गोरेक बीच आबि कहलखिन- “बौआ, तीस बरख पहिलुका एकटा खिस्सा कहै छिअ। ओइ समय जुआने रही। मोछ-दाढ़ीक पम्ह अबिते रहए। माइयो-बाबू जीबते रहैथ। अहिना कातिक मास रहइ। तीन बजे करीब बेरू-पहर माथपर मोटरी नेने नाना हहाएल-फुहाएल एला...।

अबिते माएकेँ कहलखिन-

“दाइ, गंगा नहाइले जाइ छी। बहुत लोक गामक जाइ छइ। ओकरा सभकेँ कहने छिऐ जे टीशनेपर भेँट हेबह। ताबे कनी हमहूँ सुसता लइ छी आ तहूँ तैयार हुअ। खेबा-खरचा ऐछे तँए कोनो ओरियान करैक नै छह...।”

..नानाक बात सुनि माए ठर्रा गेल। एक दिन पहिने गाए बिआएल रहए। ऐ सभमे माए बड़ सुतिहारि। माइक मनमे दू तरहक बात टकरा गेलइ। ओमहर गंगा नहाइले जाएब आ एमहर जँ गाएकेँ किछु भऽ जाए? तहन तँ नअ मासक मेहनत डुमि जाएत? दोसर होइ जे गौंआँ-घरूआकेँ छोड़ि बाबू एला। गाड़ीए-सवारीक भीड़-भड़क्काक बात छी, जँ कहीं कियो भेँट नै होनि, तहन की हेतैन? तँए गुम्म रहए। तैबीच बाबूओ आबि गेला। गोड़ लागि ओहो कातमे ठाढ़ भऽ गेला। ने माए किछु बजैत आ ने ओ। नाना अपन बात बाजि चुकल छला तँए ने किछु बाजैथ। तीनू गोरेकेँ चुप देखि कहलयैन- “नाना पएर धुअ ने?”

ओ कहलैन-

“नै-नै, पएर-तएर नै धुअब। टेनक टेम भेल जाइए...।”

सामंजस करैत माए बाजल-

“बौआ, छोड़ैबला कोनो ने छह। नन्ना संगे तोंही जाह।”

...मन अपनो रहए मुदा बीचमे बाजब उचित नै बुझि चुप्पे रही। ओना, भागवत सुनै काल एकटा खिस्सा सुनने रही जे गंगा तेहेन भारी धार अछि जइमे सौंसे दुनियाँक मनुक्खसँ लऽ कऽ चुट्टी-पिपरी धरि अँटि

जाएत। तैयो पेट खालीए रहत। सएह देखैक जिज्ञासा रहए। नाना संगे विदा भेलौं। जखन गंगामे पैस दुनू गोरे नहाए लगलौं आकि नाना टोकलैन-

"नाति, मने-मन गंगाकेँ कहुन जे आइसँ झूठ-फूस नै बाजब।" सएह कहि डुम लेलौं। दू सालक पछाइत बाबू मरि गेला। घरक गारजन बनलौं। बाबूक मुइला पछाइत माइयो रोगा गेल। मुदा काज करैक सभ लूरि रहए तँए कहियो कोनो काजक अबूह नै लागए। अपन राजकाजमे सदिकाल लगल रहै छेलौं। कहियो झूठ बजैक जरूरते ने हुअए। दछिनबारि टोलमे सरूप रहए। दस बीघा खेतो ओकरा रहइ। मुदा रहए फुर्र-फाँइबला आदमी ललबबुआ। भरि दिन एमहरसँ ओमहर घुमल घुरइ। ताश जे खेलए लगै तँ बारह-दू बजे राति धरि खेलते रहइ। गामक लोककेँ टीक ओझरबैमे माहिर।

तेतबे नइ, पर-पनचैतीमे तेहेन पेंच लगा दइ जे मारि-पीटि भइये जाइत। कोट-कचहरीमे दलाली सेहो करइ। दस बीघा खेत रहितो दुइयो मास घरसँ नै खाए। ने अपने कोनो काज करैए आ ने खुट्टापर बरद रखने रहए। जे सभ झड़-झंझटमे फँसल रहए ओकरे सबहक बरदसँ खेतियो करैए आ ओकरे सभसँ ठकि-फुसिया कऽ गुजरो करइ। जेकरासँ जे चीज लइ ओकरा घुमा कऽ दइक नामो ने लइत।

एक दिन अपना ऐठाम आबि कहलक- "गणेश, सुनै छी तूँ चाउर बेचै छह?"

हम कहलिऐ- "हँ।"

कहलक- "एक मन चाउरक काज अछि।"

कहलिऐ- "भऽ जाएत। केकरो पठा देबइ, नै तँ अपने नेने जाएब तँ नेने जाउ।"

चाउर तौला कऽ कहलक- "तोरा तगेदा करैक जरूरत नै छह। जखने हाथमे रुपैआ औत तखने दऽ देबह।"

कहलिऐ-

"बड़बढ़ियाँ। छह मास बीत गेल। ने तगेदा करिऐ आ ने दिअए। साल बीत गेल। दोसर साल फेर ओहिना केलक। तेसरो साल केलक। झूठ

केना बजितौं जे चाउर नै अछि। पाइयक दुआरे अपन काज खगैत रहए। काजकैँ बिथुत होइत देखि मनमे आएल जे कमाइ छी हम आ खाइए ललबबुआ..! ई तँ सोझहा-सोझही गरदैनकट्टी भऽ रहल अछि! ओह, से नइ तँ आब कहत तँ गछबे ने करब। कहबै जे नइए। मुदा फेर मनमे उठल जे बीच गंगामे पैस संकल्प केने छी, झूठ केना बाजब? विचित्र स्थिति भऽ गेल। हारि कऽ झूठ बाजए लगलौं। मुदा एते जरूर करै छी जे जे झुठ्ठा अछि ओकरा लग झूठ बजै छी आ जे झूठ बजनिहार नै अछि ओकरा लग सत् बजै छी। तँए बौआ कहि दइ छी जे अहाँ सभ जुआन-जहान छी सोचि-विचारि कऽ डेग उठाएब। जहिना दुनियाँ बड़ीटा छै, बड़ लोक छै, खेत-पथार धार-धूर, पहाड़-पठार, समुद्र इत्यादि की कहाँ छै, तहिना मनुक्खो अछि। एक्के कुम्हारक बनौल पनिपीबा घैल सेहो छी आ छुतहरो छी मुदा देखैमे दुनू एक्के रंग होइए!”

❑ शब्द संख्या: 7699

दू

अमावसिया दिन। आइए साँझमे दिवाली आ निशाँ रातिमे कालीपूजा हएत। अखन धरिक जे काजक उत्साह सभमे रहै ओ ठमैक गेल। काजो आखिरी रूपमे आबि गेल, ओरा गेल। जहिना साल भरिक अध्ययनक आखिरी दिन परीक्षाक दिन होइत, तहिना। काल्हि धरि काज गतिसँ चलैत रहल। जइ दिन जेहेन काज तइ दिन तेहेन रफ्तार। मुदा आइ तँ आखिरी दिन छी तँए काजक उनटा गिनती कऽ लेब जरूरी अछि। हो-ने-हो किछु छुटि गेल हुअए। जँ छुटि गेल हएत तँ पूजामे बिघ्न-बाधा पड़त। तइ दुआरे पूजा समितिक बैसार सबेरे साते बजे बजौल गेल।

आठे दिनमे गामक चुहचुहीए बदैल गेल। जहिना हरोथ बाँसक जड़ि अधिक मोट रहितो बीचमे भूर कम होइत मुदा आगू ओइसँ पातर रहनौं भूर बेसी होइत तहिना बँसपुरोमे बुझि पड़ैत। जखन पूजाक दिन आगू छल तखन काज बेसी आ जखन लग आएल तँ कमि गेल। काल्हिए-सँ गामक धी-बहिन आबि रहल अछि। ओना, गामक सभ अपन-अपन कुटुमकेँ हकार पहिनहि देने मुदा अबैमे दिवाली बाधक बनल छेलइ। दिवाली दिन घरमे नै रहने भूतक बसेराक डर सबहक मनमे नचैत रहइ जे आगू आरो पहपैट हएत। तँए गामक जे धी-बहिन असगरूआ अछि ओ भरदुतिया ठेकना कऽ दिवालीक परात औत। मुदा जेकरा घरमे दियादनी वा सासु अछि ओ किए ने एक दिन पहिनौं औत। नैहर छिऐ ने। केते दिन माए-बाप, भाए-भौजाइ आ गामक सखी-बहिनपासँ भेँट भेना भऽ गेल छइ। तहूमे जेकर नैहरक परिवार जेरगर छै ओ तँ साले-साल वा सालमे दुइयो-तीन बेर आबि जाइए मुदा जेकर परिवार छोट छै, जइमे कम काज होइ छै, ओ तँ दस-दस सालसँ नैहरक मुँह-आँखि नै देखलक।

गामक सौभाग्य जे काली-पूजा शुरू भेल। मुदा एकटा अजगुत बात भऽ गेलइ। गामक धी-बहिनसँ बेसी सारि-सरहोजि आबि गेलइ। बेसी

साइर-सरहोजि एलासँ गामक चकचकीए बढ़ि गेल। जइसँ छौड़ा-मारड़िसँ लऽ कऽ बुढ़-बुढ़ानुसक मुँहमे सेहो चौअन्नियाँ मुस्की आबि गेलैन, तहूमे परदेसिया साइर-सरहोजि आबि कऽ तँ आरो रंग बदैल देलक।

दुखक दिन गौंआँक कटि गेल। सुखक दिन आबि रहल अछि किएक तँ आठ दिन जे बीतल ओ ओहन बीतल जइमे ने केकरो खाइक ठेकान रहलै आ ने सुतैक। मुदा आब तँ सभ पाहुन-परकक संग अपनो पहुनाइए करत। मरदक कोन बात जे जनीजातियो खुशी! जे भनसिया आबि गेल। नीक-निकुत खेनाइ, दिन-राति तमाशा देखनाइ, ऐसँ सुखक दिन केहेन हएत। तहूसँ बेसी खुशी ई जे भरि मेला ने केकरो पैंइच-उधार करए पड़तै आ ने दोकान-दौरीक झंझट रहतै। किएक तँ दू दिन पहिनहि सभ अपन-अपन काज सम्हारि नेने छल। महाजनोक बोही-खाता बन्न रहत। मुदा दिवालीक बोहैनक दुख महाजनक मनकेँ जरूर कचोटै छेलइ। केतबो रेड़गड़ मेला किए ने हौउ मुदा दूध-दही, माछ-मौसक अभाव नै हएत। पाँच दिन पहिनहि सुधा दूधक एजेन्ट आ माछ-माउसक वेपारीकेँ एडभांस दऽ देने अछि। तहूमे काली-पूजा छी। बिना बलि-प्रदाने पूजो केना हएत। बँसपुराक जनीजातियो तँ ओते अनाड़ी नहियेँ अछि जे जोड़ा छागर कबुला नै केने हएत।

पहिल साल पूजाक छी। बिना नव वस्त्र पहिरने पूजा केना कएल जाएत आ धिया-पुता मेला केना देखत जँ से नइ हएत तँ की देवीक अपमान नै हेतैन?

जइ जगहपर काली मण्डप बनल ओ आठे-दस कट्ठाक परती अछि। सेहो आम जमीन। जइसँ एकपेरियासँ लऽ कऽ खुरपेरिया लगा सौंसे परती रस्ते बनल रहइ। ओइ परतीक पच्छिम-उत्तर कोणमे लोक फूटल-फाटल माटियोक बरतन आ पड़सौतीक कपड़ो-लत्ता फेकैत। पूब-उत्तर कोणमे धिया-पुता झाड़ा फिरैत। दच्छिन-पच्छिम भागमे घसबाह सभ घास-घास खेलाइ दुआरे केतेको खाधि खुनने आ दच्छिन-पूब कोणमे कबड्डी आ गुड़ी-गुड़ीक चेन्ह दऽ घर बनौने।

काली-पूजाक आगमनसँ सौंसे परती छील-छालि एक-रंग बना देलक। जइ तरहक मेलाक आयोजन भऽ रहल अछि ओइ हिसाबसँ जगहो

छुछुन लगैत। मुदा रौदियाह समय भेने परतीक चारू भागक खेतक धान मरहन्ना भऽ गेल, जेकरा काटि-काटि सभ अगते माल-जालकेँ खुआ नेने छेलै, तँए मेला-ले जगहक कमी नै रहल।

पनरह बीघासँ ऊपरे खेतक आड़ि-मेड़ तोड़ि चट्टान बना देलक। अगर जँ से नइ बनौल जाइत तँ मुजफ्फरपुरक ओहन नाटकक अँटावेश केना हएत? किएक तँ जइ पार्टीमे बाजा बजौनिहारसँ लऽ कऽ पुरुखक पाट खेलेनिहारि धरि मौगीए कलाकार अछि, संगीतकार सेहो खालीए मौगीए अछि तइ पार्टीकेँ देखैले परोपट्टाक लोक उनैट कऽ नै औत? ऐबे करत। तँए कमसँ कम पाँच बीघाक फील्ड देखनिहार-ले चाहबे करी। से तँ भइये गेल।

तैपर सँ वृन्दावनक रास सेहो अछि, नाटकसँ कनियोँ कम नहि। एक-पर-एक कलाकार अछि। मोट-मोट, थुल-थुल देह, हाथ-हाथ भरिक दाढ़ी-केश लऽ लऽ पार्टो खेलत आ नचबो करत। तँए देखनिहारोक कमी नहियेँ रहत। मेल-फिमेल कौव्वालीक संग महींसोँथाक मलिनियाँ नाच सेहो अछि। एक-पर-एक चारू। किए ने धमगिज्जर मेला लगत।

पूजा-समितिक सभ सदस्यक मनमे खुशी होइत मुदा एकटा शंका सबहक मनमे रहबे करइ। ओ ई जे एते भारी मेलाकेँ सम्हारल केना जाए? केतबो गौंआँ जी-जान लगौत तैयो लफुआ छौड़ा सभ छह-पाँच करबे करत। पौकेटमारो हाथ ससारबे करत। मुदा की हेतै, मेला-ठेलामे कनी-मनी ई सभ होइते छइ। केकरा के देखत आ केकर के सुनत। तहूमे रौतुका मसिम रहत किने?

दोकानो-दौरीक आयोजन सेहो बेजए नहि। दुनू ढंगक दोकान। पुरनो आ नवको। नवका समान-ले न्यू मार्केट एक भाग आ दोसर भाग पुरना बजार बसल। ओना, अखन धरि दोकान-दौरी नीक-नहाँति नै सजल अछि मुदा बेर टगैत सभ सजि जाएत।

न्यू मार्केटक चाक्-चिक् दोसरे ढंगक अछि जइमे बिनु देखलेहे समान बेसी रहत। दोकानदारो सभ बहरबैए रहत। एहेन-एहेन सुन्नर चूड़ी ऐ इलाकाक लोक देखनौं हएत, तेहेन-तेहेन चूड़ीक दोकान सभ आबि गेल

अछि। देखनिहारोकेँ आँखि उठि जाएत। उठबो केना ने करत? एते दिन देखै छल जे चूड़ी स्त्रीगणेटा बेचै छेली, ऐबेर देखत जे पुरुखो बेचैए। तइमे तेहेन-तेहेन फोटो सभ दोकानक भीतरो आ बाहरोमे लगौने अछि जे अनेरे आगूमे भीड़ लगले रहत। असली मनुक्ख छी आकि नकली से सभ थोड़े बूझत। फोटोए टा नै गीतो गबैबला तेहेन-तेहेन साउण्ड-बॉक्स सभ सजौने अछि जे सभ किछु बिसैर जाएत।

चूड़ी बजारक बगलेमे चेस्टरक दोकान लगल अछि। चूड़ी बजारसँ कम थोड़े ओहो वेपारी सभ सजौने अछि। काल्हिए-सँ एहेन-एहेन प्रचारक मशीन सभ लगौने अछि जे कियो थोड़े परखि लेत जे आदमीक मुँह बजै छै आकि मशीन। परचारो कि हरही-सुरही छइ। समानक संग-संग पहिरैक लूरि सेहो सिखबैए। धैनवाद ओइ बनौनिहारकेँ दी जे हाथी सन-सन मोट देहसँ लऽ कऽ खिरकिट्टी देह धरिमे एक्के रंगक चेस्टरसँ काज चलि जाएत। तहूमे तेहेन डिजेनगर सभ अछि जे एकटा छोड़ि दोसर पसीनो करैक जरूरत नै पड़त। जेकरा पाइ छै ओकरा एकेटासँ थोड़े मन भरत? ओ तँ गेठक गेठ कीनत। बिल्कुल औटोमेटिक। दामो कोनो बेसी नहियेँ रखने अछि जे समानक बिकरी कम हेतइ। मात्र एगारहे रुपैआ। वेपारियो सभ तेहेन ओसताज अछि जे पहिनहि पता लगा समान डिकने अछि।

चेस्टरक दोकानक बगलेमे खेलौनाक बजार अछि। वाह रे! खेलौना बनौनिहार आ पूजी लगा वेपार केनिहार। दस रुपैआसँ लऽ कऽ हजार रुपैआ धरिक। बन्दुक, तोप, रौकेट, हवाइ जहाजक संग बम साइजिक खेलौना सभसँ दोकान भरने अछि। देखैमे असलीए बुझि पड़त मुदा अछि नकली। ओना, असलेहे जकाँ गोलियो छुटैत, अवाजो होइत आ उड़बो करैए।

तीनटा दाढ़ी केश बनबैबला बम्बैया शैलून सेहो आबि गेल अछि। तीनूमे महिले कारीगर। मरदे जकाँ अपन रूप बनौने। मुदा मरदोसँ बेसी फुरीतगरो आ बजैयोमे चंगला। दाढ़ी कटबै काल बुझिए ने पड़त जे उनटा हाथ पड़ैए आकि सुनटा। हाथो मरदे जकाँ मुदा कनी गुलगुल बेसी।

शैलूनक बगलेमे साड़ी-बजार। साड़ियो सभ अजबे टँगने अछि। पुरजीमे रेशमी लिखि-लिखि सटने मुदा पटुआ जकाँ क्षल-क्षल करैए। केतौ

ओचिला नहि, एकदम पलीन। तेहेन-तेहेन पटोर सभ रखने अछि जे बुझबे ने करबै ई भगलपुरिया रेशम छी आकि पटुआक। प्लास्टिकक मनुक्ख बना तेहेन सजौने अछि जे बुझि पड़त आँखिक इशारासँ दोकानपर अबैले कहैए।

राम-हिलोरा, मौत-कुआँ, हेलिकेप्टर, हवाइ-जहाज, रेलगाड़ी, दिल्ली-चौकक चरि-पहिया, छह-पहिया गाड़ीक दौड़-बड़हा सभ अछि।

जखन न्यू मार्केट घुमियेँ लेलौं तँ पुरनो बजार घुमियेँ ली। कियो छपरीक दोकान बनौने तँ कियो फट्ठाक खुट्टापर बातीक कोरो बना प्लास्टिक दऽ घर बनौने अछि। कियो तिरपाल टँगने अछि, तँ कियो ओहिना घैला-डाबा इत्यादि माटिक बरतन पसारने अछि। दोकानदारो सभ सुच्चा ग्रामीण। अँइ! ई तँ चिन्हरबे दोकानदार सभ छी। पहिलुके दोकान झुनझुनाबला बुढ़बाक छी। चालिसो बर्खसँ बेसीएसँ झुनझुना बेचैए। आब तँ बुड़हा गेल। तैयो देखियौ, दुनू परानी दुनू दिस बैस ताड़क पत्ताक झुनझुनो बना रहल अछि आ खजुरक पातक पटिया, बीऐन सेहो सजौने अछि!

“तोरा तँ कनी कऽ चिन्है छिअ हौ झुनझुनाबला?”

“बौआ चसमा लगौने छी तँए धकचुकाइ छह। पहिने चसमा नै लगबै छेलौं। आँखियो नीक छेलए। दू साल पहिने आँखि खराप भऽ गेल, अही बेर लहानमे आँखि बनेलौं।”

मुदा झुनझुनावाली परेख कऽ कहलक-

“बौआ सोनमा रौ? जहियासँ परदेस खटए लगलेँ तहियासँ नै देखलियौ। तूँ हमरा चिन्है छेँ?”

“नहि।”

“तोहर मामाघर आ हम्मर नैहर एक्के ठीन अछि, अँगने-अँगने झुनझुनो आ बिऐनो-पटिया बेचै छी। अहीसँ गुजर करै छी। आब तँ भगवान सभ किछु दए देलैन। दूटा बेटा-पुतोहु अछि। सातटा पोता-पोती अछि। दुनू बेटा घर जोड़ैया करैए, राज मिस्त्री छी। खूब कमाइए। आब तँ अपनो ईटाक घर भऽ गेल। मुदा दुनू परानी तँ जिनगी भरि यएह केलौं।

आब दोसर काज करब से पार लगत। ओना, दुनू भाँइ मनाहियोँ करैए। मगर हाथ-पर-हाथ धऽ कऽ बैसल नीक लगत। तँए जाबे जीबै छी ताबे करै छी। तोरा माएसँ बच्चेसँ बहिना लगल अछि। जहिया तोरा घर दिस जाइ छी तहिया बिना खुऔने थोड़े आबए दइए। माएकेँ कहि दिहैन जे अपनो दोकान मेलामे अछि। तोरा कएटा बच्चा छौ?"

"एक्केटा अछि।"

"एकटा झुनझुना बौआ-ले नेने जाही।"

"ओहिना नै लेबौ मौसी। अखन हमरो संगमे पाइ नै अछि आ तहूँ दोकान लगैबते छेँ। बिकरी बट्टा थोड़े भेल हेतौ।"

"रओ बोहैनक सगुन ओकरा होइ छै जे इद-बिद करैए। हम तँ अपन पोताकेँ देब। तइले बोहैनक काज अछि। ले नेने जाही।"

दोसर दोकान रमेसराक लोहोक समान आ लकड़ियोक समानक अछि। हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, पगहरिया, कुरहैर, खनती, चक्कू, सरौता, छोलनीक संग-संग चकला, बेलना, कत्ता, रेही, दाइब, खराम, बच्चा सबहक तीन पहिया गाड़ी इत्यादिक दोकान लगौने अछि। असगरे रमेसरा समान पसारि खुट्टामे ओङैठ, टाँग पसारने बीड़ी पीब रहल अछि! कहलिऐ-

"रमेसरा रौ। सुनने रहियौ जे तहूँ दिल्ली धए लेलेँ?"

"धुर्र बुड़ि, दिल्ली हौआ छिऐ। जहिना लोक कहै छै ने जे दिल्लीक लड्डू जेहो खाइए सेहो पचताइए आ जे नै खेलक सेहो पचताइए। दिल्लीसेट सभकेँ फुलपेन्ट, चकचकौआ शर्ट, घड़ी, रेडियो, उनटा बाबरी देखि हमरो मन खुरछाँही काटए लगल। गामपर केकरो कहबो ने केलिऐ आ पड़ा कऽ चलि गेलौं। अपने जाति क ऐठाम नोकरी भऽ गेल। तीन हजार रुपैआ महिना दरमाहा आ खाइले दिअए। मुदा तेते खटबै छेलए जे ओते जे अपने गाममे खटी तँ केतेक बेसी होइए। घुमि कऽ चलि एलौं।

जहिया सुनलिऐ जे अपनो गाममे काली-पूजाक मेला हएत तहियासँ एते समान बनौने छी। कहुना-कहुना तँ चारि-पाँच हजारक समान अछि। कोनो कि सड़ै-पचैबला छी जे सड़ि जाएत। तोरा सभकेँ ने बुझि पड़ै

छौ जे दिल्लीमे हुण्डी गाड़ल अछि। हम तँ एक्के मासमे बुझि गेलिऐ। जखन अपना चीज-वौस बनबैक लूरि अछि तखन अनकर तबेदारी किए करब। अपन मेहनतसँ मालिक बनि कऽ किए ने रहब। तूँ सभ ने अनके कोठा आ सम्पैतकेँ अपन बुझै छीही। मुदा ई बुझै छीही जे धनिकहा सभ तोरे मेहनत लूटि कऽ मौज करैए। अखन जो, कनी दोकान लगबै छी।"

आगू बढ़लौं। अरे! ई तँ रौदिया भैयाक चाहक दोकान बुझि पड़ैए।

"अपने दोकान खोललह भैया?"

"हँ, बौआ। गामक मेला छी। एकर भीड़-कुभीड़ तँ गौअँएपर ने पड़त। ओहिना जे टहलैत-बुलैत रहितौं तइसे नीक ने जे दू पाइ कमाइयो लेब आ मेलाक ओगरबाहियो करब।"

"बेस केलह। बरतन-बासन अपने छेलह?"

"नहि। रघुनाथ लग बजलौं तँ वएह अपन पुरना सभ समान देलक।"

"रघुनाथक दोकान तँ बड़ स्टेण्डर भऽ गेलइ।"

"चाहे दोकानक परसादे तीनटा बेटियोक बिआह केलक आ ईंटाक घरो बना लेलक।"

"वाह! बड़ सुन्दर, बड़ बेस।"

केते छोटका दोकानदार अखन छपड़ियो ने बनौने। कातिक मास रहने ने बेसी गरमी आ ने बेसी जाड़। तहन किए अनेरे बाँस-बत्ती कीनि घर बनौत। दूटा बाँसक खुट्टा गाड़ि ऊपरमे बल्ला दऽ देत। ओइपर केराक घौर टाँगि बेचत। तहिना कचड़ी-चप, पापड़-फोंफी-ले तँ माटिए-मे चूल्हि खुनि लोहिया चढ़ा बनौत। मुरही पथियेमे रखि डिब्बासँ नापि-नापि बेचत। झिल्ली बनबैक साँचा तँ सभकेँ रहितो ने छै, जे बनौत।

झंझारपुरक आ मधेपुरक दस-बारहटा दोकानदार आबि कऽ मेलाक चुहचुहीए बदैल देलक। गहींकी सेहो चिन्हरबे आ दोकानदारो सएह। तँए सभसँ नीक कमाइ ओकरे सभकेँ हएत। नगद-उधार सभ चलतै। एक पाँतिसँ सभ दोकान बना रहल अछि।

पितोझिया गाछ लग के झगड़ा करैए! कनी ओकरो देखि लिऐ। अरे! ई तँ दुनू परानी ढोलबा छी!

"एना किए ढोल भाय अबिते-अबिते ढोल जकाँ दुनू परानी ढबढबाइ छह?"

आवाज दाबि ढोलबा कहलक-

"हौ भाय, देखहक ने ऐ मौगीयाकेँ, मेलासँ जेकरा जे हानि-लाभ हौउ मुदा हमरा तँ सीजिन पकड़ाएल अछि, आगूमे छठि अछि। परोपट्टाक लोक तँ कोनियाँ, सूप, छिट्टा, डगरी कीनबे करत। ओइ हिसाबसँ ने समान बनबैत। से कहैए जे तीसे गो छिट्टा-पथीया मिला कऽ अछि। अट्ठारह गो सूप आ गोर पचासे कोनियाँ अछि! तोहीं कह, ऊँटक मुँहमे जीरक फोरनसँ काज चलत?"

कहलिऐ-

"ऐले झगड़ा किए करै छह? फेर लऽ अनिहऽ।"

ढोलबा कनी गम खेलक मुदा झपैट कऽ तेतरी बाजल-

"ऐ मरदावाकेँ एक्को मिसिआ बुधि छइ। एतनो ने बुझैए जे आठे दिनमे केते बनैबतौं। दूटा ढेनमा-ढेनमी अछि, ओकरो सम्हारए पड़ैए। ई तँ भरि दिन बाँस, बत्ती, कैमचीक जोगारमे रहैए। कोनो कि बजारक सौदा छिऐ जे रुपैआ नेने जाइतौं आ कीनि अनितौं।"

ढोलबा बाजल-

"तूँ नै देखै छीही जे महिनामे पनरह दिन काजक दुआरे नहेबो ने करै छी। तोहीं छातीपर हाथ रखि बाज जे एक्को दिन टटका भात-तीमन खाइ छी? डेढ़-दू बजे हकासल-पियासल बाँस आनै छी तखन गोटे दिन नहाइ छी ने तँ नहियेँ नहाइ छी आ धड़फड़ा कऽ खाइ छी फेर तुरन्ते काजेमे फेर लगि जाइ छी। निचेनसँ बीड़ियो-तमाकुल नै खाए-पिबए लगै छी। खा कऽ अराम केकरा कहै छै से तँ दिन कऽ सिहिनते लगल रहैए। तूँ की बुझबीही जे बाँस टोनै, फारै आ गादि लइमे केते भीर होइ छइ। बैसल-बैसल बानि चलबै छैँ तँ बुझि पड़ै छौ अहिना होइ छइ। ई थोड़े बुझै छीही जे उठ-बैठ करैत-करैत जाँघ चढ़ि जाइए। ऐसँ हल्लुक साए बेर डन्ड-

बैसकी करब होइ छइ। एते काज केलाक बाद जा कऽ बैसारी काज अबैए। बैसियो कऽ कारा-कैमची बनैबते छी। गुण अछि जे ताड़ी पीबै छी तँए मन असथिर रहैए आ मूड फरेश रहैए। तँए ने कोनो काज उनटा-पुनटा नै होइए। ने तँ केकर मजाल छिऐ जे एक्के दिनमे एते रंगक काज सेरिया कऽ कए लेत। अच्छा हो, दोकान लगा। दोकान की लगेमे, कोनियाकेँ तीन मेल बना ले। डगरी, सूप तँ एक्के रंग छौ आ छिट्टाकेँ दू मेल बड़का एक भाग आ छोटका एक भाग के लगा ले। पाँच गो रुपैआ दे कनी ताड़ी पीने अबै छी।"

"अखन रौद चरहन्त छइ। अखन जे ताड़ी पीबैले पाइ देबह से कि हमरा गारि सुनैक मन अछि।"

"आँइ गइ मौगिया, तोरा बजैत एक्को पाइ लाज नै होइ छौ, जे पुरुख रहितो घरक भार सुमझा देने छियौ। संगियो-साथी सदिकाल किचारैत रहैए।"

"अच्छा रुपैआ दइ छिअ मुदा फेर बेरू-पहर नै मंगिहऽ। जाइ छह तँ जा मुदा झब-दे अबिहऽ। मेला-ठेला छिऐ असगरे हम दोकान चलाएब आकि बेदरा-बुदरी सम्हारब।"

"से कि हम नै बुझै छिऐ मुदा दसटा दोस-महिम अछि। अगर भेँट-घाँट भऽ जाएत तँ की कुशलो-छेम नै करब।"

बँसपुराक लड़कीक संग जे दुरबेवहार सिसौनीक दुर्गा-स्थानमे भेल ओइ घटनाक समाचार तरे-तर चारू भरक गाममे पसैर गेल छल। जेकर टीका-टिप्पणी गामे-गाम होइ छल। मुदा एक रूपमे नहि। अधिकतर लोक ऐ घटनाकेँ निन्दा करैत तँ कमतर मनोरंजन कहैत। किछु गोरे फैशन बुझि पाछुसँ अबैत बेवहार मानि बजबे ने करैत। मगर सभ किछु होइतो सिसौनीबला बँसपुराबलासँ सहमल। एहेन घटना आगू नै हुअए तइले सिसौनीक बुधिजीवी सबहक मनमे खलबली मचि गेल। सिसौनियेँक दयानन्द दरभंगा कौलेजमे प्रोफेसरी करै छैथ। गामक लोक तँ हुनका एकटा नोकरिहारा बुझै छैन मुदा कौलेजमे छात्रोक बीच आ शिक्षकोक बीच प्रतिष्ठित बेकती छैथ। ऐ बेर ओ दुर्गा-पूजामे गाम नै आबि प्रोफेसर दयानन्द संगीक संग रामेश्वरम् चलि गेल छला। मुदा बालो-बच्चा आ

पत्नियोँ गाम आएल रहैन। वएह सभ रामेश्वरम् सँ एलापर घटनाक जानकारी देलकैन।

घटना सुनि प्रोफेसर दयानन्द मने-मन जरि गेला। गुम्म-सुम्म भऽ सोचए लगला, ई कोन तमाशा भऽ गेल जे धर्मक काजक दौड़मे एहेन अधर्म भऽ गेल! केना लोकक मनमे धर्मक प्रति आदर रहत! धर्मस्थलमे जँ एहेन-एहेन वृत्ति हएत तँ कएक दिन ओ स्थल जीवित रहत! केना केकरो माए-बहिन घरसँ निकैल देवस्थान पूजा करए वा साँझ दिअ औत!

प्रो. दयानन्द, जेते घटनाकेँ टोब-टाब करैथ तेते पैघ-पैघ प्रश्न मनकेँ हौंरए लगलैन। मुदा जे समय ससैर गेल ओ उनैटो तँ नै सकैए। कोन मुहेँ ओइ गाम पएर देब। लोक की कहत? ओहू गामक तँ अनेको विद्यार्थी पढ़बो करैए आ पढ़ि कऽ निकललो अछि। ओ सभ की कहैत हएत। मुदा आगू एहेन घटना नै हुअए तेकर तँ प्रतिकार कएल जा सकैए। पाप तँ प्रायश्चितेसँ कटैए। तहूमे अगुरबारे बँसपुरासँ काली-पूजाक हकार-कार्ड सेहो आबि गेल अछि।

तत्-मत् करैत प्रो. दयानन्दक मनमे एलैन जे एकटा बेंग मरलासँ लोक इनारक पानि पीब तँ नै छोड़ि दैत अछि। ओकरा निकालि गन्धकेँ मेटबैक उपाय करैए। बँसपुराक काली-पूजाक आरम्भ सेहो सिसौनियेँक घटनाक प्रतिक्रिया स्वरूप भऽ रहल अछि। हो-ने-हो एकरे जवाबमे ओहो सभ ने घटना दोहरा दिअए?

काली-पूजा शुरू होइसँ तीन दिन पहिने प्रोफेसर दयानन्द गाम आबि, बिना कोनो मान-रोख केने गामक पढ़ल-लिखल उमरदार सभसँ सम्पर्क कऽ कहलखिन। किछु गोरे गामक प्रतिष्ठा बुझबो करै छला आ किछु गोरे बुझौलासँ बुझलैन। बुझला पछाइत एकमुँहरी सभ गाममे बैसार कऽ एकर निराकरण करैक विचार व्यक्त केलैन। सहमति सेहो बनल। दयानन्दक मनमे आगू डेग बढ़बैक साहस जगलैन। साहस जगिते कौलेजक विद्यार्थी सभकेँ बैसार करैक भार देलखिन। दू दिन समय बीत गेल। जइ दिन काली-पूजा शुरू हएत तइ दिन भोरे सात बजे बैसार भेल।

सात बजेसँ पहिनहि दुर्गेस्थानमे सभ एकत्रित भेला। वैचारिक रूपमे गाम दू फाँक जकाँ भऽ गेल रहए। तँए अपन-अपन विचारकेँ

मजगूत बनबैक विचार सबहक मनमे। जे सभ घटनामे शामिल रहए, ओ तीनू कार्यकर्ता, ओकर पिता बैसारमे नै आएल। नै अबैक कारण विरोध नै लाज होइ। तहूमे जखनसँ प्रोफेसर दयानन्द दरभंगासँ आबि गाममे घटनाक चरचा चलौलैन तखनेसँ मुँह नुकबए लगला।

मुदा मौलाएल घटना पुन: पोनैग गेल। ओना, गामक एक ग्रुप, जेकरा कुकर्मी ग्रुप कहि सकै छिऐ, बल प्रयोगक योजना तरे-तर बनौने रहए। जइसँ कोनो रस्ते ने गाममे खुजतै। मुदा गामक विशाल समूह, जे अधला काजसँ घृणा करैत, कँ एकरंगाह विचार। एक तरहक विचारक पाछू केते तरहक सोच अछि। किछु गोरेक सोच ई रहैन जे गाममे एकटा कुकर्मी समाज अछि जे सदिकाल किछु-ने-किछु करिते रहैए। परोछा-परोछी तँ एक-दोसरकेँ गारि पढ़ैए मगर, बेर एलापर सभ एक-मुहरी भऽ जाइए। तँए घटना ओहन अस्त्र छिऐ जइसँ ओइ समाजकेँ काटि-काटि लतियौल जा सकैए।

किछु गोरेक विचार रहैन जे जहिना तीनू गोरे दसगरदा जगहपर जुलुम केलक तहिना समाजक बीच लतियौल जाए। ओना, किछु गोरेक विचार ईहो रहैन जे हम सभ मनुक्खक समाजमे रहै छी नै कि जानवरक समाजमे। तँए मनुक्खक समाज बनइ। भलेँ मनुक्खक समाज बनबैक जे प्रक्रिया होइए ओइ प्रक्रियाकेँ क्रियान्वित कएल जाए...।

ललबाक विचार सभसँ भिन्न। किएक तँ जइ लड़कीक संग दुरबेवहार भेल छेलै ओ ओकर ममियौत बहिन।

ललबा कलकत्तामे ड्राइवरी करैए। दुर्गापूजामे गाम आएल। जइ दिन घटना भेल ओइ दिन ओ बुझबे ने केलक। जखनसँ बुझलक तखनसँ देहमे आगि लगि गेलइ। मने-मन योजना बना नेने रहए जे धनिकक टेरही केना झारल जाइ छै से समाजकेँ देखा देबइ। नीक मौका हाथ लगल हेन। मुदा मनमे ईहो शंका होइ जे दयानन्द कक्काक आयोजन छिऐन जँ कहीं आगूमे आबि जेता तँ सभ विचार चौपट भऽ जाएत। सोचैत-विचारैत तँइ केलक जे चाहे जे होइ मुदा बिना जुत्तियौने नै छोड़बै। भलेँ जिनगी भरि जहलेमे किए ने रहए पड़ए।

गामक सभ टोलक लोक, गोटि-पँगरा छोड़ि, बैसारमे आएल।

प्रोफेसर दयानन्द उठि कऽ ठाढ़ भऽ बजला- “ऐ बेरक दुर्गा-पूजामे जे घटना गाममे घटल, ओ समाज-ले बड़का कलंक छी। ऐ घटनाकेँ जेते निन्दा कएल जाए ओते कम होएत। केते गोरे बुझैत हेबै जे अनगौंआँ लड़की छल मुदा ई बूझब हमरा सबहक पड़ाइनवादी विचार हएत। जइसँ रंग-बिरंगक अधलासँ अधला घटना होइत रहत आ हम सभ मुँह तकैत रहब। तँए एहेन-एहेन घटनाकेँ रोकए पड़त।”

बिच्चेमे जे ग्रुप हंगामा करए चाहै छल उठि-उठि हल्ला करए लगल। हल्ला देखि सभ उठि कऽ ठाढ़ भऽ विरोध करए लगल। ललबा प्रोफेसर दयानन्द दिस तकलक। दयानन्दक मुँहक रूखि तँ नै बदलल मुदा नोरसँ भरल-आँखि करिया मेघ जकाँ लटैक कऽ निच्चाँ-मुहेँ जरूर भऽ गेल छेलैन! बिजलोका जकाँ ललबा चमैक कऽ फाँइट चलबए लगल।

तीनूकेँ असगरे ललबा मारि कऽ खसा देलक। जाबे सभ शान्त भेल ताबे तँ तीनूक गाल-मुँह फुइल गेल मुदा तैयो ललबाक गरमी कमल नहि। जहिना खून केनिहारकेँ आरो खून करैक गरमी खूनमे आबि जाइए तहिना ललबोकेँ भेल। मुदा चारू दिससँ सभ पकैड़ ललबाकेँ घिचने-घिचने कात लऽ गेल। दुनू हाथ पकैड़ दया बाबू फुसफूसा कऽ कहलखिन- “अगर समाजमे एक्कोटा बेटा अन्यायक खिलाफ अपनाकेँ उत्सर्ग कऽ देत तँ सैकड़ो बेटा धरतीमाताक गोदमे पैदा भऽ जाएत। मन थीर करह। ओना, समाजक सभ तरहक समस्याक समाधान खाली मारिये-टा सँ नै हएत आ ने केवल पनचैतीएसँ हएत। किएक तँ समस्या दू तरहक होइए। पहिल घटना विशेष परिस्थितिक होइ छै, जबकि दोसर सत्ता-विशेष वा बेवस्था विशेषक। अखुनका जे समस्या अछि ओ बेवस्था विशेषक छी तँए एहेन समस्याकेँ बलेँ सँ रोकल जा सकैए। नै तँ कोनो-ने-कोनो रूपमे चलिते रहत, मरत नहि।”

प्रोफेसर दयानन्दक विचार सुनि ललबा बाजल-

“कक्का, अहाँ लग किछु बजैत-करैत संकोच होइए, नइ तँ तीनूक खून पीब लैतिऐ। भलेँ जिनगी भरि जहले किए ने कटितौं, फाँसीएपर किए ने चढ़ितौं। की लऽ कऽ एलौं आ की लऽ कऽ जाएब। जखन मरनाइ ऐछे तँ लड़ि कऽ किए ने मरब जे सड़ि कऽ मरब।”

ललबाक बात सुनि मुस्कियाइत प्रोफेसर दयानन्द बजला- "अल्होमे लोक गबैए 'रनमे मरे दोख नै लागे।' तहिना महाभारतमे व्यासो बाबा कहने छथिन- 'इन्द्रासनक अधिकारी वएह छी जे अन्यायक विरूद्ध रनक्षेत्रमे ठाढ़ भऽ अपन बलि चढ़ौत।' मुदा जे भेल से उचित भेल। ऐसँ आगू नै बढ़ह। अगर जँ ऐसँ सुधैर जाएत तँ बड़बढ़ियाँ नै तँ ओकर फल आन थोड़े भोगत। तूँ एतै रहऽ।"

कहि आगू बढ़ि दयानन्द सोचए लगला जे समाजक अध्ययन नीक नहाँति नै भेल अछि। लोकक जे रूखि बनि गेल अछि ओ कखनो बेकाबू भऽ सकैए। तँए सभकेँ गामपर जाइले कहि दिऐ...।

कहि तँ देलखिन मुदा कियो मैदान छोड़ैले तैयार नै भेल। सभ अड़ल। विचित्र स्थितिमे अपनो पड़ि गेला। मनमे नाचए लगलैन जे सभसँ पहिने हमहीं केना मैदान छोड़ि देब। मुदा रहनौं तँ लोक मानि नै रहल अछि। दोहरा कऽ बजला-

"सभ गोरेक परिवार आइए-सँ नै बहुत दिनसँ एकठाम रहैत एलौं आ आगुओ रहब। तँए सभकेँ मिल-जुलि रहैक अछि। केकरो संग कियो अधला करबै तँ झंझट हेबे करत। एक परिवारक झगड़ा गाम-समाजक झगड़ा बनि जाइए। तँए झगड़ाकेँ रोकैक उपाय एक्केटा अछि जे ओहेन कारणे ने उठै जइसँ झगड़ा हुअए।"

कहि प्रो. दयानन्द घर दिसक रस्ता पकड़लैन। मुदा सभ मैदानमे डँटले रहल। प्रोफेसर दयानन्दक विचारक असर तेनाहे सन लोकक मनपर पड़ल। किएक तँ एहेन-एहेन घटना पूर्वमे अनेको भऽ चुकल छेलइ। जे सबहक मनमे उपकए लगल।

दयानन्द बाट धेने आगूओ बढ़ल जाइ छला आ पाछू घुमि-घुमि देखबो करै छला जे फेर ने तँ पटका-पटकी शुरू भेल। ओना, केकरो हाथमे ने लाठी अछि आ ने हथियार मुदा देह तँ छइ।

प्रो. दयानन्द पाँच बीघा आगू बढ़लापर लग्घी करैक लाथे बैस हिया-हिया देखैथ। जे कियो हाथ-पएर ने तँ फरकबैए। मुदा से नइ देखलैन। पहिने मारि खेलहा सभ मैदान छोड़लक। पाछूसँ सभ अपन-

अपन रस्ता धेलक। ठंढाएल रूखि देखि अपनो उठि कऽ विदा भेला।

घरपर आबि प्रोफेसर दयानन्द पत्नीकेँ कहलखिन- “बँसपुरा जाइक समय दसे बजेक बनौने छेलौं मुदा बैसारेमे बेसी समय लगि गेल। तँए आब नहाए नै लगब। झब-दे खाइले दिअ। ताबे हाथ-पएर धोइ लइ छी।”

पतिक बात सुनि पत्नी किछु नै बजली। बुझल रहैन जे एना केते दिन भेल अछि जे काजक धड़फड़ीमे नहाइयो नै लगै छैथ।

नअ बजैत। बगुरबोनीक भगत कफलाक संग बँसपुरा काली-स्थान पहुँचल। भगतजीक हाथमे लोटा आ जगरनथिया बेंत। डलबाह-मनटुनक हाथमे सिक्कीक चौड़गर चङेरी, जे मधुबनी बजारमे कीनने रहए। चङेरीमे फूल-अछत, अगरबत्ती आ सलाइ रखने रहए। निरधनक कन्हामे मिरदंग लटकल। रविया आ सैनियाँक हाथमे झालि। सोमना हाथमे एकटा बसनी; सरही आमक पल्लो आ पान-सातटा सुखल कूश। बुधबाक कान्हपर एकटा मुठबाँसी बाँस, जेकरा छीपमे आल रंगक पताका आ तीन हाथ जड़िसँ ऊपर ओहने रंगक कपड़ाक टुकड़ा बान्हल। सभ एक-सूरे ‘काली महरानी की जय’क नारा लगबैत।

पूजा समितिक सदस्य बैस अपन काजक हिसाब लगबैत रहए। छलगोरिया मूर्तिक अन्तिम परीक्षण मण्डपमे करैत रहए। भगतजीक क्रिया-कलाप देखैले एक्के-दुइए लोक जमा हुअ लगल। पूजा समितिक सदस्य अपन हिसाब-वारी रोकि भगतजी सभकेँ देखए लगल। काली मण्डपक ओसारपर भगतजीक मेड़िया सभ अपन-अपन समान रखि हाथ-पएर धोइले बगलेक पोखैर विदा भेल। अछींजल भरैले सोनमा बसनी लऽ लेलक। भगतजीक हाथमे लोटा।

हाथ-पएर धोइ सभ कियो काली मण्डपक आगू आबि एकटंगा दऽ दऽ गोड़ लगलक। गोड़ लागि निरधन मिरदंग चढ़बए लगल। सैनियाँ आ रविया झालि बजबए लगल। पोखैरसँ आबि भगतजी हाथमे लोटा नेने ठोर पटपटबैत मण्डपक आगू ठाढ़ भऽ आँखि बन्न कऽ सुमिरन करए लगला। बुधबा मण्डपक आगूमे, थोड़े हटि कऽ धूजा गाड़ए लगल। बरसपैतिया भगैत उठौलक- “हे काली मैया...।”

जेना सभ काजक बँटबारा पहिने कऽ नेने रहए तहिना। ठाढ़े-ठाढ़ भगतजी देह थरथरबए लगला। गोसाँइ आबि गेलखिन। भगतजीक आगूमे डलिबाह दुनू हाथे डाली पकड़ने। थोड़े कालक पछाइत भगतजी चङेरीमे सँ फूल-अछत लऽ उत्तर-मुहेँ खूब जुमा कऽ फेकलैन। फेर फूल-अछत लऽ गंगाजीक नाओं लैत दच्छिन-मुहेँ फेकलैन। चारि मुट्ठी चारू दिस फेक पाँचम मुट्ठी ऊपर फेकैत जोरसँ बजला- "ओ... ओ...।" कहि अपन परिचए कालीक नाओंसँ देलखिन।

कालीक नाओं सुनि डलिबाह बाजल- "हे माए, किछु वाक् दियौ?"

भगत-

"ऐ जगहक भाग्य चमैक गेल। एकरा निच्चाँमे साक्षात गंगाजी बहै छथिन। ई स्थान बनने गाममे कोनो डाइन-जोगिनक किछु नै चलत। एते दिन गामक लोक बड़ कलहन्तमे रहै छेलै मुदा आब सभ खुशीसँ रहत। कोनो कुशक-कलेप केकरो नै लगत।"

गामक खुशहाली सुनि पूजा समितिक सभ सदस्यक मनमे नव आनन्दक जन्म भेल।

देवनाथ पुछलक-

"हे माए, अहाँ की चाहै छी?"

"ई स्थान हमर छी। अखन धूजा गाड़ि पीरी बनेलौं। सभ दिन पूजो करब आ बेरागने-बेरागन गोसाँइ सेहो खेलब। जेकरा जे कोनो उपद्रव देहमे हेतै ओ डाली लगौत। फूल दइते छुटि जेतइ।"

धूजा गाड़ि, पीरी बना बुधबा तुलसियोक गाछ रोपि देलक। समितिक सभ चुपचाप भऽ देखैत रहए। केकरो मनमे कोनो शंके नै उठल। किएक तँ अनेको स्थानमे गहवरो रहैए।

मुस्की दैत देवनाथ पुछलकैन-

"हे मैया, अपन कोनो पहचान दियौ?"

झपैट कऽ भगत-रूप काली बजली-

"तूँ जे जानक बदला जान गछने रहऽ से देलह? जखन जान गड़ूमे

रहऽ तखन के बँचौने रहऽ गड़ू मेटा गेलह तँ सभ किछु बिसैर गेलहक! अखनो धरि जे बँचल छह से स्त्रियेक धरमे। जेहने तोहर स्त्री धरमात्मा छथुन तेहने तूँ पापी छह। हुनके धरमे अखन धरि बँचल छह। नै तँ कहिया ने तोहर नाश भऽ गेल रहितह।"

भगतक बात सुनि देवनाथक मनमे लड़कीबला घटना ठनकल। जवाब नइ दऽ चुपचाप दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

"हे माए, बिसैर गेल छेलौं भने मोन पाड़ि देलह।"

देवनाथपर सँ नजैर हटा भगत जोगिन्दरकेँ कहलक-

"तूँ जे कबुला केलह से देलह? जखन जान उकड़ूमे फँसल रहऽ तखन केते बेर कहि कऽ गछने रहऽ। ओना, तोहर बारहअना ग्रह कटि गेलह सिरिफ चारि-अना बँचल छह। तँए दान-पुन कऽ कऽ जल्दी ओकरो मेटा लएह।"

जोगिन्दरकेँ ओइ रातिक घटना मोन पड़ल जइ राति रुपैआ लऽ सेठक ऐठामसँ पड़ाएल रहए। दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

"हे मैया, ठीके बिसैर गेल छेलौं। जल्दीए तोहर कबुला पूरा करबह।"

बीच-बचाव करैत डलिवाह बाजल-

"आइ पहिल दिन गोसाँइ जगबे कएल, ऐसँ बेसी आब कोनो काज ने हएत।"

डलिबाहक बात सुनि भगत उत्तर-मुहेँ ठाढ़ भऽ दुनू हाथ उठा आँखि मूनि लेलक। काली देहसँ निकैल गेलखिन। सामान्ये आदमी जकाँ भगतो भऽ गेल। झालि-मिरदंग आ भगैत सेहो बन्न भऽ गेल। आँखिक इशारासँ भगत डलिबाहकेँ कहलैन-

"काज सुढ़ियाएल अछि।"

आँखियेक इशारासँ डलिवाह उत्तर देलकैन-

"हँ।"

समितिक सदस्य भगत लगसँ हटि पुन: बैसारमे आबि जाइ गेला।

मुदा एकटा नव समस्या समितिक सामने उपस्थित भऽ गेल। समस्या ई जे कि गहबरो बनौल जाए आकि धूजा उखारि कऽ फेक देल जाए?

मुदा दुनू तरहक विचार उठि गेल। किछु गोरे गहवरक समर्थनो केलक आ किछु गोरे विरोधो केलक। बीचमे मंगलकेँ किछु फुरबे ने करइ। मने-मन सोचैथ जे ई तँ बेर परहक भदबा आबि गेल। जँ मनाही करब तँ शुभ काज अशुभेसँ शुरू हएत। जँ नै करबै तँ सभ दिना भदबा ठाढ़ भऽ जाएत। भगतकेँ मंगल चिन्हतो नै रहैथ मुदा बगुरबोनीक भगतक विषयमे बुझल रहैन जे एकटा कोखिया गुहारि केनिहार-भगत जहल गेल रहए। वएह भगत छह मास जहल काटि हालेमे निकलल छेलइ। बगुरबोनीक गहवरकेँ बदनाम बुझि दोसर गहवर जगबए चाहैए। भगता जहल किए गेल?

बगुरबोनीक भगता मथ-दुखीसँ लऽ कऽ कोखिया गुहारि धरि करै छल। एक दिन एकटा नोकरिया अपन घरवालीकेँ लऽ कऽ कोखिया गुहारि करबए बगुरबोनी गहवर आएल। शुक्र दिन रहइ। तीनू बेरागनमे शुक्र सभसँ नीक बुझल जाइए। खूब डील-डालसँ डाली सजा अनने रहए। आन-आन कोखिया गुहारिमे कहालीक संग बुढ़-बुढ़ानुस स्त्रीगण सभ अबै छल, तँए कहियो कोनो रक्का-टोकी नै होइ। मुदा ओ बुड़िचोन्ह नोकरिया अपन घरवालीक संग अपनो आएल। बुड़िचोन्ह एहेन जे कलकत्तामे नोकरी करितो अस्पताल देखले ने रहइ। पूजा ढारि भगत ओकरा कहलकै- “गहवरक सीमासँ हटि जाह।”

साँझका समय रहइ। अन्हारो भइये गेल रहइ। ओकरा मनमे शंका जगलै। ओ हटैले तैयारे ने भेल। दुनू गोरेक बीच रक्का-टोकी शुरू भेल। रक्का-टोकीक पछाइत ओ गहवरसँ निकैल बहराक जाफरी लग चलि आएल। मुदा आँखि-कान ठाढ़ केने रहल। असगरे भगत आ ओ औरत गहवरक भीतर रहल।

देह थरथरबैत भगत पहिने औरतक देहपर हाथ देलक। औरत गुहारि बुझि किछु नै बाजल। जखन भगत ओकरा पीरीक आगुमे पड़ैले कहलक तखन ओ जोरसँ घरबलाकेँ सोर पाड़लक। घरवालीक आवाज सुनि दौग कऽ आबि सोझे भगतपर हाथ छोड़ए लगल। भगतोक अपन घर

छेलइ। केना अपना घरमे मारि खा बरदास करैत।

हल्ला सुनि पान-सात आदमी पहुँच गेल। सभ भगतेक लाइग-भाइगक। भगतकेँ कहिते ओ सभ ओकरा थोपड़ा देलकै। दू-चारि थापर मौगियोकेँ लगलै। वएह आदमी थाना जा दोसर दिन केस कऽ देलक। तेसरे दिन भगत जेल चलि गेल।

जखनसँ जोगिन्दर सुनलक जे चारि-अना ग्रह बाँकीए अछि जे दान-पुन केलासँ कटत, तखनसँ मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेलइ। मनमे होइ जे भगत ठीके कहलक। जखन रुपैआ लऽ टेम्पूपर चढ़लौं तखन ठीके कबुलो केलौं आ भरि रस्ता गोढ़ियबितो गेल रहिऐन।

भरि रस्ता काली माय, काली माय, सेहो जपैत गेल रही। एते बात जखन मिलि गेल तँ चारि-अना ग्रह केना झूठ भऽ सकैए? दाने-पुन केलासँ ने ग्रह कटैए। मुदा दान-पुन करैक तँ केतेको रस्ता अछि। तहूमे फुटा कऽ किछु नै कहलक। कियो भोज-भनडारा करैए तँ कियो तीर्थ-स्थानमे धर्मशाला बनबैए, कियो-पोखैर-इनार खुनबैए तँ कियो स्कूल-कौलेज बनबैए। तहिना कियो अस्पताल बनबैए तँ कियो अन्न-वस्त्र दान करैए। दान-पुन करैक तँ अनेको जगह अछि! हम की करी?

फेर मनमे एलै जे एते दिन केकरोसँ दोस्ती नै केने छेलौं, तँए अपने फुरने किछु करैत रहलौं। मुदा आब तँ मंगलसँ दोस्ती भऽ गेल अछि तँए हुनके पुछि लेब जरूरी अछि।

पूजा समितिक सभ सदस्य कालीए स्थानमे छल, किएक तँ औझुका काज सभसँ झनझटिया अछि। केतौ दोकान बनबैक तँ केतौ चन्दा-बेहरीक। मुदा तैयो जोगिन्दर मंगलकेँ बैठकसँ उठा कात लऽ गेल। कातमे लऽ जा कहलक-

“भाय, भगतजी ठीके कहलैन जे तोरा चारि-अना ग्रह बाँकीए छह?”

मंगल-

“तोरा अपनो बिसवास होइ छह?”

“हँ। केना नै बिसवास हएत। कोनो कि झुठे गोसाँइ खेलाइए?”

जोगिन्दरक बात सुनि मंगल मने-मन सोचए लगला जे एक दिस दोस्ती भेल आ दोसर दिस दुश्मनीक रस्ता सेहो बनि रहल अछि। अखन धरि वएह ओझा-गुनी लोककेँ ओझरौने अछि, तैयो लोकक बिसवास जमले छइ। कोन जरूरी छेलै जे बिना कहनहि-सुननहि अपने मने चलि आएल।

ठीके गोसाँइ जी कहने छथिन जे “भइ गति साँप छुछुन्दर केरी।” अगर भगतकेँ भगा देबै तँ तेहेन बबंडर करत जे पूजा पूजे रहि जाएत। जँ नै भगेबै तँ गहवर बना बड़का तमाशा ठाढ़ करत। सोचैत-विचारैत मंगल जोगिन्दरकेँ कहलखिन- “तोहर अप्पन की विचार होइ छह?”

जोगिन्दर- “भाय, जँ अपना मने करैक रहितए तँ तोरा किए पुछितिअ?”

जोगिन्दक विचार सुनि मंगलक मन आरो ओझरा गेलैन। कनी काल गुम्म रहि बजला- “भाय, तूँ केते दान करए चाहै छह। दान-पुनक अनेको जगह अछि।”

जोगिन्दर- “जेते दान-पुनक जगह देखै छिऐ ओ लगले थोड़े हएत। जे लगले हएत वएह करब।”

मंगलक मनमे फेर शंका उठल जे हो-ने-हो, ई ई ने कहि दिअए जे ईंटाक गहवर बना देबइ। जँ से कहत तँ ने विरोध करैत बनत आ ने समर्थने। चपाड़ा दैत बजला- “बड़ सुन्दर विचार छह। हमहूँ यएह कहैले छेलिअ।”

“मनमे होइए जे गाममे जेते विधवा, नि:सहाय मसोमात अछि ओकरा सभकेँ मदैत कऽ दिऐ।”

मसोमातक नाओं सुनि मंगलक मनमे खुशीक लहैर उठि गेलैन। हँसैत बजला- “बड़ चिक्कन बात बजलह। मुदा मसोमातक विषयमे कनी बुझह पड़तह।”

“की?”

“अपना ऐठाम दू तरहक मसोमात अछि। एक तरहक सरकारी अछि आ दोसर तरहक समाजक अछि।”

"नै बुझलौं?"

"सरकारी मसोमात ओ छी जे सरकारक देल सभ सुविधा पबैए। आ सामाजिक विधवा ओ छी जेकरा ने सरकार जनै छै आ ने ओ सरकारकेँ जनैए। किछु गनल सरकारी मसोमात अछि जे ओकर पोसुआ छी। जे कोनो सरकारी सुविधा मसोमात सभ-ले औत ओ ओकरे भेटतै।

अजीब खेल सरकारो आ मसोमातोक अछि। ओही पोसुआ मसोमातकेँ इन्दिरा आवासक घरो छै आ बाढ़ि-बर्खामे घरखस्सीक रुपैआ सेहो भेटतै आ बाढ़िसँ क्षति फसलक क्षतिपूर्तिक रुपैआ सेहो ओकरे भेटतै। तेतबे नहि, वृद्धावस्था पेंशन सेहो ओकरे भेटतै आ रोजगार चलबैक नाओंपर सब्सिडी सेहो ओकरे भेटतै। तँए सरकारी मसोमात छोड़ि जे निरीह समाजक मसोमात अछि, जँ ओकरा जीबैक उपाय भऽ जाए तँ उपाय केनिहारकेँ ऐसँ बेसी दान-पुनक फल केतए भेटतै। धैनवाद ओइ माए-दादीकेँ दी जे सत्तैर-अस्सी बर्ख बितौलाक बादो जेठक दुपहरिया, भादवक झाँट आ माघक शीतलहरीमे, जी-जानसँ मेहनत करैए। धैनवाद ओइ अस्सी बर्खक मैयाकेँ दी जे माथपर धान, गहुम, मकैक बोझ लऽ कऽ दुलकी चालिमे गीत गुनगुनाइत खेतसँ खरिहाँन अबै छैथ..।

..तँए, कहबह जे अखन तँ मेलाक धुमसाही अछि, मेलाक पछाइत सभकेँ अपन रोजगारक उपाय कऽ दिहक। काज करब अधला नहि मुदा ओ शरीरक शक्तिक अनुकूल काज हुअए। अखन तत्-खनात पाँच दिनक मेला भरिक बुतात, मेला देखैले किछु नगद आ एक-एक जोड़ साड़ी आ आङी दऽ दहक। मुदा बीचमे एकटा बात आरो छह, जे हमर मिथिलाक धरोहर सम्पैत सेहो छी। ओ ई जे जे जिनगीक चारू पायासँ हारि चुकल अछि, दुखक पहाड़क तरमे पिचाएल अछि मुदा आत्मबल एते सक्कत छै जे दान लइसँ आना-कानी करतह। तँए पहिने जा कऽ ओइ मैया सभकेँ गोड़ लागि कहिहक- 'बाबी, समाजरूपी परिवारक अहूँ छी आ हमहूँ छी, तँए कमाइबलाक ई दायित्व बनि जाइए जे परिवारमे वृद्ध आ बच्चाक सेवा इमानदारीसँ होइ। हम अहाँकेँ मदैत सेवाक रूपमे दऽ रहल छी।'

..तखन जरूर ओ वेचारी हँसि कऽ लेथुन आ मनसँ असिरवाद

देथुन।”

मंगलक विचार सोझे जोगिन्दरक करेजमे घुसल। करेजमे घुसिते तिलमिला गेल। जेना ओइ मसोमात सबहक हृदय जोगिन्दरक हृदयमे धक्का मारि प्रवेश करए लगलै। मन पसीज गेलइ। ओना, जइ गाममे जोगिन्दरक जन्म भेल अछि ओइ गाममे अनेको मसोमात पहिनौं छल आ अखनो अछि। मुदा मसोमातक जे रूप जोगिन्दर आइ देखलक ओ पहिने नै देखने छल। कँपैत मनसँ मंगलकेँ कहलकैन-

“भाय, जे कहलह से अखने कऽ लइ छी। मुदा ऐसँ मन नै मानि रहल अछि। मेलाक पछाइत नीक जकाँ विचारि किछु करब।”

प्रोफेसर दयानन्द, साइकिलसँ सोझे बँसपुरा विदा भेला। गामक सीमा टपिते देखलैन जे एकटा शिक्षक -जेकर बहाली शिक्षा मित्रमे डेढ़ हजार रुपैआपर भेल, बिच्चे रस्तापर साइकिल लगा मोबाइल कानमे सटौने रहए। मुदा किछु बजला नहि। मनमे भेलैन जे एक तँ अहिना अबेर भेल अछि, तैपर जँ किछु कहबै आ रक्का-टोकी शुरू करत तँ अनेरे आरो समय लागत। मुदा मन असथिर नै रहलैन।

सोचए लगला- अखन तँ दरभंगा कौलेजक लगेमे डेरा अछि। मुदा जहिया एम.ए. पास केने रही, तहिया अपना साइकिलो ने रहए आ डेरो दूरमे छल। पएरे डेढ़ कोस चलि कौलेज पढ़बैले जाइ-अबै छेलौं। जहन कि देखै छी गामक शिक्षक गामेक स्कूलमे काज करैए आ मोटर साइकिलसँ जाइ-अबैए! हजार रुपैआक नोकरी केनिहार तीन हजारक अपन जिनगी बनौने अछि। की ओइ शिक्षकसँ पुछि सकै छिऐन जे अहाँ अपन जिनगीक सीमा बुझै छी? जँ नै बुझै छी तँ अहाँ पढ़ेबै की? बच्चा सभ अहाँसँ की सिखत?

ई सभ सबाल मनमे उठिते दयानन्दक मन उलैझ गेलैन। मनमे उठलैन जे जहिना खरहोरिमे पैसैले दुनू हाथसँ खढ़ हटबए पड़ै छै तहिना सभ उलझनकेँ मनसँ हटबैत बँसपुराक सम्बन्धमे सोचए पड़त।

सिसौनीक बैसारक समाचार बिर्ड़ो जकाँ लगले चारू भागक गाम सभमे पहुँच गेल। बँसपुराक काली-पूजा समितिक बैसारमे सेहो

सिसौनियेँक चर्च चलैत। प्रोफेसर दयानन्दकेँ देखिते मंगलो आ देवनाथो उठि कऽ ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम केलकैन। प्रणाम कऽ मंगल दयानन्दक हाथसँ साइकिल पकैड़ मण्डपक बगलमे लगा देलक। साइकिल ठाढ़ कऽ मंगल दया बाबूक हाथ पकैड़ बैसारमे लऽ गेलैन। समितिक बिच्चेमे एक-साए-एक रुपैआ चन्दा दैत प्रोफेसर दयानन्द बजला-

"एकाएक अहाँ सबहक मनमे काली पूजा केना आएल?"

प्रोफेसर दयानन्दक प्रश्नमे रहस्य छिपल छल। तँए कियो किछु उत्तर देबे ने केलकैन। सिसौनियेँक दुर्गा-पूजाक घटनाक प्रतिक्रिया-स्वरूप भऽ रहल अछि। जइ बातकेँ छिपबैत कियो किछु नै बाजल। मुदा दयानन्दक प्रश्न ऐसँ अलग छेलैन। हुनकर प्रश्न छेलैन जे दुर्गा-पूजा तँ शक्तिक पूजा छी जे संगठनक होइत, जखन कि काली-पूजा कालक छी, माने समैयक। प्रश्न उठैए जे शक्तिक संचयमे समैयक की योगदान होइत अछि। मुदा अपन रहस्यमय विचारकेँ छिपबैत दयानन्द बजला-

"बड़ सुन्दर काज अहाँ सभ केलौं। ऐसँ समाजमे नव चेतनाक उदय होइ छइ। जे सभ समाज-ले जरूरीए अछि।"

प्रोफेसर दयानन्द आ बँसपुराक काली-पूजा समितिक सदस्यक बीच गप-सप्प चलिते छल आकि दयानन्दकेँ तकैत बरहरबा गामक प्रोफेसर कमलनाथ मोटर-साइकिलसँ पहँचला। प्रोफेसर दयानन्दकेँ कनडेरीए आँखिए कमलनाथ निच्चासँ ऊपर माने पएर-सँ-माथ धरि देखि बजला-

"दयाबाबू, हम तँ अहींकेँ भँजियबैत घरपर होइत एलौं हेन।"

कमलनाथक बातक उत्तर नै दऽ दयानन्द मुस्की दैत बजला-

"भाय साहैब, कनीए काल ऐठाम देखि लइ छी, तखन दुनू भाँइ संगे चलब। अपने पढ़ौल शिष्य सभ पूजाक आयोजन कऽ रहल छैथ।"

देवनाथो आ मंगलो, कौलेजमे दयानन्दसँ पढ़ने छल। तँए दयानन्दकेँ विशेष सिनेह रहैन। प्रोफेसर कमलनाथ सेहो बिच्चेमे बैस गप-सप्प सुनए लगला। पूजाक सभ बेवस्था बुझि दयानन्द मंगलकेँ कहलखिन- "अखन तँ ओहिना बुझै दुआरे आएल छेलौं मुदा रातिमे,

परिवार सहित सभ कियो देखैले आएब। कनी काल आरो थम्हितौं मुदा भाय साहैब कमल बाबू आबि गेल छैथ। भाय साहैबकेँ तोँ सभ नै चिन्हैत हेबहुन। हमर गुरु भाय छैथ। चारि बरख हिनकासँ पढ़ने छी। दस बर्ख पहिने कौलेजसँ सेवा-निवृत्त भेला। अपने पड़ोसिया सेहो छैथ। बरहरबे घर छिऐन।”

प्रोफेसर दयानन्दो आ प्रोफेसर कमलनाथोक आगमनसँ देवनाथो आ मंगलोक मनमे चारि-बर उत्साह बढ़ि गेल। दुनूक मनमे जेना नव खुशी भेल, जइसँ शरीरमे नव शक्तिक संचार हुअ लगलैन।

प्रोफेसर कमलनाथ एक-साए-एक्कैस रुपैआ चन्दा देलखिन। दुनू गोरेकेँ आग्रह करैत मंगल कहलकैन-

“गुरुदेव, आब अपने सभ केतए जाएब। रहिए जाइऔ। कियो औता अहाँ सभ आएले छी।”

मंगलक बात सुनि प्रोफेसर कमलनाथ बजला-

“बौआ, अखन धरि तूँ सभ नइ चिन्है छेलह। जहन कि एक अरिया-पटिया छी। महिनामे कमसँ कम पाँच बेर ऐ गाम होइत अबै-जाइ छी। औझुका संयोग नीक रहल जे सभसँ भेँट भेल। सिरिफ भेँटे नै चिन्हा-परिचए सेहो भऽ गेल। सभ एक्के अरिया-पटिया छी तँए एकठाम बैस सभ गामक उत्थान-ले विचार-विमर्श कऽ आगू बढ़ैत रहब। ओना तँ हम बुढ़ भेलौं मुदा तैयो दौनक मेहौता बरद जकाँ जाधैर जीबै छी ताधैर संग-साथ दैत रहबह। गामकेँ आगू बढ़बैले दू तरहक काज करैक जरूरत अछि। पहिल, मनुक्खकेँ जीबैले मूल आवश्यकता की-की अछि ओ बुझि ओकर पूर्ति करैक आ दोसर पाछूसँ अबैत क्रिया-कलापकेँ ढंगसँ देखि अधलाकेँ छोड़ि नीकक अनुशरण करैक। अखन तहूँ सभ नमहर काजमे लगल छह ओकरा नीक-नहाँति सम्हारि लएह तेकर पछाइत बुझल जेतइ।”

कहि कमलनाथ दयानन्दक संग किछु बगैल कऽ गप-सप्प करए लगला। कमलनाथकेँ दयानन्द पुछलखिन-

“अपनेकेँ बड़ हलचल देखलौं। किछु खास बात छै, की?”

मुस्कियाइत कमलनाथ कहलखिन- “खास बात तँ अहीं कहब।

करीब साढ़े नअ बजे भातिज आबि कऽ कहलक जे दयाबाबूक गाममे बैसार छेलैन जइमे किछु गोरे हुनका गरियेबो केलकैन आ मारबो केलकैन। से कहाँ धरि की बात छिऐ?”

कमल बाबूक बात सुनि दयानन्द अवाक् भऽ गेला। मने-मन सोचए लगला जे बैसारमे तँ कियो आन गामक नै छल, तहन केना बात उड़ियाएल। फेर भेलैन जे इलाकाक सभ गाम एक-दोसरसँ जुड़ल अछि। कर-कुटुमैतीसँ लऽ कऽ आबा-जाही, हाट-बजार धरिक सम्बन्ध रहैए। परिवारक काज ने साधारण ढंगसँ चलै छै मुदा सामाजिक काज तँ बिर्ड़ो जकाँ उड़ैत चलैए। भरिसक सएह भेल।

फेर मनमे उठलैन, जँ किछु अधला बात उड़बे कएल तँ ओइ संग घटनो उड़ल हएत। जखने घटना उड़ल हएत तखने विरोध स्वरूप चरचा भेल हएत। से तँ अधला नै भेल। ओ तँ नीके भेल। अन्यायक विरोध करब तँ धर्मक रक्षा करब छी। जहिना अन्यायक विरोध केलासँ रामायणिक बालिमे दोबर शक्तिक संचार भऽ जाइ छल तहिना तँ भरिसक ईहो भेल। अन्यायिक बीच जरूर दहसैत बढ़ल हएत। ई तँ जिनगी-ले पैघ उपलब्धि छी। मुस्की दैत दुर्गा-पूजाक घटल घटनाकेँ दोहरबैत प्रो. दयानन्द बजला-

“सभ गाममे दस-बीसटा लुच्चा-लम्पट रहिते अछि। जे सदिकाल किछु-ने-किछु उकठ-पाकठ समाजमे करिते रहैए, ताड़ी-दारू पीब अनेरे केकरो गरियबैत रहैए। माए-बहिनकेँ देखि पीहकारी भरैत रहैए। तेतबे नहि, झूठ-फूस सिखा लकठी सेहो लगबैत रहैए। ओहन-ओहन वृत्ति केनिहारक वृत्तिकेँ रोकब समाजक दायित्व बनि जाइए किने। हमहूँ सएह केलौं।

जँ दुर्गा-पूजामे रामेश्वरम् नै गेल रहितौं तँ एहेन घटना थोड़े गाममे होइत। जइ गाममे हजारो बर्खसँ अनेको पीढ़ी-खुशीसँ रहैत आएल अछि ओइ गाममे एहेन-एहेन घटना भेने समाजमे आगि लगत आकि शान्ति रहत। जाधैर समाज शान्तिसँ नै रहत ताधैर आगू-मुहेँ ससैर केना सकैए। यएह सभ सोचि गाममे बैसार केलौं। बैसारेमे किछु चक-चुक भऽ गेलइ। समाजोकेँ धैनवाद दी जे गलत काजक विरोधमे एकजुट भऽ ठाढ़ भेल। मुदा गलतियो केनिहार तँ बेवस्थेक फूल-फड़ छी, तँए ओहो कमजोर

नहियेँ अछि।”

प्रोफेसर दयानन्दक बात सुनि प्रोफेसर कमलनाथ बजला-

“देखियौ, कोनो स्थानपर पहुँचैले रस्तो अनेक आ सवारियो अनेक तरहक होइ छै, मुदा चलनिहार जँ यएह सोचैत रहि जाए जे ई नीक कि उ, तहन ओ पहुँच केना सकैए?

अपना इलाकाक दुर्भाग्य रहल अछि जे विचारक क्षेत्रमे पैघ-पैघ विचार कऽ लइ छी मुदा कर्मक बेरमे शिथिल भऽ जाइ छी। कोनो विचार ताधैर महत्तक नै बनत जाधैर कर्मरूपमे नै औत। कहैले तँ सभ कियो अपना बच्चाकेँ सिखबै छैथ जे बौआ अधला काज नै करिहेँ, मुदा केलाक पछाइत गबदी मारि दइ छैथ। ऐसँ केना अधला काज मेटाएत। खाएर जे किछु मुदा अहाँक प्रसन्नतासँ हमहूँ प्रसन्न छी। आगूक बात हेतइ। चलू।”

❑ शब्द संख्या: 6539

तीन

नीन टुटिते दुखनीक मनमे, ओछाइनेपर उपकल- आइए दीयोबाती छी आ गाममे काली-पूजाक मेलो। बेटी मोन पड़लै। एना कऽ श्यामार्कें समाद देने छेलिऐ जे एक दिन पहिनहि धिया-पुतार्कें नेने अबिहें, से कहाँ आएल। ओहो वेचारी की करत? अन-पानि घरमे हेतै मुदा तीनू तूर जे मेला देखत तइले तँ दसो-बीस चाही। जँ कहीं अपना हाथ-मुठ्ठीमे से नइ होइ तेकरो इंजाम ने करए पड़तै। भऽ सकैए जे तेकर ओरियान नै भेल होइ। हँ, हँ, भरिसक सएह भेल हेतइ।

ओना, आइ भरि अबैक समैयो छै, बेरो धरि एबे करत। खाइले चाउर आ देखैले रुपैआ नेने आएत मुदा जारैन तँ नै आनत। अखन धरि हमहूँ तँ जारैनक कोनो ओरियान नहियेँ केलौं हेन। आब कहिया करब? भने मोन पड़ि गेल। सोचने छेलौं जे श्यामा औत तँ घर-अँगनाक काज सम्हारि देत सेहो नहियेँ भेल। भरिये दिनमे की सभ करब। घरो छछारैले अछि, ओलतियो ओहिना पड़ल अछि। केना असगरे एते काज सम्हरत? ओलतीमे माटि भरब, आकि घर छछारब आकि जारैन आनब..?

काज देखि दुखनीकेँ अबूह लगि गेलइ। अस-कताइत मने बिछानसँ उठि ओलती देखलक। मुदा रौदियाह समय रहने माटि देब जरूरी नै बुझि पड़लै। काज हल्लुक होइत देखि मनमे खुशी एलइ। ओलतीएमे ठाढ़ भऽ ओसार हियासलक। केतौ चुबाट नै देखि सोचलक जे छछारबो जरूरी नहियेँ अछि। खाली बाढ़ैनसँ झोल-झार झाड़ि देबइ।

आरो मन हल्लुक भेलइ। मन हल्लुक होइते बाढ़ैन लऽ घर-ओसारक झोल-झार झाड़ि, अँगनो बहारलक। बाढ़ैन रखि घैला नेने कलपर गेल। छाउरेसँ मुँह धोइ कुर्ड़ा कऽ घैल भरने आँगन आएल। पानि पीब तमाकुल निकालि सोचलक जे एकजुम खाइयो लेब आ दू जुम बान्हि कऽ बाधो नेने जाएब। सएह केलक।

ओना, दुखनी पहिने तमाकुल नै खाइ छलि, हुक्का पीबै छलि। मुदा जहियासँ लबहदक मिल बन्न भेल तहियासँ छूआ भेटनाइए बन्न भऽ गेल। जइसँ पीनी महग भऽ गेलइ।

घर बन्न कऽ कान्हपर लग्गी नेने दुखनी मारन बाध विदा भेल। बाधक अदहा भाग निच्चाँ दिससँ खेती होइत बाँकी ऊपर दिससँ गाछीए कलम अछि। बड़बड़िया आमक गाछक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ सुखल ठहुरी सभ हियासए लगल। रौदियाह समय रहने मनसम्फे जारैन देखलक। जारैन देखि मन चपचपा गेलइ।

आँचरक खूट खोलि तमाकुल निकालि एक चुटकी मुँहमे लेलक आ फेर बान्हि लेलक। तमाकुल मुँहमे लइते मोन पड़लै जे ऊक बनबैले खढ़ कहाँ अछि! आन साल लोक आसिन-कातिकमे खरहोरि कटबै छेलै ओइमे सँ दू मुठ्ठी रखि लइ छेलौं। जइसँ सालो भरि बाढ़ैनो भऽ जाइ छेलए आ ऊको बना लइ छेलौं। मुदा जेहेन बाढ़ैन चौड़काँटूक होइए तेहेन राड़ीक थोड़े होइए। मुदा हारल नटुआ की करत? तेते ने लोक बकरी पोसि नेने अछि जे केतौ एकोटा चौड़काँटू रहए दैत अछि। तहूमे तेहेन रौदियाह समय भेल जे घसवाह सभ चोरा-चोरा घासेमे काटि खरहोरियो उपटा देलक। कथीक ऊक बनाएब?

ऊक नै हएत तँ पाबैन केना हएत। गाम कि कोनो शहर-बजार छिऐ जे ने लोक घरमे सीर-पाट रखैए आ ने ऊक फेड़ैए। सोझे छुरछुरी-फटक्कासँ पाबैन करैए।

नजैर खिरा खढ़ भँजियाबए लगल। भँजियबैत गंगबापर नजैर गेलइ। बुदबुदाएल- "त: अनेरे एते मन औनाइ छेलए। घरे लग पोखैरक महारपर खढ़क जाक लगौने अछि ओहीमे सँ लऽ आनब।"

मुँहमे खैनी घुलिते थूक फेकलक। खढ़क ओरियान देखि मन सनठीपर गेलइ। बिना सनठीए ऊक केना बनाएब? मनमे खौंझ उठलै। खौंझा कऽ बाजल-

"सभ खेतबला पटुआ उबजौनाइ छोड़ि देलक। आब अपनो ऊक बना लिअ। हमसब तँ सहजे गरीब छी, अपना खेत-पथार नै अछि। मुदा

खेतोबला ऊक फेड़ि लिअ! माल-जालकेँ ठेका-गरदामी बना लिअ! आनह आब बजारसँ कीनि कऽ प्लास्टिकक डोरी! अपने मालकेँ डोरीक रगड़ा लगतै, चमड़ी उड़तै आ माछी असाइ देतै, घा हेतै, मरतै। तखन बुझत जे पटुआ नै उबजेने केहेन भेल।"

बजैत-बजैत दुखनीक तामस कमल। बिनु सनठीए जँ ऊक बनाइयो लेब तँ भोरमे सूप कथी लऽ कऽ बजाएब? लक्ष्मी दिन छी जँ सूप बजा दरिदराकेँ नै भगाएब तँ ओ किन्नौं भागत?

अपने गप-सप्प करए लगल-

"कोनो की हमरेटा सन्ठी नै हएत आकि गामेमे केकरो नै हेतै?"

"अनका भेने हमरा की? कियो अपन दरिदरा भगौत आकि दोसराक?"

"जँ कोनो जोगार कऽ सभ सन्ठीक ओरियान कऽ लेत आ हमरा नै हएत तखन तँ सबहक भागि जेतै आ हमरे रहि जाएत!"

दुनू हाथ माथपर लऽ सन्ठीक चिन्तामे दुखनी डुमि गेल। रसे-रसे हूबा टुटए लगलै। मन औनाए लगलै। जहिना कोनो भारी चीज आँगुरपर पड़ि गेलासँ छटपटाइत तहिना सन्ठीक सोगसँ दुखनीक मन छटपटाए लगलै। तरे-तर नजैर गाममे टहलाबए लगल। एक बेर टहला कऽ देखलक तँ केतौ ने सन्ठी अभरलै। फेर दोहरा कऽ टहलेलक। फेर ने केतौ अभरलै! मन कहै जे बिनु सन्ठीए ऊक अशुद्ध हएत। अशुद्ध ऊक गोसाँइक आगूमे केना फेड़ब। ओहो की बुझता। फेर मनमे भेलै गरीब लोककेँ अहिना सभ चीजक खगता रहै छै मुदा कहुना तँ जीवियै लइए। देवतो-पितरकेँ बुत्ता नै छैन जे अपनो पाबैन-तिहारक ओरियान करता।

सन्ठी ताकब छोड़ि डिहबार स्थानक भागवत मोन पड़लै। भागवत मनमे अबिते महाभारतक कृष्णकेँ कुरुक्षेत्रमे शंख फुकैत देखलक। मुदा जखन व्यासजी अर्थ बुझबए लगलखिन कि तखने खैनी खाइक मन भेलइ। आँचरक खूटसँ खैनी निकालि चुनबए लगल। अर्थ सुनबे ने केलक। भागवतक कम्मे बात छेलै, मनसँ निकैल गेलइ। फेर सन्ठीएपर मन आबि गेलइ। पटुआक सन्ठीक बदला चन्नी आ सनैपर नजैर पहुँचलै।

सनै आ चन्नीपर नजैर पहुँचते मने-मन अपसोच करए लगल जे अनेरे गिरहत सभकेँ दुसलिऐ। पटुआक खेती तँ वेपारी सबहक दुआरे छोड़लक। मेहनैतो आ लगतो लगा गिरहत सभ उबजबै छेलै आ वेपारी सभ गरदैन-कट्टी कऽ लइ छेलइ। नीक केलक जे पटुआ उपजौनाइ छोड़ि देलक। अपना जेते डोरी-पगहाक काज होइ छै ओ तँ सनैयो आ चन्नियोसँ कइए लइ छइ।

मुदा वेपारियो सभकेँ भाभन्स कहाँ भेलइ। जहिना गिरहतक गरदैन काटि धन ढेरियौलक तहिना प्लास्टिक आबि सभटा खा गेलइ। बड़का-बड़का करखन्ना सभ ओहिना ढन-ढन करैए!

चन्नी मोन पड़िते दुखनीक मनमे खुशी उपकल। खूटसँ तमाकुल निकालि-मुँहमे लेलक। पटुओ-सन्ठीसँ मोट-मोट सन्ठी चन्नीक होइ छइ। सूपो बजबैमे नीक हएत। खूब जोरसँ बजाएब जे दोसरे दिन दरिदरा पड़ा जाएत।

चन्नी मोन पड़िते घुरनापर नजैर गेलइ। बान्हे कात खेतमे ओकरा खूब चन्नी भेल छेलइ। सोनो सुन्दर मुदा पटुआक सोन जकाँ सक्कत नै होइ छइ। खाएर जे होइ छै मुदा काज तँ सम्हैर जाइ छै किने। घुरनाक घरवाली ऐछो बड़ आबेशी। जखने कहबै तखने बेसीए करि कऽ देत। जयललबाक बौह जकाँ धौंछ थोड़े अछि जे सोझोक वस्तु लाथ कऽ लेत। अनकर चीज लइ बेरमे धौंछीक मुँह केहेन मीठ भऽ जाइ छै, जेना मुहसँ मौध चुबैत होइ! भगवान करौ जे सभ चीज बिला जाइ।

तामसपर दुखनी सरापि तँ देलक मुदा लगले अफसोच करए लगल जे अनेरे किए सरापि देलिऐ..! कहुना भेलौं तँ माइए-पितियाइन भेलौं किने? माइए-बापक सराप ने धिया-पुताकेँ पड़ै छइ। जेहेन चालि रहतै तेहेन फल अपने हेतइ। बीस बर्खसँ कहियो थूको फेकए गेलिऐ। अपना आगिए-पानिए निमहै छी।..आगि-पानिपर नजैर पड़िते श्यामा मोन पड़लै। एना कऽ समाद देने छेलिऐ जे एक दिन पहिने चलि अबिहेँ। अनका जकाँ कि तूँ असगरे छेँ। हथिनी सनक सासु छेथुन तखन तोरा घरक कोन चिन्ता छौ।

फेर मनमे उठलै, लक्ष्मी पाबैन छी किने। सभ ने अपना-अपना घरमे

पूजा करत। भरिसक तही दुआरे नै आएल। तमाकुल खाइक मन भेलइ। अँचराक खूट खोलि तमाकुल देखलक तँ एक्के जुम बुझि पड़लै। एक्के जुम देखि सोचलक जे एकरे दू-जुम बना लेब। मुदा टुटल दाँतक गहमे तँ हराएले रहत। पछाइत एक्के जुम बना मुँहमे लेलक।

तमाकुल लइते बेटापर मन गेलइ। बेटा मोन पड़िते दुखनी सोचए लगल जे सालो भरि परदेसमे नै रहत तँ कमाएत केतए? अन्दाजे मनमे एलै जे चारि-पाँच मास गेना भेल हेतइ। मुदा चारि-पाँच मास झुझुआन बुझि पड़लै। फेर मोन पाड़ि हिसाब जोड़ए लगल। ठेकना कऽ मोन पाड़लक जे आसिनमे गेल रहए। हँ, हँ आसिनेमे! खान-पीन चलैत रहइ। हमहूँ पोखैरमे तेल-खैर चढ़ा कऽ आएल रही। अखन कातिक छी। अँइ, तब तँ बरखोसँ बेसी भऽ गेल। ओह! नै, पैछला आसिन नै छी किएक तँ ओकरा गेलापर नाइतक जन्म भेल। ओहो छौड़ा दौगैए। कहुना-कहुना दू बरख भेल हेतइ।

आँगुरपर हिसाब जोड़ए लगल। दू बरख आ एक बरख तीन बरख ने भेल। तीन बरख मनमे अबिते चौंक गेल। ने एकोटा पाइ पठौलक आ ने एको बेर आएल? मनमे खुशी उपकलै। छौड़ा फुटि कऽ जुआन भऽ गेल हएत। कोनो कि खाइ-पीबैक दुख हेतइ। आब तँ चिन्हलो ने जाएत। दाढ़ी-मोँछ सेहो भऽ गेल हेतइ। औत तँ बिआहो कइए देबइ। असगरे नीक नै लगैए। बिनु धिया-पुताक अँगना कोनो अँगना छी। लोके ने लक्ष्मी छी।

मगन भऽ दुखनी आँखि बन्न कऽ अपन फड़ल-फुलाएल परिवार देखए लगल। जहिना पोखैरमे नावपर चढ़ि झिलहोरि खेला उतैर कऽ महारपर अबैत तहिना दुखनियोकेँ भेल। देखिते विचार बदलए लगलै। मनमे उठलै जे जँ कहीं छौड़ा ओनइ बिआह-तिआह कऽ नेने हुअए आ गाम नै आबए, तखन की करब? गामोमे तँ केते गोरेकेँ देखबे केलिऐ हेन।

अखन धरिक खुशीक मनमे एकाएक पानि पड़ि गेलइ। निराश मने सोचए लगल जे जुगे-जमाना तेहेन भऽ गेल जे केकरा के की कहतै। आब केकरो बेटा-बेटी थोड़े पाँजमे रहै छइ। जेकरा जे मन फुरै छै से से करैए। छौड़ा सभ जहाँ बौह देखलक आकि माए-बाप बिसैर जाइए। मने उनैट जाइ छइ।

दुखनीक आँखिमे नोर ढबढबा गेल। आँचरसँ नोर पोछलक। नोर पोछिते मनमे उठलै, जाबे पैरूख अछि ताबे तक ने केकरो पमौजी केलिऐ आ ने करबै। जइ दिन पैरूख घटि जाएत तइ दिन बुझल जेतइ। जिनगियो तँ तहिना अछि, कोनो कि ठीक अछि जे पैरूख घटलेपर मरब, पहिनौं मरि सकै छी तइले सोगे की करब। बेटा जँ उरहैरिये जाएत तँ उरहैर जा।

बेटापर सँ नजैर हटि बेटीपर गेलइ। बेटीपर नजैर पड़िते मनमे आशा जगलै। आशा जगिते मुँहमे हँसी एलइ। सात घर दुश्मनोकेँ भगवान हमरा सन बेटी देथुन। साक्षात् लक्ष्मी छी। अपने फेरल नुआ किए ने दिअए मुदा कहियो ओढ़ैसँ पहिरै धरि वस्त्रक दुख अखन तक भेल हेन। ओकरे परसादे तीनटा कम्मर घरमे अछि। जमाइयो तेहने छैथ जे अपने माथपर उठा कऽ अन्नो-पानि दइए जाइ छैथ।

आश जगिते दुखनी जारैन तोड़ए उठल। आँखि उठा गाछमे सुखल ठहुरी हियासलक। रौदियाह समय भेने मनसम्फे सुखल ठहुरी गाछमे रहबे करइ। जारैन देखि मन खुशीसँ नाचि उठलै। मनमे गामक सुख नाचए लगलै। अखनो गाम गामे छी। शहर बजारमे तँ लोक जारैन कीनैत-कीनैत तँ तबाह रहैए। मोन पड़लै सिंहेश्वर स्थानक मेला। एक्के साँझ भानस केलौं तइमे दस रुपैआ जरनेमे चलि गेल। ई तँ गुण रहए जे सात-आठ गोरे रही जे सबे रुपैआ हिस्सा लगल। नै तँ सवा रुपैआक जारैन चूल्हिए पजारैमे लगि जाइत।

एक-सूरे दुखनी दूटा गाछमे लग्गीसँ ठहुरी तोड़लक। जारैन देखि अबूह लगि गेलै, जे कहुना-कहुना तँ पाँच बोझसँ बेसीए भऽ जाएत। उगहौ पड़त ने। घरो कि कोनो लगमे अछि। पाँच बेर उघैत-उघैत दुपहर भऽ जाएत। मुदा भीरो हएत तँ कहुना-कहुना पनरह दिन निचेनो रहब।

फेर मनमे उठलै जे जँ कहीं ऐ बीचमे श्यामा आबि गेल हएत तँ अँगने-अँगने खोज-पुछारि करैत वौआइत हएत। मुदा छोड़ियो कऽ केना जाएब। सभटा लोक लाइए जाएत। से नइ तँ सभटाकेँ बोझ बान्हि लइ छी आ एकटा लऽ कऽ जाएब। देखियो सुनि लेबइ। जँ नै आएल हएत तँ सभटा उघिए लेब। ओना जँ आएल हएत तँ कि ओहो मानत। दुनू माए-बेटी दुइए बेरमे उघि लेब।

मन असथिर होइते तमाकुल खाइक मन भेलइ। आँचरक खूटपर नजैर पड़िते मोन पड़लै जे तमाकुल तँ तखने सठि गेल! मुदा पथार लगल जारैन देखि मनमे एलै जे पावनिक दिन छी। बेसी अंहोंस-मंहोंस करब तँ सभ काज दुरि भऽ जाएत। अँगनोमे मारिते रास काज अछि।

जारैन बिछैले उठल। गाछक चारू भाग नजैर देलक तँ बीचमे एकटा घोरनक छत्ता सेहो खसल देखलक। छत्तासँ निकैल-निकैल घोरन पसैर गेल। पाँखिबला घोरन देखि दुखनी डरा गेल। बाप रे! ई तँ डकूबा घोरन छी, दुइयोटा काटत तँ पराणे लऽ लेत। मुदा छोड़ियो केना देबइ। से नइ तँ लग्गीएपर उठा कातमे फेक जारैन बीछब। मुदा छोटका सभ तँ सौंसे पसैर गेल अछि। जीबठ बान्हि छत्ताकेँ कातमे फेक दुखनी जारैन बीछए लगल। फेर मनमे एलै जे ठहुरियो तँ दू रंगक अछि। मोटको अछि आ पतरको अछि। से नइ तँ दुनूकेँ फुटा-फुटा रखि, बोझ बान्हब। सएह करए लगल। ठहुरी बिछते रहए कि मोन पड़लै, हाय रे बा! बान्हब कथीपर, जुन्ना तँ ऐछे नहि।

अग-दिगमे पड़ि गेल। पहिने जँ से मोन पड़ैत तँ अँगनेसँ जुन्नो नेने अबितौं मुदा सेहो ने मन रहल। छोड़ि देबै तँ सभटा आने लऽ जाएत! एते बेर उठि गेल, किछु खेनौं ने छी। मुदा जारैन देखि मनमे खुशी होइ जे कहुना-कहुना एक पनरहिया तँ चलबे करत। जँ दू-चारि दिन आरो तोड़ि लेब तँ भरि जाड़क ओरियान भऽ जाएत।

आँखि उठा घसबहिनी सभ दिस तकलक जे कियो भेटत तँ ओकरे हाँसू लऽ कड़चीए नै तँ राड़ीए काटि जुन्ना बना लेब। मुदा सेहो ने केकरो देखै छिऐ। हिया कऽ करजान दिस विदा भेल। मुदा ओहो केराक सुखल डपोर तँ बिना हँसुए काटल नै हएत।

करजान पहुँचते देखलक जे करजानबला केरा घौड़ काटि भालैर आ थम्होकेँ काटि छोड़ि देने अछि। जुन्ना देखि दुखनीक मनमे खुशी भेलइ। पान-सातटा जुन्ना लऽ आबि बोझ बान्हलक। पाँच बोझ। चारू बोझ गाछे लग छोड़ि एकटा नेने आँगन आएल।

आँगन आबि सोचए लगल जे किछु बना कऽ पहिने खा लइ छी। फेर मनमे भेले जे जखने आँगनक काजमे ओझड़ाएब तखने जारैन बाधेमे

रहि जाएत। तत्-मत् करैत पानि पीलक। घरसँ तमाकुल निकालि चुनबैत विदा भेल। पाँचो बोझ उघि लेलक। काठी जकाँ डाँड़ो आ गरदैनो तानि देलकै। देहो-हाथमे दरद हुअ लगलै। हाथो-पएर नै धोलक, ओसारेपर भुँइयेँमे ओंघरा गेल। थाकल-ठेहियाएल देह ओंघराइते निन पड़ि गेल।

बेर टगि गेल। घरक छाहैर अँगनामे दू हाथ ससैर गेल। डेढ़ियापर सँ जोगिन्दर सोर पाड़ए लगल- “काकी, काकी?”

दुखनीक निन नै टुटल। डेढ़ियापर सँ ससैर जोगिन्दर आँगन गेल तँ देखलक जे भुँइयेँमे काकी निनभेर अछि! फेर बाजल-

“काकी, काकी?”

ठाढ़ भेल जोगिन्दरक मनमे उठल जे हमहूँ तँ पाइएबला ऐठीन रहलौं मुदा सभ सुख-सुविधा रहितो ओकरा सभकेँ एहेन निन कहाँ होइ छइ। देखै छी जे पेट खपटा जकाँ खलपट छै, भरिसक खेबो केने अछि कि नहि। तहूमे पएरो धूराएले देखै छिऐ, भरिसक केतौसँ काज करि कऽ आएल अछि। अखन जे घरक सभ कुछ उठा कियो लऽ जाइ तँ बुझबो ने करत। एकरा सबहक कोन दुनियाँ छइ। जहिना चीनीक कीड़ाकेँ मिरचाइमे दऽ देल जाए तँ ओ मरि जाएत। जे सोभाविके छइ। मुदा की मिरचाइक कीड़ा चीनीमे जीब सकत?

विचित्र स्थिति जोगिन्दरक मनमे उठि गेल। मुदा काजक धुमसाही विचारक दुनियासँ खिंच हड़बड़ा देलकै। फेर काकी, काकीक अवाज देलक। मुदा निन नै टुटल देखि कपड़ाकेँ ओसारेपर रखि जोगिन्दर दुखनीक घुट्ठी दाबए लगल। घुट्ठी दाबिते दुखनीक निन टुटल। आँखि मुननहि बाजल-

“अँइ गे शामा! काल्हि किए ने एलँह?”

दुखनीक अवाज सुनि जोगिन्दरक मनमे भेल जे भरिसक काकी सपनाइए। घुट्ठीकेँ हिलबैत बाजल-

“काकी, काकी..?”

आँखि खोलि दुखनी उठि कऽ बैसल। हाफी कऽ जोगिन्दर दिस तकलक। मुदा किछु बाजल नहि। मोटरी खोलि जोगिन्दर जोड़ भरि साड़ी,

साया, एकटा आँगीक संग दसटा दसटकही आगूमे रखि बाजल-

"अखन धरि काकी अहाँ नहेबो ने केलौं हेन।"

जहिना आम बिछनिहार गाछक निच्चाँमे खसल आम देखि उजगुजा जाइत, तहिना दुखनी उजगुजाएल। बाजल-

"बौआ, जारैन नै छेलए वएह तोड़ए भिनसरे चलि गेलौं। ओकरे सम्हारैत-सम्हारैत दुपहर भऽ गेल। किछु खेबो ने केने छी। अराम करए लगलौं आकि आँखि लगि गेल।"

दुखनीक बात सुनि जोगिन्दर बाजल-

"काकी, अखन धड़फड़ाएल छी तँए नै अँटकब। पूजा उसरला पछाइत निचेनसँ आबि आरो गप्पो करब आ कोनो कारोबार करैले मदैत सेहो कऽ देब। अखन मेला देखैले कपड़ो आ रुपैओ देलौं हेन। जाइ छी।"

जोगिन्दर उठि कऽ विदा भऽ गेल। मने-मन दुखनी हिसाब जोड़ए लगल जे अदहा रुपैआक चाउर कीनि लेब आ अदहा हाथ-मुट्ठीमे रखि लेब। मेला-ढेलाक समय छी, कखन कोन भूर फूटि जाएत।

फेर मनमे एलै जे बेटियो तँ अबिते हएत। ओहो चाउर अनबे करत। किएक तँ जखन अनदिनो नेने अबैए, अखन तँ सहजे पाबैन छी। दुनू नाइत-नातिन सेहो एबे करत। ओकरो हाथकेँ दू-चारि रुपैआ नै देबै से केहेन हएत। हम केतबो गरीब किए ने छी मुदा नानी तँ छिऐ। साड़ी खोलि दुखनी देखए लगल। साड़ी देखि बुदबुदाएल-

"एहेन साड़ीक कोन काज अछि। कोनो कि नव-नौतारि छी जे एहेन छपुआ पहिरब। ऐसँ नीक तँ तीनकाजू मारकिन दैत जे केतबो मारि-धूसि कऽ पहिरतौं तैयो साल भरि चलबे करैत। सायाक कोन काज अछि। आब तँ सहजे बुढ़ भेलौं। जहिया जुआन छेलौं तहियो तँ डेढ़ीए पहिरै छेलौं। कोनो कि मँगै-ले गेल छेलिऐ मुदा जखन घर पसि कऽ दऽ गेल, तखन तँ जे देलक सएह नीक। बेटी एबे करत ओकरे पुरना लऽ लेब आ ई दऽ देबइ।"

साड़ी-साया, आँगी समेट कऽ रखि दुखनी रुपैआ गनए लगल। फेर बुदबुदाएल- "सभटा दस-टकहीए छी। दसटा अछि। दसटा दसटकही कए

बीस भेल।”

दू-दूटा कऽ फुटा-फुटा रखि गनलक। पाँच बीस भेल। मनमे खुशी एलइ। फेर लगले मनमे भेलै जे आइ पावनिक दिन छी अखन धरि खेलौं हेन कहाँ। ‘सभ दिन खैहह पवनी ललैहह!’ सएह भऽ गेल। मुदा भिनसरसँ तँ गाछीए-बिरछीमे रहलौं। सारा-गारा नंघलौं, बिना नहेने केना भानस करब?

सुरूज दिस तकलक। माथसँ निच्चाँ देखि सोचलक आइ उपासे कऽ लेब। जाबे नहा कऽ भानस करए लागब ताबे तँ साँझे पड़ि जाएत। साँझमे लक्ष्मी पूजा करब आकि अपने खाए-पीअ लगब। तहूमे अखन धरि ने खढ़ अनलौं आ ने सन्ठी। जाबे से नइ आनब ताबे ऊक केना बनाएब। दियारियो बनबए पड़त। करू तेलो आनए पड़त। घरमे जे तेल अछि ओ अँइठ भऽ गेल अछि, केना दियारीमे देबइ।

काज देखि दुखनीकेँ अबूह लगि गेल। पावनिक सभ किछु बिसैर गेल। नजैर बेटीपर गेलइ। बेटीपर नजैर पहुँचते मनमे खौंझ उठले। बाजल-

“एना कऽ समाद पठौलिऐ, किए ने आएल?”

दुखनी असमंजसमे पड़ि गेल। तैबीच नवानीवाली बान्हेपर सँ सोर पाड़ि बाजल- “काकी! काकी! दैया आगू अबैले कहलकैन हेन। उत्तरबरिया पोखैरपर दुनू बच्चो आ मोटरियो लऽ कऽ बैसल छैन।”

श्यामा-दे सुनि धड़फड़ा कऽ उठि घरमे कपड़ा रखि आँचरमे रुपैआ बान्हि दुखनी विदा भेल। तीन-चारिटा धिया-पुता सेहो संग लगि गेलैन। लग पहुँचते दुखनीकेँ श्यामा उठि कऽ गोड़ लगलक। गोड़ लगैत बेटीपर तरैंग कऽ बाजल-

“अँइ गे, तोरा जानक काज नै छौ जे एते लदने एलेहेँ?”

माइक बातकेँ अनसून करैत श्यामा दुनू बच्चाकेँ कहलक- “नानीकेँ गोड़ लाग।”

नातिनकेँ देखि दुखनी जेना हरा गेल, सभ बात बिसैर गेल। आँचरक रुपैआ निकालि एक-एकटा दस-टकही दुनू बच्चाकेँ हाथमे दऽ बाँकी अस्सियो रुपैआ श्यामा दिस बढ़ौलक।

रुपैआ देखि श्यामाक मनमे उठल। भरिसक बौआ पठौलके हेन। मुस्की दैत माएकेँ पुछलक-

“बौआ पठेलकौ?”

बौआक नाओं सुनि दुखनीक मन फेर औना गेल। नजैर बेटापर गेलइ। बेटापर नजैर पहुँचते मनमे तामस उठलै। बाजल-

“केतए छौड़ा हराएल-ढराएल अछि तेकर कोन ठेकान। अखन धरि ने कहियो चिट्ठी-पुरजी पठेलक आ ने एक्कोटा छिद्दी। ओम्हरे केतौ कोनो मौगी सने उरहैर गेल कि की, से की कोनो पता अछि।”

माइक बात रोकैत श्यामा बाजल-

“एना किए बजै छेँ। माए छीही कनी ठर-ठेकानसँ बजमेँ से नहि।”

बेटीक बात सुनि माइक मन बेटासँ हटि बेटीपर आबि गेल। बाजल-

“दुनू बच्चो आ मोटरियोकेँ केना आनल भेलौ?”

मुस्कियाइत श्यामा बाजल-

“अपने एतए तक पहुँचा गेलखिन।”

जमाए-दे सुनि दुखनी बाजल-

“एक डेग आगू घर नै देखल छेलैन जे घुरि गेलैथ?”

श्यामा-

“नै माए, से बात नइ अछि। गाममे मेलो होइ छै किने आ पाबैनो छिऐ, तँए कहलखिन जे घरपर गेने ओझरा जाएब। चारि थान माल असगरे माए बुते सम्हारल नै ने हेतइ। परसू एथुन।”

परसू सुनि दुखनीक मन थीर भेल। छोटका बच्चाकेँ कोरामे लऽ जेठकीकेँ आगू करैत विदा भेल। घरसँ कनी पाछुए छल कि दच्छिनसँ एक गोरेकेँ अबैत दुनू गोरे देखलक। फुलपेन्ट-शर्ट पहिरने, मुदा कियो चिन्हलक नहि। बदलल चेहरा भुखनाक। भुखनो अँगने दिससँ अबैत आ दुनू गोरे दुखनियोँ अँगने दिस बढ़ैत। घर लग आबि भुखना दुखनीकेँ कहलक-

“माए।”

‘माए’ दुखनी सुनलक मुदा अनठिया बुझि अनठा देलक। किछु बाजल नहि। मुदा श्यामा चीन्हि गेल। बाजल-

“बौआ हौ!”

‘बौआ’ सुनि दुखनियोँ चौंकली। ताधैर भुखना लग आबि माएकेँ पएर छुबि गोड़ लगलक। दुखनी अवाक् भऽ गेल। आँखिमे नोर ढबढबा गेलइ। निच्चासँ ऊपर धरि भुखनाकेँ निंगहारए लगल।

करेज दहैल गेलइ। वामा बाँहिसँ नातिकेँ दबने आ दहिना तरहत्थीसँ आँखि पोछि विह्वल होइत बाजल-

“आँइ रौ बौआ, तूँ तँ समरथ भऽ गेलेँ! चिन्हबे ने केलियौ! आँगे-समांगे नीक रहै छेलँह किने। एते दिनपर किए एलँह। की बुझि पड़ै छेलौ जे घरमे कियो ने अछि। कोनो कि हम मरि गेलियौ। रुपैआ नै कमेलँह तँ नै कमेलँह मुदा छुच्छो देहो तँ अबितँह। अखन तँ हम अपने थेहगर छी।”

श्यामाक माथ परहक मोटरी पकड़ैत भुखना बाजल- “दाइ, तोहर माथ अगिया गेल हेतौ। ला।”

“नै-नै कथीले तूँ लेबह। आब कि अँगना कोनो बड़ दूर अछि।”

मुदा बलजोरी भुखना बहिनक माथपर सँ मोटरी उतारि अपना माथपर लेलक। आद्र स्वरे दुखनी बाजल-

“बौआ, रस्ता तँ भुखले आएल हेबह।”

“नै गइ। खाइत-पीऐत एलौं की।”

“बौआ, अँगनो गेल छेलहक आकि रस्तेसँ रस्ता छह?”

“अँगनामे बेग रखि देलिऐ। घर बन्न देखलिऐ तँ तमोरियावाली भौजीकेँ पुछलिऐ। वएह कहलैन जे दायकेँ आनए काकी आगू गेल छैथ।”

भुखनाक बात सुनि दुखनीकेँ तामस उठल। बाजल-

“आँइ रौ छौड़ा, अँगना गेलेँ तँ गोसाँइकेँ गोड़ लगलेँ की नहि?”

“घर बन्न देखलिऐ तँ बेगकेँ ओसरेपर रखि तोरा तकैले विदा भेलौं।”

“हम कोनो बिलेँत गेल छेलौं। ताबे तूँ हाथ-पएर धो कऽ अँगनेसँ

गोसाँइकेँ गोड़ लागि लइतैँ से तोरा बुते नै होइतौ। जाबे हमरा तकैले एलैँ ताबे जँ कियो बेग चोरा लेतौ, तब की करबीही।”

“हमरा देखिते मारे धियो-पुतो आ जनीजातियो सभ आबि गेल। ओते लोकमे के बेग चोरौत।”

फुसफूसा कऽ माए बेटीकेँ पुछलक- “दाइ, किछु खाइयोबला सनेस छौ। देखै छीही छौड़ाक मुँह केहेन सुखाएल छइ।”

“हँ। असगरे दुआरे केते अनितियौ। पाँच गो दलिपुड़ी अछि।”

“अच्छा, बड़बढ़ियाँ। हम तँ अखन धरि नहेबो ने केलौं हेन।”

“किए? पावनिक दिन छिऐ तैयो ने नहेलैँ।”

“छुट्टियो ने भेल। भिनसरेसँ जारैनक ओरियानमे लगल छेलौं। बोझ उघैत-उघैत मन ठेहिया गेल। असकता गेलौं। ने भानसे केलौं आ ने नहेबो केलौं हेन। ओहिना ओसारपर ओंघड़ेलौं कि नीन आबि गेल। जोगिन्दरा आबि कऽ उठौलक। नै तँ सूतले रहितौं। देखही जे साँझ लगिचाएल जाइ छै, ने अखन तक ऊकक ओरियान भेल हेन आ ने साँझ-वातीक।”

आँगन अबिते दुखनी-भुखनाकेँ कहलक-

“बौआ, पहिने पएर-हाथ धो कऽ सिरा आगूमे गोड़ लागह। तखन किछु करिहऽ।”

भुखना सएह केलक। श्यामा सेहो घैलची लग जा घैला झूका एक चुरूक पानि निच्चाँ खसा ओइमे दुनू पएरक तरबा भीजा ओसारेपर सँ गोसाँइकेँ गोड़ लगलक। सौंसे अँगना धियो-पुतो आ जनीजातियो सभ कच-बच करैत। छोटका बच्चा सभ फुटे काँइ-किचिर करैत।

तैबीच जुगेसराक बेटा, रवियाक बेटाकेँ पाछूसँ पोनमे बिठुआ काटि दोगे-दोग घुसैक गेल। छिलमिला कऽ रवियाक बेटा पाछू तकलक तँ शिबुआक बेटीकेँ देखलक। भेले जे यएह छौड़ी बिठुआ कटलक। हाँइ-हाँइ कऽ दू मुक्का लगा देलकै। मुक्का लगिते शिबुआक बेटी चिचिया कऽ कानए लगल।

शिबुआक घरवाली सेहो पछबारि कात ठाढ़ छलि। बेटीकेँ कनैत

देखि कोरामे उठबैत पुछलक। ओ छौड़ी रवियाक बेटा नाओं कहलक। ओकरो हरलै-ने-फुरलै ओइ छौड़ाकेँ कान ऐंठि एक थापर लगा देलकै। तखने रवियाक घरवाली सेहो अबै छल।

बेटाकेँ देखि पुछलक। ओंगरीक इशारासँ छौड़ा शिबुआक घरवालीकेँ देखा देलक। शिबुआक घरवालीकेँ देखैबते रवियाक घरवाली लगमे जा झोंट पकैड़ मुँहपर थूक फेक देलक। सौंसे आँगन हड़-बिर्ड़ो मचि गेल।

एक दिस छोटका धिया-पुता डरे पड़ाए लगल, तँ दोसर दिस हल्ला सुनि-सुनि आन-आन अबौ लगल। दुखनीक बकारे बन्न। जहिना-जहिना शिबुआक घरवाली गारि पढ़ै तहिना-तहिना रवियाक घरवाली उनटबैत जाइ। किए तँ, स्त्रीगणक झगड़ाक ई विशेषता अछि जे जे पाछू धरि गरियौत ओकर जीत हेतइ।

अँगनाक दृश्य देखि भुखनो आ श्यामो दुनूक बाँहि पकैड़-पकैड़ ठेल-ठालि कऽ अपना-अपना अँगना दऽ आएल। भागलाहा धिया-पुता सभ पुन: आबए लगल। जनीजातियो आ धियो-पुतोमे पाटी बनि गेल।

किछु गोरे शिबुआक घरवालीक पक्ष लऽ कऽ आ किछु गोरे रवियाक घरवालीक पक्ष लऽ कऽ झगड़ाकेँ शान्त केलक। एक दोसराक दोख लगबैत अपना पक्षकेँ निर्दोष साबित करए लगल। मुदा जहिना पोखैरमे गोला फेकलापर पानिमे हिलकोर उठैए जे धीरे-धीरे शान्त भऽ जाइत, तहिना शान्त भऽ गेल।

तत्-खनात तँ दुखनीक आँगन शान्त भऽ गेल। मुदा अँगनासँ बाहर रस्तो आ आनो-आनो जगहपर गुद-गुद-फुस-फुस होइते रहल। जहिना कोनो गाम वा घरमे आगि लगलापर पानि देने मिझा जाइत मुदा आगिक गरमी रहबे करैत, तहिना भेल। आन सभ तँ आँगनसँ निकैल गेल, शान्त भेल मुदा दुखनीक मनमे जेना एकाएक आगि पजैर गेलइ। श्यामा दिस देखि जोर-जोरसँ बाजए लगल-

“हम केकरो बजबैले गेल छेलिऐ जे आबि पावनिक दिन अँगनामे झगड़ा केलक! पाबैन कि कोनो एक दिन-ले होइ छै आकि सालो भरिले

होइए! सालो भरि अँगनामे झगड़ा होइते रहत! तहूमे जे कियो डोरी बाँटि घरक पछुऐत बान्हि देत तखन तँ आरो सालो भरि झगड़ा होइते रहत!”

माइक बोली बन्न करै दुआरे थोम-थाम लगबैत श्यामा बाजल-

“अनेरे तूँ किए आफन तोड़ै छेँ। तोरा अँगनामे छेबे के करौ जे साल भरि झगड़ा हेतौ।”

बेटीक बात सुनि दुखनी दम कसलक। मुदा तैयो मनमे आगि लगले रहलै। घरसँ बिछान निकालि श्यामा अँगनामे बिछा अपन मोटरी खोललक। एक धारा चाउर, सेर तीनिए-क खेसारीक दालि, पाँचटा दलिपुड़ी संगे अपनो आ बच्चो सबहक कपड़ा निकालि रखलक। पाँचो पुड़ीमे सँ दूटा भुखनाकेँ आ एकटा कऽ सरस-निरस तोड़ि दुनू बच्चाक हाथमे देलक। एकटा अपना-ले आ एकटा माए-ले फुटा कऽ रखलक। बैग खोलि भुखना रुपैआक गड्डी निकालि माएकेँ दैत कहलक- “माए, यएह कमा कऽ अनलियौ।”

रुपैआ देखि माइयो आ बहिनो बाजल-

“झाँपह! झब-दे झाँपह! लोक देखि लेतह!”

रुपैआ झाँपि भुखना दू जोड़ साड़ी, आँगी आ सायाक कपड़ाक संग दुनू बच्चा-ले शर्ट-पेन्ट निकालि आगूमे रखलक। कपड़ा देखि दुखनी विस्मित भऽ गेल। मने-मन सोचए लगल। जे ढहलेलो अछि तैयो तँ बेटे धन छी। मोन पड़लै पति। भगवान केकरो अधला करै छथिन। मने-मन पतिकेँ गोड़ लागि दुखनी बाजल- “अही दुनू बेटा-बेटीक आशपर ने अपन वएस गमा कऽ रहलौं। संतोखे गाछ ने मेवा फड़ै छइ।”

माएकेँ विस्मित देखि भुखना बिस्कुटक डिब्बा निकालि माइक हाथमे दैत बाजल-

“माए! ई मक्खनबला बिस्कुट छी, तोरेले अनलियौ हेन।”

हाथमे बिस्कुटक डिब्बा लऽ उनटा-पुनटा कऽ दुखनी देखए लगल। दुनू बच्चो आ श्यामोक नजैर डिब्बापर अँटैक गेल। तैबीच देहमे लगबैबला दूटा गमकौआ साबुन, दूटा कपड़ाक साबुन आ पौआही नारियल तेलक डिब्बा निकालि दुखनीक आगूमे रखलक।

चीज-वौस देखि दुखनीक मन उधिया गेल। मनमे हुअ लगलै जे अकासमे उड़ि गेलौं आकि नरक-सँ-सरग चलि गेलौं आकि सपना देखै छी। अपनाकेँ संयत करैत दुखनी बाजल- “पावनिक दिन छी, पहिने सभ कियो खा लइ जाइ जाह। हम अखन नै खाएब। दिनो खटिआइए गेल अछि, आब साँझ-बाती दइए कऽ खाएब।”

फेर मनमे एलै जे गोसाँइ डुमैपर अछि, अखन धरि पावनिक तँ कोनो ओरियान भेबे ने कएल! ने ऊक बनबैले खढ़-सन्ठी अनलौं, ने दियारी बनेलौं, ने दियारीक टेमी बनबैले साफ सुती कपड़ा तकलौं आ ने दोकानसँ तेले अनलौं। तहूमे दुनू भाए-बहिन आएल अछि, दुइयोटा तीमन-तरकारी नै करब से केहेन हएत। एक तँ लक्ष्मी पाबैन छी, तहूमे एते दिनपर छौड़ा आएल अछि!

पुड़ी खा पानि पीब श्यामा माएकेँ कहलक- “चिकनी माटि सानि कऽ दियारी बना लइ छी। तूँ दोकानक काज झब-दे केने आ नै तँ किरिण डुमलापर दोकानोक काज नै हेतौ। ओहो पूजा-पाठमे लगि जाएत।”

बेटीक बात सुनि दुखनी बाजल-

“आँइ गइ दैया, दोकान-दौरीक काजमे ओझरा जाएब तँ खढ़-सन्ठी कखन आनि ऊक बनाएब?”

काजक भरमार देखि भुखना माएकेँ कहलक- “तोँ दोसरे काज कर, हम दोकानक काज कऽ लइ छी।”

बेटाक बात सुनि दुखनी बाजल-

“अनठिया बुझि दोकानबला ठकि लेतौ!”

माइक बात सुनि भुखनाकेँ हँसी लगल। मनमे उठलै- शहर-बजार घुमै छी हम आ गामक बनियाँ ठकि लेत हमरे! मुदा किछु बाजल नहि। माएकेँ रोकैत श्यामा कहलक-

“आब जे केकरो ऐठीन खढ़-सन्ठी मांगए जेबही से देतौ। पूजा बेर भऽ गेलइ। काल्हिए किए ने मांगि अनलेँ। नै तँ आइए दुपहरसँ पहिनहि मांगि अनितेँ। आब लोक अपन-अपन चीज-वौस समेट कऽ घर आनत आकि तोरा खढ़-सन्ठी देतौ?”

बेटीक बात सुनि दुखनी निराश भऽ गेल। ऊकक आशा टुटि गेलइ। बाजल- “हम तँ बुढ़ भेलौं। आब कि कोनो पाबैन-तिहारक ठेकान रहैए।”

माइक टुटल आशा देखि श्यामा सम्हारैत बाजल- “खढ़-सन्ठी छोड़ि दही। ऊक नै हएत तँ की हेतइ। गोसाँइ बाबाकेँ कहि देबैन जे एते तिरोट भऽ गेल। नै पान तँ पानक डण्टियो सँ तँ पूजा करबे केलौं।”

सामंजस करैत दुखनी बाजल- “अच्छा हो, खढ़-सन्ठी छोड़ि दइ छिऐ। तूँ चिकनी माटिक दियारी बनाले। कनी रूखे कऽ माटि सनिहेँ। नै तँ आब नै सुखतौ। दिनो खटिआइए गेल। रौदो ठंढा गेल। दोकानेक काज केने अबै छी।”

तैबीच भुखना बाजल- “माए, तूँ अँगनेक काज सम्हार। दोकानक काज केने अबै छी।”

“आँइ रौ, शुभ-शुभ कऽ तूँ गाम एलेहेँ, तोरा केना दोकान जाए देबौ। लोक की कहत?”

“लोक की कहतौ?”

“की कहत! तुरन्ते लोक खिधांस करए लगत जे फलनीक खापैड़ केहेन तबधल छै जे अखने बेटा परदेससँ एलै आ बेसाह अनैले दोकान पठौलक।”

“कियो ने किछु बाजत। कोनो अनकर काज छिऐ जे कियो किछु बाजत। बाज कथी सबहक काज छौ?”

“एक रुपैआक नून, दू गो तीमनो-तरकारी करब तँए पाँच रुपैआक करू तेल सेहो लऽ लिहेँ। आठ-अनाक जीर-मरीच, आठ-अनाक हरदी आ आठ-अनाक मिरचाइ सेहो लऽ लिहेँ। अल्लुओ घरमे नहियेँ अछि, तरैबला अल्लू सेहो लऽ लिहेँ। दूटा पापड़ो लऽ लिहेँ। आइ लक्ष्मी पूजा सेहो छी तँए आठ-अनाक मखान आ आठ-अनाक चीन्नी सेहो लाइए लिहेँ। आ हँ! भरि राति डिबिया जरत, तइले मटिया तेल थोड़े-कऽ लऽ लिहेँ।”

“आरो किछु?”

मोन पाड़ि दुखनी बाजल- “आब तँ लोक धुमनक धूपो देनाइ छोड़िए देलक तँए एकटा धुपकाठीए लाए लिहेँ।”

श्यामा दियारी बनबैले चिक्कैन माटि लोढ़ीसँ फोड़ए लगली। भुखना दोकान विदा भेल। दुखनीक मन असथिर भेल। मन असथिर होइते बेटीकेँ कहलक- “बुच्ची, आब हम नहाइले जाइ छी। किरिणो लुकझुकाइये गेल।”

“बौआ जे साड़ी अनलकौ सएह लऽ ले।”

‘बेटाक आनल साड़ी’ सुनि दुखनी जेना हरा गेल। मनमे नाचए लगलै बेटाक कीनल पहिल साड़ी! जहियासँ अपने मुइला तहियासँ कहियो नव साड़ीक नसीव नै भेल। ओना, बेटी अपन पहिरल साड़ी साले-साल दइते रहल तँए कहियो कपड़ाक दुख नहियेँ भेल...।

रोडेक किनछैरमे गाड़ल सरकारी कलपर दुखनी पहुँचल। कलपर पहुँचते मोन पड़लै। साड़ी-लोटा कलेपर रखि चोट्टे घुमि कऽ आँगन आबि बेटीकेँ कहलक- “दाइ, एकटा बात मोन पड़ि गेल। बिसैर जाइतौं तँए कहैले एलियौ।”

अकचकाइत श्यामा पुछलक- “कोन बात मोन पड़लौ?”

दुखनी बाजल- “बच्चा जे दोकानसँ औत तँ कहि दिहैन जे ऐगला चौमास बिकरी अछि, दुइए कट्ठा छैहो। कीनि लेत। हमरा ने एक्कोटा घरसँ काज चलि जाइए मुदा नै ऐ साल तँ ओहू साल बिआह कइए देबइ। बाल-बच्चा हेतइ। लघियो करैले केतए जाएत। लोक बढ़ने मालो-जाल पोसबे करत, से केतए बान्हत।”

श्यामा- “अच्छा जो, पहिने नहाले। बौआ दोकानसँ आएत तँ मोन पाड़ि देबौ।”

❑ शब्द संख्या: 4703

चारि : क

आइ धरिक इतिहासमे बँसपुराक एहेन रूप कहियो नै बनल छल जेहेन आइ देखैमे आबि रहल अछि। ओना, किछु अनुभवी बुढ़-पुरानक कहब छैन जे आइक बँसपुरा दोबरा कऽ बसल गाम छी। हुनका सबहक कथनानुसार करीब साइठ-सत्तैर बरख पहिने ऐ गाममे कोसी प्रवेश केलक। तइमे पहिने जे गाम छल ओकर रूप-रेखा दोसर तरहक छेलइ। आइक जे मुख्य बस्ती अछि ओ पहिने बाध छेलै आ जे बस्ती रहै ओ अखन बाध बनि गेल अछि। जेकर अनेको परमान अखनो भेटैए।

अखनो बाधमे केतौ-केतौ पित्तैर आ तामक बरतन भेट जाइए। पहिलुका बस्तीमे गाछी-बिरछी भरपुर छेलइ। मुदा अखुनका जकाँ ने एते लोक आ ने एते परिवार। जखन पहिल बेर कोसीक बाढ़ि आएल तँ लोककेँ बिसवासे ने होइ जे कोसीक पानि छी।

मुदा किछु अनुभवी लोक पानिक रंग देखि परेख लेलैन। किएक तँ कमला पानि जकाँ घोर-मट्ठा-मटियाएल पानि नै रहइ। पाँकक कोनो दरसे नहि। पहिल साल एतबेपर रहि गेल। एक तोड़ बाढ़ि आएल आ दस-बारह दिनक पछाइत सटैक गेलइ। दोहरा कऽ नै आएल। दोसर साल जे बाढ़ि आएल ओ छोटकी धार जकाँ, नासी जकाँ गामक बीचो-बीच बना देलक। ओइ साल गामक लोककेँ ई आभास नै भेलै जे एना धार गाममे बनि जाएत। सभ गामेमे रहल। बाधक ऊँचका जमीनमे घर बना लेलक। केना नै बनबैत? एक तँ पुश्तैनी गामक सिनेह आ अपन सम्पैतो तँ छेलइ। छह मासक पछाइत धार सुखि गेल। मुदा उपजोवारी आ गाछो-बिरीछ अदहा-छिदहा भऽ गेल। किछु गोरेक मालो-जाल नष्ट भेल। अनरनेबा, धात्री, लताम, कटहर इत्यादिक गाछ उपैट गेल, दूटा पोखैर आ पाँचटा इनार धारक पेटमे समा गेल। जइसँ लोकक मनमे डर पैसए लगल। गामक माटि-पानिक सिनेह सेहो कम हुअ लगल। बिसवासू जिनगी अनिश्चितता

दिस बढ़ए लगल। किछु गोरे आन गाम जा बसैक बात सोचए लगल।

मुदा जेकरा खेत-पथार रहै ओ करेजपर पाथर रखि रहैले मजबूर भऽ गेल। तेसरा साल बाढ़ि सभसँ भयंकर रूपमे आएल जइसँ गामक खेतो-पथारक रूप नष्ट भऽ गेल, गाछो-बिरीछ नष्ट भऽ गेल आ लोकोक जान अवग्रहमे फँसि गेल। छातीमे मुक्का मारि सभ गाम छोड़ि देलक। सन्मुख कोसी गाम होइत बहए लगल।

तीस बर्ख तक, एक रफ्तारमे बँसपुरा होइत कोसी बहैत रहल। गामक सभ आन-आन गाम जा बोनिहार बनि गेल। जेकरा-जेतए जीबैक गर लगलै ओ ओतए चलि गेल। अधिकतर लोक नेपाल पकैड़ लेलक। जाधैर लोककेँ अपना पूजी रहै छै ताधैर ने किसान वा कारोबारी रहैए मुदा पूजी नष्ट भेने तँ खाली-हाथ बँचि जाइए।

बँसपुराक सभ बोनिहार बनि गेल। कोसी एलासँ पूर्वक जे सामाजिक सम्बन्ध बँसपुराक छल ओ राँइ-बाँइ भऽ गेल। पहिलुका समाज नष्ट भऽ गेल। बँसपुराक सभ सुख लोक बिसैर गेल। मातृभूमि केकरा कहै छै से बँसपुराक लोक-ले परिभषे मेटा गेल। मातृभूमि आ दुनियाँमे की अन्तर अछि..?

...जँ जन्मभूमिकेँ मातृभूमि मानल जाए, तखन तँ ओकरा सबहक मातृभूमियेँ नष्ट भऽ गेलइ, जे सभ बँसपुरामे जन्म नेने छल। किए तँ ओ सभ आन-आन गाममे रहि रहल अछि। जँ कहियो फेर बँसपुरा जगतै तँ ओ फेर आबि देखत किने। तहिना जे घुमि कऽ औत ओ सभ तँ आने-आने ठाम जन्म नेने रहत, तहन ओकर मातृभूमि कोन भेलइ? जँ देशकेँ मातृभूमि मानल जाए, तँ देशो विभाजित भऽ जाइ छइ। जे दू नाओं धारण कऽ लैत अछि, तहन तँ देशोकेँ केना मातृभूमि मानल जाए? जँ से नहि, जइ धरतीपर लोक जन्म लैत अछि ओकरा मानल जाए, तँ दुनियाँक जेते देश अछि सभ धरतीएपर अछि तहन किए मातृभूमिकेँ छोट आकारमे मानै छी। किए ने दुनियाकेँ मातृभूमि मानल जाए?

कोसीक धार हटलापर जखन बँसपुरा जागल तँ रूपे बदैल गेल। मुलाइम माटि बाउल भऽ गेल। गाछ-बिरीछक जगह कास-पटेर, झौआ

लऽ लेलक। अपन पुश्तैनी गाम बुझि पुन: लोक सभ आबए लगल। ने केकरो जमीनक सबूत, खतियान-दस्तावेज इत्यादि रहलै आ ने जमीनक ठर-ठेकान। मुदा गाम तँ हेतइ। जहिना अदौमे माने साबीकमे जंगल-झाड़ तोड़ि लोक बसो-बास आ उपजाउ भूमि बनौलक आ रेन्ट फिक्स कऽ सरकारो जमीनक अधिकार देलकै, तहिना बनौल गाम बँसपुरा छी।

जहिना कहियो बँसपुरा पानिसँ दहा गेल छल तहिना पानिक अभाव गाममे भऽ गेल। ने एकोटा पोखैर-इनार रहल आ ने बाढ़िक पानि अबैत। पोखैर-इनार खुनब छोड़ि लोक कलसँ पानिक काज चलबए लगल। बर्खा पानिसँ खेती हुअ लगलै। चापी जमीनकेँ बान्हि-बान्हि लोक पोखैरोक सेहन्ता मेटबए लगल। जइमे माछ-मखान, सिंगहार सेहो होइए।

ओही बँसपुरामे आइ दिवालियो आ कालियो पूजाक उत्साह लोकक रग-रगमे दौग रहल अछि। आन-आन गामसँ अबैबला देखनिहार-ले, अपन सीमा भरिक चारू भागमे जेते टुटान-कटान छेलै सभकेँ भरि-भरि कऽ गौंआँ-सभ सहीट बना देलक। जेतए केतौ बोन-झार छेलै सेहो सभ काटि-खोंटि साफ केलक। ओना, सरकारो दिससँ बान्ह-सड़कपर माटि पड़ैत मुदा दूधक डाढ़ी जकाँ पड़ने बरसातमे भँसि जाइत। जइसँ जहिनाक तहिना। मुदा ऐ बेर गौंआँ अपन सम्पैत बुझि नीक जकाँ मरम्मत केलक। खाली बान्हे-सड़कटा धरि नहि, गामक जेते पानि पीबैक साधन अछि सबहक मरम्मत सेहो केलक। ओना, बैसाख-जेठ जकाँ लोक थोड़े पानि पीत मुदा तैयो पानि तँ पीबे करत। गाम-ले सभसँ आश्चर्य ई भेल जे एकाएक सभ अपन जिम्मा केना बुझलक।

केवल पानियेँक प्रबंधटा नै पाहुन-परकसँ लऽ कऽ हराएल-भौथिआएल देखनिहार-ले सेहो रहैक बेवस्था केलक। जेकरा दुआर-दरबज्जा छै ओकर तँ कोनो बाते नहि, जेकरा नहियोँ छै, ओहो सभ सभ जोगार केलक। मोटका प्लास्टिक आनि-आनि घरे जकाँ बना लेलक। सबहक मनमे गदगदी जे आबह केते पाहुन-परक अबैए। सुतैले मोथीक बिछान सेहो बेसीए कऽ कीनि-कीनि रखि लेलक। अखन ने अनगौंआँ-ले कीनलक मुदा पूजाक पछाइत तँ अपने सूतबो करत आ अन्नो-पानि सुखौत। ओना, जे मेला देखए औत ओ सूतत आकि मेला देखत। मुदा जे

भरि राति मेला देखत ओ तँ दिनोमे सूतबे करत।

रघुनाथोकेँ धैनवाद दिऐ जे खाइ-पीबैक सभ समान- चाउर, दालि, तरकारीसँ लऽ कऽ जारैन-काठी धरिक तेहेन कारोबार पसारि लेलक जे केतबो लोक कीनत-बेसाहत तैयो ने सठतै। एक्के मेलाक कमाइमे ओहो धनिक भऽ जाएत। पूजियो तँ वएह ने लगौने अछि। तेहेन ओकर बोहुक बोली मीठ छै जे एक्कोटा गहिंकीकेँ घुमए देत। सदिखन दोकानमे भीड़ लगले रहै छइ। कहबियो छै ने, 'जेकरा भगवान दइ छथिन छप्पर फारि कऽ दइ छथिन।' भने दोकान घरेपर केने अछि। जँ मेलामे केने रहैत तँ गौंआँकेँ समाजकेँ घीनेबे करैत, किएक तँ पाहुन-परकक सोझमे केना लोक चाउर-दालि बेसाहत।

मुदा आश्चर्य भेल। बाप रे! गाममे एते पाहुन-परक केना उनैट कऽ चलि आएल जे बुझि पड़ैत जेना केकरो कोनो अपना काजे नै छइ। तहूमे मरदक तिगुना स्त्रीगण आबि गेल। स्त्रीगणोमे बेसी ओहन जे पनरह-सँ-पच्चीस बर्खक अछि। सेहो एक मेलक आकि चालि-ढालिक रहैत तब ने, चारि-पाँच मेलक छइ। केना ने गामक हवामे खतरनाक कीड़ा फड़त। बम्बैया सभ जे अछि, ओ सिरिफ छौड़े-मारड़िटाकेँ थोड़े धरत, बुढ़ो-बुढ़ानुसकेँ धरबे करत। जहिना कोनो अनठिया चिड़ैकेँ गाममे एलासँ गामक सभ देखए जाइत तहिना ने बम्बैइयो चिड़ैकेँ देखत। मुदा नहियोँ देखत तँ अनुचिते हएत किने। आखिर ओहो ओहन रूप किए बनौने अछि। लोके देखैले किने। जँ से नइ मनमे रहितै तँ एहेन पाँखि बनबैक काज कोन छेलइ। मनुक्ख तँ मनुक्ख छी किने? तइले एहेन हवा-मिठाइ बनैक कोन जरूरत छइ। तहूमे जखन बनि गेल आ लोक नै देखै तँ बनैक मोले की? मोल तँ तखने हेतै किने जखन लोक ओकरा निहारि-निहारि तर-ऊपर देखत। तँए की ओकर चरौर गाम-देहातमे नै छइ? जरूर छइ। बम्बइये कलाकार सभ ने गामोक लोककेँ सिनेमाक माध्यमसँ सिखौलकै हेन। लोकक मनो अजीब छइ। जँ कनियोँ ऊपर उड़त तँ बुझि पड़ै छै जे जमीनक सभ किछु हम देखै छी मुदा हमरा कियो देखबे ने करैए! तहिना ने जमीनो परहक लोककेँ बुझि पड़ै छइ। मुदा भ्रम तँ दुनूकेँ छइ। ऊपर उड़निहार जँ जमीनक ऊपरका भाग देखैए तँ जमीनो परहक ने ओकर

निचला भाग देखैए।

चारि बजैत-बजैत मेला देखनिहारक भीड़ काली-स्थानमे उमड़ल। ओना, बुढ़-बुढ़ानुस अपन-अपन घर-अँगनाक ओरियानमे रहैथ। सिरपर सूर्यास्त होइते दीप जरौनाइसँ लऽ कऽ ऊक फेरनाइ सबहक सिरपर रहैन। मुदा आन गामसँ आएल लोककेँ कोन काज छैन, ओ तँ मेले देखैले आएल छैथ। सभसँ खूबी तँ ई अछि जे मेला देखनिहारे मेला देखैक वस्तु बनि गेल अछि। पूजा समितिक सदस्यक ऊपर जवाबदेही रहने सभ जी-जानसँ निगरानीक संग-संग बेवस्थामे जुटल। सौंसे मेला पी-पाह होइत। ओना, पूजाक प्रक्रिया निशाँ रातिमे शुरू हएत मुदा ओरियान तँ पहिनहिसँ करए पड़त। एहेन नै ने जे एक दिस पूजा शुरू हएत आ दोसर दिस समान जुटले ने रहत। पूजा काल जइ वस्तुक जरूरत हेतै ओ तखन बेवस्था करत। तँए पुजेगरियो आ पुरोहितो अपन सभ वस्तु-पुरजीसँ मिला-मिला सैंत-सैंत रखि रहल छला।

ओना, मेलाक आनन्द तँ तखन होइ छै जखन पूजा शुरू होइए। नाचो-तमाशा तँ तखनेसँ ने शुरू होइ छइ। मुदा तैयो सोलहन्नी नै तँ अदहो-छिदहो मेलाक आकर्षण तँ बढ़िए गेल छइ। सभसँ अजीब तँ ई भऽ गेल अछि जे दर्शक गजपट भऽ गेल अछि। तेहेन ने बजारू रूप बनि गेल अछि जे लड़का-लड़कीक भेदे मेटा गेल छइ। चश्मा खोलि-खोलि बुढ़ो-पुरान सभ आँखि मलि-मलि देखैत जे ई छौड़ा छी आकि छौड़ी। मुदा तैयो आँखि ठीकसँ काजे नै कऽ रहल छैन। सभ अपन-अपन धुइनमे मस्त। तैबीच ‘फटाक’-‘फटाक’क अवाज हुअ लगलै।

फटाक-फटाकक अवाज सुनि सबहक कान ठाढ़ भेल। जे जेतै रहै ओ ओतैसँ अवाज अकानए लगल। मुदा दोकान-दौड़ी तइ ढंगसँ सजल रहै जे सोझहा-सोझही अवाज निकलबे नै करैत रहइ। लगमे जे रहै ओ तँ अवाजो सुनै आ मारियो होइत देखइ। किछु लोक बाहरो दिस भगै आ किछु लोक दौग-दौग एबो करइ। उत्तर दिससँ देवन आ पच्छिमसँ मंगल सेहो दौड़ल आबि भीड़केँ चीरैत आगू पहुँचला। आगू पहुँचते देखलैन जे बीस-पच्चीस बर्खक दूटा छौड़ा चेस्टरक दोकानक आगूमे थापर-मुक्का कऽ रहल अछि। फाँटि देखि देवनो आ मंगलो सहैम गेला।

तैबीच जोगिन्दर दौड़ल आबि दुनू हाथ धुमबैत, दुनू छौड़ाकेँ गट्टा पकैड़ मारि छोड़ौलक। हल्लो शान्त भेल। एकटा छौड़ाकेँ देवन पुछलखिन-

“बौआ, अखन पूजा-पाठक समय छै, किए मारि केलह?”

मुदा जइ छौड़ाकेँ देवन पुछलखिन ओ किछु विशेष मारि खेने रहए, तँए जाबत किछु बजै-बजै तइसँ पहिनहि दोसर बजए लगल, मुदा ओइ छौड़ाकेँ चोहटैत जोगिन्दर बाजल-

“तूँ चुप रहऽ। पहिने जेकरा पुछलिऐ से बाजत।”

मुदा जोगिन्दरक बातक असर एक्को पाइ ओइ छौड़ापर नै भेलइ। दुनू गामक पाहुन। तँए बिकट संकट समितिक सदस्यक बीच भऽ गेल। विचित्र स्थितिमे सभ पड़ि गेला। अधिकतर लड़को आ लड़कियो परदेसीए, तँए मारिक डर केकरो हेबे ने करैत। लड़की सभ जोर दैत बाजल-

“ब्रेशियरक दोकानपर लड़का सभकेँ अबैक कोन खगता छइ। ई तँ स्त्रीगणक सौदा छी?”

मुदा लड़को सभ लड़कीक बात मानैले तैयार नहि। तेसर छौड़ा बाजल-

“लड़कीक उपयोगक वस्तु छी एकर माने ई नै ने जे एकर जरूरत लड़का सभकेँ नै छइ।”

“लड़काकेँ की जरूरत छइ?” एकटा लड़की पुछि देलकै।

बाजल-

“अपनो परिवार छै आ हितो-अपेक्षित तँ छैहे।”

लड़का-लड़कीक बीचक गप, गजपट होइत देखि देवन कहलखिन-

“अखन सभ शान्त हौउ। मेलाक पछाइत एकर निबटारा हएत। शान्तिसँ सभ मेला देखू।”

सूर्यास्तक समय। सुरूज तँ पूर्णरूपेण नै डुमल मुदा निच्चाँ उतैर गेलासँ लोकक आँखिसँ ओझल भऽ गेल। गामक धियो-पुतो आ चेतनो स्त्रीगण फुलडालीमे दियारी, सलाइ, अगरबत्ती आ खढ़क ऊक लऽ कऽ

गामक जेते देवस्थान अछि, सभ दिस विदा भेल। जेना धरोहि लगि गेल। कियो डिहबार स्थान दिस जाइत तँ कियो महादेव मन्दिर दिस। तहिना कियो धर्मराजक गहवर दिस तँ कियो हनुमानजीक स्थान दिस।

गाममे पाँचेटा पुरना देवस्थान। छठम, काली स्थान बनबे कएल। ओना, ठकुरवारी पहिने बेकतीगत छल मुदा महंथजीक मुइलापर ओहो दसगरदे भऽ गेल। सभ स्थानमे दीप जरा, धुप दऽ सभ अपन-अपन आँगन आबि घर-आँगनमे दीप जरबैत माल-जालक थैर, इनार आ कलपर सेहो जरौलक। किछु गोरे कुम्हारक बनौल माटिक डिबिया तँ किछु गोरे दबाइ पिलहा शीशी सबहक डिबिया बना जरौलक। सौंसे गाम इजोतसँ जगमगा गेल। काली स्थानक चारू जेनरेटर चलए लगल। जइसँ अन्हरिया रहितो गाम दिने जकाँ भऽ गेल। ओना, दिनमे मेघ जेते ऊपर रहैए, रातिमे अन्हार दुआरे तेते निच्चाँ उतरल बुझाइए।

दिवाली पाबैनसँ गाम निचेन भऽ गेल। स्त्रीगण सभ भानस-भात करैमे लगि गेली। समय पाबि पुरुख सभ मेले दिस टहैल गेला। मेलाक आकर्षण देखि किनको घरपर अबैक मने नै होइत रहैन। मुदा भरि राति तँ नाच-तमाशा चलिते रहत, तँए बिना खेने-पीने रहबो कठिन बुझि अपन-अपन घर-अँगनाक रस्ता धेलैन। काली- मण्डपमे पुजेगरी पूजाक ओरियानमे व्यस्त छला।

मुजफ्फरपुरक जेहने नाटक तेहने मंचो बनल। एहेन मंच, आइ धरि ऐ इलाकाक लोक नै देखने रहैथ। जेहने फइल स्टेज तेहने सुन्दर-सुन्दर रंगीन परदो लगौल गेल रहइ। तेहने ऊँचगरो। केतबो देखनिहार रहत तैयो देखबे करत। अजीब ढंगसँ बिजलियो लगौल गेल। बजोक तेहने बेवस्था। मुजफ्फरपुरक मंचसँ कनियोँ उन्नैस वृन्दावनक रासक नहि। मुदा दुनूमे अन्तर साफ-साफ बुझि पड़ैत। जेहने आधुनिकताक प्रदर्शन मुजफ्फरपुरक स्टेज करैत, तेहने प्राचीनताक प्रदर्शन वृन्दावनक मंचसँ होइत। कौव्वालीक मंच तँ ओते लहटगर नै बुझि पड़ैत मुदा मेल-फिमेलक दुनू स्टेज सटल रहने अपन आकर्षण बढ़ौने। महिंसोंथाक मलिनियाँ नाचक मंच सभसँ दब। मात्र चारि-पाँचटा चौकी निच्चाँमे जोड़ने आ चारिटा खुट्टा गाड़ि ऊपरमे आल रंगक चनवा आ एकटा परदा लगौने

अछि। मंच दब रहितो मलिनियाँ नाचक कलाकार सबहक मनमे विशेष उत्साह, जे सभकेँ उखारि देब। ओकरा सबहक मन गदगदाएल ऐ दुआरे रहै जे छुच्छे टीप-टापसँ काज चलै छइ। जे मौलिकता हमरा कलाकारमे अछि से अनकामे नै छइ। संगे जेते देखनिहार हमर अछि, ओते दोसराक नै छइ।

जहिना बजारमे अनेको दोकान रहितो सोना-चानी कीनिनिहार, सोने-चानीक दोकानपर पहुँचैए, किताब कीनिनिहार किताबे दोकानपर पहुँचैए, तहिना ने नाचो-तमाशाक छइ।

नअ बजैत-बजैत मंच सबहक आगू देखनिहारक ठट्ठ पड़ए लगल। केना ने पड़ैत? लगसँ देखब आ दूरसँ देखबमे अन्तर होइते छै किने। मुदा समितिक सदस्य सभ विचारि नेने रहए जे आगूमे अनगौंआँकेँ बैसाएब। गौंआँ तँ ठाढ़ो-ठाढ़ पाछुओसँ देखि सकैए। तहूमे अनगौंआँकेँ कोनो ठीके नै अछि जे सभ दिन देखए एबे करत। मुदा गौंआँक तँ अपन मेला छिऐ तँए एबे करत।

कलाकार सभ मेक-अप करबो ने केने रहए आकि देखनिहार सभ पिक्की मारब शुरू केलक। केना नै मारैत? लोक देखैले आएल आकि बैसैले। कमसँ कम बजोबला सभ तँ मंचपर आबि सम बान्हऽ। समो बन्हैमे एकाध घन्टा लगबे ने करतै। पैसा लऽ कऽ आएल अछि कि कोनो मंगनियेँ आएल अछि जे समय ससरल जाइ छै आ अखन धरि स्टेज खाली रखने अछि। जनसेवा दलक सदस्य सभ कखनो मंचपर जा कऽ शान्त करैत तँ कखनो मर्द-स्त्रीगणक गजपट भीड़केँ सुढ़ियबैत।

चारू मंच बाजाक अवाजसँ गनगनाए लगल। देखनिहारोक मन बाजाक धूनमे शरबत बनए लगल। कियो मने-मन गुनगुनाए लगल तँ कियो हाथक ओंगरीसँ पोनोपर आ कियो-कियो ठेहुनोपर ताल मिलबए लगल।

पूबसँ पुरबा हवाक संग एक चिड़की मेघ उठल। हवाकेँ उठिते देखनिहारक औल-बौल मन शान्त हुअ लगल। धीरे-धीरे हवो तेज होइत गेल। करिया मेघ सेहो नमहर हुअ लगल। एकाएकी तरेगन डुमए लगल। जेना-जेना वादल पसरैत गेल, तेना-तेना हवो तेज हुअ लगल। काली-

मण्डपमे पुजेगरी घड़ी देखि-देखि पूजाक प्रक्रियाकेँ आगू बढ़बए लगला। माए-बहिन गीत शुरू केलैन। जोरसँ मेघ बोली देलक। हवो बिहाड़िक रूप पकड़ए लगल। बुन्दा-बुन्दी पानि पड़ए लगल।

मुदा पानिक शंका केकरो मनमे नहि। किएक तँ रौदियाह समय रहने सभ निश्चिन्त जे ऐ बेर मेघमे पानियेँ नै छै जे बरिसत। तहूमे जँ शुभ काजमे बुन्दा-बुन्दी हुअए तँ ओ आरो शुभ छी। तँए सबहक मन खुशी। मुदा पानिक बूनसँ मंचक आगूमे बैसल देखनिहार एका-एकी उठए लगल। तरतरा कऽ बर्खा शुरू भेल। बिजलोका सेहो तड़ाक-तड़ाक छिटकए लगल। जेते बिजलोका छिटकै तेते मेघो गरजए लगल। गामक लोक घर दिसक रस्ता धेलक।

मुदा अनगौंआँ असमंजसमे पड़ि गेल जे आब भीजबे करब। मुदा बिहाड़ि तँ जान नै छोड़त। हारि कऽ अनगौंआँ स्टेजक ऊपरो आ तरोमे पहुँच पानिसँ बँचैक गर अँटबए लगल। इंजन बिगड़ै दुआरे जेनरेटरबला जेनरेटर बन्न कऽ देलक। सौंसे मेला अन्हार पसैर गेल। जहिना पानि तहिना बिहाड़ि अपन भीमकाय रूप बना नाचए लगल।

सौंसे मेला 'साहोर-साहोर'क अवाज हुअ लगल। मुदा सुनैले ने बिहाड़ि तैयार आ ने बर्खा। बिहारि तँ उड़ि कऽ पड़ा गेल मुदा मुसलाधार बर्खा सवा-घन्टा धरि बरिसते रहल। दोकान सबहक छप्पर उड़ने सभ समान तीत-भीज गेल। उड़बो कएल। केकरा के देखत। सभ अपने जान बँचबै पाछू पड़ल। तैकाल एकटा स्टेज दिससँ कनै-कुहरैक अवाज उठल। तेते लोक स्टेजक ऊपर चढ़ि गेल रहै जे बल्ले सभ टुटि गेल, खसि पड़ल! स्टेजक निच्चाँमे जे लोक सभ बैसल रहइ ओकरा ऊपरेमे। केकरा की भेलै से तँ अन्हारमे देखियो ने पड़इ, मुदा कानै-कुहरैक अवाज निकलए लगल। छबेटा सिपाही ड्यूटीमे रहए। वएह वेचारा की करत। केकरा दोख लगाएत। पूजा समितिक सदस्य आ सिपाही मिलि गर लगौलक। देवन आ जोगिन्दर राती-राती पड़ा गेल।

खेला-पीला पछाइत सजना पिताकेँ कहलक- "बाउ, पाँच दिनक मेला छइ। एकदिना रहैत तखन ने देखैक धड़फडियो रहैत से तँ नै अछि। सोल्होअना घर-आँगन छोड़ि जाएबो उचित नहि। किएक तँ जेते लोक

मेला देखए आएत ओ सभ की कोनो मेलेटा देखए औत। कियो छौड़ा-छौड़ीक खेल करए औत, तँ कियो चोरी-चपाटी करए औत। के की करए औत से के कहलक। तँए अखन हम दुनू परानी जाइ छी आ अधरतियामे आबि तोरा उठा देबह, तखन तूँ जैहऽ।"

बेटाक बात दुनियालालकेँ जँचल। मने-मन मानि लेलक। बेटो आ पतियोक बात सुनि तेतरी बाजल-

"राति-विरातिकेँ देखए हम नै जाएब। साँझू पहरकेँ जाएब। काली-महरानीकेँ साँझो दऽ देबैन आ गोड़ो लागि लेबैन।"

माइक बात सुनि सजना किछु बाजल नहि। मेला देखए विदा भेल। किछु कालक पछाइत सजनाक पत्नी–सितिया– सेहो स्त्रीगणक संग गेल। पानि-बिहाड़ि उठिते सजना भागल। मुदा तैयो घर लग अबैत-अबैत नीक जकाँ भीज गेल। अँगनाक पानि जे निकलैत रहै तैठाम डेढ़िया लग आबि पिछैड़ कऽ खसि पड़ल। सौंसे देह थालो लगि गेलै आ ठेहुनमे चोटो लगलै। मुदा हूबापर उठि कऽ पानिमे थाल धोइ आँगन आएल।

अखन धरि ने दुनियालाल सुतल छेलै आ ने तेतरी। किएक तँ हवा देखि तेतरी चूल्हि आ मालक घरक घूरक आगि मिझा ओछाइनपर आएले रहए। हवाक रूखि देखि दुनियालाल पत्नीकेँ कहलक-

"तेहेन हवा अछि जे भरिसक घरो ने ठाढ़ रहत। तहूमे एक्कोटा खुट्टा लकड़ीबला नै अछि। सभटा बाँसक अछि। बड़ गलती भेल जे चारिये-टा खुट्टा बदललौं। सभ खुट्टाक जड़ि सड़ि गेल अछि।"

तैबीच पछुऐतक तीनू पुरना खुट्टा कड़कड़ा कऽ टुटि गेलइ, खाली नवका खुट्टा नै टुटलै। उत्तरबरिया-पुबरिया कोण सेहो लटैक गेलइ। मुदा खसलै नहि। जाड़सँ थरथराइत सजना ओसारपर आबि माएकेँ कहलक-

"माए, भीज गेलौं। जाड़ो होइए। कनी लूँगी आ चद्दैर निकालि दे?"

घरेसँ माए कहलकै- "भीजलेहे धोतीक खूटक पानि गाड़ि सौंसे देह पोछि ले। लूँगी आ चद्दैर दइ छियौ।"

हाथक ओंगरी सजनाक कठुआएल। मुदा तैयो कहुना-कहुना कऽ धोतीक पानि गाड़ि, अँगा निकालि सौंसे देह पोछलक। तेतरी डिबिया

नेसए लगल। मुदा सलाइ सिमैस गेने बरबे ने कएल। अन्हारेमे हँथोरि-हँथोरि लुंगियो आ चद्दैरियो निकालि कऽ दैत बाजल- “घूरो कऽ दैतिऐ से सलाइए ने बरैए। तोंही टा एलँह आ कनियाँ?”

“कहाँ केतौ देखलिऐ। पानिक दुआरे केतौ अँटैक गेल हएत।”

दुनू माय-पूत गप-सप्प करिते रहए आकि रूपलालक घर कड़कड़ा कऽ खसल। रूपलाल दुनियालालक छोट भाए। रूपलाल घरेमे रहए। दू-चारी घर। घरक दुनू चारक ओलती माटि पकैड़ लेलक आ दुनूक मठौठ ठाढ़े रहलै। पजराक दुनू टाट टुटि कऽ लीब गेल, दुनू भाग घेरने रहल। ओइ बीचमे दुबकल रूपलालक जान जीवन-मृत्युक बीच अवग्रहमे पड़ल रहइ। खूब जोर-जोरसँ हल्ला करए लगल, मुदा झाँट-पानिक दुआरे कियो सुनबे ने करइ। एक तँ झाँट-पानि, दोसर बान्हल-घेराएल अवाज सुनबो केना करैत।

किछु कालक पछाइत मुनेसरी, जे दोसर घरमे रहए, सुनलक। अवाज सुनिते मुनेसरी केबाड़ खोलि ओसारपर आएल कि बिजलोकाक इजोतमे घर खसल देखलक। खसल घर देखिते बेटोकेँ उठौलक। दुनू गोरे जोर-जोरसँ हल्ला करए लगल। मुनेसरीक अवाज सुनि दुनियालाल सजनाकेँ कहलक- “रौ सजना, रूपललबाक घर खसि पड़लै। दौग कऽ जो, देखही जे कियो दबेबो केलै?”

जाड़सँ कठुआएल सजनाकेँ बर्खामे निकलैत अबूह लगइ। मुदा की करैत। मनमे द्वन्द्व सेहो उठि गेलइ। एक दिस पित्तीक मोह, आ दोसर दिस पितियाइनिक बेवहारसँ कुपित मन। मुदा एहेन समयमे तँ जानक प्रश्न अछि। दोस्ती-दुश्मनी तँ जीबैतमे रहै छइ। मन मसोसि कऽ सजना लूँगीक फाँड़ बान्हि निकलल। हवो कमि गेल, मुदा बर्खा होइते रहइ। पाछूसँ दुनियालाल आ तेतरियो गेल।

रूपलालक दछिनबरिया घर खसल रहइ। सजना पितियाइनकेँ कहलक- “काकी, एकटा इजोत आ हँसुआ नेने आउ। जाबे नीक-नाहाँति देखि नै लेब ताबे केना किछु करब।”

हाँसू निकालि कऽ दैत पितियाइन बाजल- “बौआ, चोरबत्ती तँ

पित्तीए लग अछि।"

हाँसू लैत सजना जोरसँ बाजल- "कक्का हौ, कनी टॉर्चक इजोत दहक?"

घरक तरसँ रूपलाल बाजल- "चोरबत्ती तँ सिरमे लग रखने छेलौं। ठाठक तरमे पड़ि गेल अछि।"

"चोटो-तोटो लगलह?"

"नै बौआ।"

"अच्छा, तूँ चिन्ता नै करह। हवो कम भेल आ बुन्नियोँ पतड़ाएल जाइए।"

सजनाकेँ बुझबैत दुनियालाल कहलक- "बौआ, धड़फड़ नै करह।"

हाथक इशारा दैत भावौकेँ- "कनियाँ डिबिया नेसू।"

मुनेसरी डिबिया नेसलक। इजोत होइते दुनियाँ लालो आ सजनोँ टाट हटबैक गर अँटबए लगल। ओलतीक खुट्टा जे टुटि कऽ कात भऽ गेल रहै, ओकरा टाट देने घोसियबैत कहलक-

"कक्का, ऐ दुनू टोनकेँ पकैड़ दुनू ठाठमे सोंगर लगा दहक। जइसँ ठाठ एमहर-ओमहर नै डोलतह।"

एकाएकी दुनू सोंगर दुनू ठाठमे रूपलाल लगौलक। सोंगर लगिते सबहक मनमे खुशी एलइ। सजनाकेँ दुनियालाल कहलक-

"सौंसे टाट हटबैक जरूरत अखन नै छौ। दोग जकाँ बना पहिने आदमीकेँ बँचा, तखन बुझल जेतइ।"

हाँसूसँ तीन-चारिटा टाटक बनहन काटि सजना दोग जकाँ बनौलक। दोग बनिते रूपलाल बाजल-

"बौआ, निकलै-जोकर भऽ गेल। तूँ दुनू हाथे दुनू ठाठकेँ पकड़ने रहह।"

घरसँ निकैलते दुनियालालक पएर पकैड़ रूपलाल कनैत बाजल-

"भैया, अपन समांग दुनियाँमे सभसँ पैघ होइ छइ। अखन जे तूँ दुनू बापूत नै रहितह तँ घरेमे मरि जैतौं।"

भरोष दैत दुनियालाल कहलक- “एना ढहलेल जकाँ किए बजै छेँ। अपन-बीरान लोक अपने बनबैए। तूँ तँ जानियेँ कऽ छोट भाए छँह। समाज बड़ीटा होइ छइ। गरीब लोक कोनो सुखे जीबैए। तखन तँ जाबे दुनियाँक दाना-पानी लिखल रहै छै ताबे काहियो काटि कऽ जीबे करैए। मन थीर कर। जे होइ कऽ छेलै से भेलइ। थरथर किए कँपै छेँ?”

मुदा दुनियालालक बातक असर दुनू परानी रूपलालपर नहियेँ जकाँ पड़ल। भीतरसँ करेज डोलैत रहइ। मनमे होइ जे फेर ने घरक तरमे दबा जाइ। आँगन डेरौन लागए लगलै। जेना किछु झपटैत होइ तहिना बुझि पड़इ। मिरमिरा कऽ रूपलाल बाजल-

“भैया, होइए जे सुति रहब तँ फेर दोसरो घर खसि पड़त।”

दुनियालालक मनमे एलै जे भरिसक डरे एना होइ छइ। बोल-भरोस दैत कहलकै-

“घर तँ गिरमा-गिरिये पड़लौ। आब कि दोहरा कऽ खसतौ। जे घर बँचल छौ ओकर भीत मजगूत छै, ओ थोड़े खसत। तहूमे झाँटो-पानि बन्न भेल। नै तँ चल हमरे लग सुतिहेँ। कनियाकेँ पुछि लहुन जे घरमे सूतब आकि अहूँकेँ डर होइए। जँ डर होइ छैन तँ सजने माए लग सुति रहती।”

दुनियालालक विचार सुनि रूपलाल बाजल-

“भैया, सगरे देह झोल-झाल आ थाल-कादो लगि गेल अछि। ओकरा पहिने धुअ पड़त।”

ओना, सभकेँ थाल-कोदो लगल रहइ। सभ कियो कलपर जा सगरे देह धोलक। कलपर सँ आबि मुनेसरी घर बन्न केलक। दुनू माय-पूत तेतरीक संग आ रूपलाल दुनियालालक संग धेलक। पुबरिया घरमे दुनियालाल भुँइयेँमे ओछाइन ओछौने रहए। चौकी नै रहइ। ओछाइनपर बैस सिरमा तरसँ चुनौटी निकालि रूपलालकेँ दैत बाजल-

“पहिने तमाकुल चुना।”

सकरीकट तमाकुलक डाँट बिछैत रूपलाल बाजल- “भैया, आइ तँ मरि गेल रहितौं। जेना हड़हड़ा कऽ घर खसल तेना जँ ओछाइन छोड़ि सतरकी नै करितौं तँ चाहे मरि जैतौं नै तँ अंग-भंग भऽ गेल रहितए। मुदा

माए-बापक धर्मे कुशप-कलेप नै लगल। नै तँ दुनियाँ अन्हार भऽ जाइत।”

रूपलालक विचारकेँ अँकैत दुनियालाल बाजल-

“ई देहे तँ कुम्हारक बनौल काँच बरतन जकाँ अछि। जहिना कँचका बरतन एकरत्ती धक्का लगने फुटि जाइए, तहिना ने देहो छी। मुदा से लोक बिसैर दँतिया कऽ पकड़ने रहैए। जँ ई बात सभ बुझि जाए जे जिनगीक कोनो ठेकान नै अछि, तखन अनेरे किए झूठो-फूस बाजत आ अधला-सँ-अधला काजो करत। तँए जेतबे दिन जीबै छी ओतबे दिन इमानदारीसँ कमा कऽ पेटो भरी आ जहाँ धरि भऽ सकए, अनको उपकार करिऐ। उपकारे ने धर्मो छी आ मुइला पछातिक जिनगियो जिनगी छी।”

मुँह बाबि रूपलाल पुछलक-

“भैया, फेरोसँ एक बेर कहक। ठीकसँ नै बुझलौं।”

रूपलालक प्रश्न सुनि दुनियालाल मने-मन सोचए लगल जे भरिसक एकरा ज्ञानक उदए भेल जा रहल छइ। ओना, कोनो बेर पड़लापर अहिना लोकक मनमे नीक विचार जगै छै, लगले रूकियो जाइ छै...।

रूपलालकेँ बुझबैत दुनियालाल बाजल-

“बौआ, अगर जँ लोक ई बुझि जाए जे ऐ देहक कोनो ठेकान नै अछि। कखन छी कखन नै छी, तइले केकरो बेजए किए करबै। आ ओइ हिसाबसे अपन चालि सुधारि लिअए तखन केकरो अधला हेतइ। एक तँ ओहिना लोक समस्या सभसँ रेजानिस-रेजानिस रहैए, तैपर सदिकाल लोको किछु-ने-किछु गड़बड़ करिते रहै छइ। केना कियो कखनो चैनसँ रहत। तोंही कह जे केहेन बढ़ियाँ दुनू भाँइ जखन जड़मे छेलौं तखन तोरा कोनो भार छेलौ? खाली संग मिलि कमाइ छेलँह। आकि नहि? तखन भीने किए भेलँह। जखन भीन भेलँह तखन जँ किछु कहितियौ तँ कनियाँ कहिथुन जे भैया घर फुटबै छैथ। तहूले झगड़ा होइतौ। तइमे नीक ने जे भरमे-सरम मुँह बन्न केने रहलौं। तहूँ बात थोड़े सुनितैँ। जे कनियाँ कहिथुन सएह मानितैँ। ई की कोनो हमरे-तोरेमे होइए से तँ नहि, सभकेँ यएह गति छइ।”

पछबरिया घरमे तेतरी सुतैत। पुबरिया झटक भेने सौंसे ओसारो आ

मुँह सोझे घरोमे पच-पच करैत। मुदा तैयो तेतरी चूल्हिक छाउर छीट घरकेँ रूख बनौलक। जेठ रहितो वेचारी मुँह-सच्च मुदा छोट रहितो मुनेसरी मुँहजोर। सदिखन अपन बात दोसरपर चढ़ाइए कऽ रखैत। जइसँ जखन कखनो दुनू दियादिनीमे कोनो गप होइ तँ मुनेसरी चोहैट लइ। मुदा आइ बिलमे जाइत साँप जकाँ मुनेसरीक मन सोझ भऽ गेल। जेना सभ ताउ मरि गेलइ। हत्याराक खूनमे ताधैर गरमी रहै छै जाधैर फाँसीपर नै लटकैए। मुदा जहिना फाँसीपर लटैकते सवितासँ सुरूजक उदए जकाँ ज्ञानक उदए होइए तहिना आइ मुनेसरियोकेँ भेल। तेतरियेक बिछानपर दुनू माय-पूत मुनेसरियो सुतल।

दुनियालालक बात सुनि रूपलाल गुम्म भऽ गेल। एक तँ दुनियालालक विचार रूपलालक मनकेँ झकझोड़ि देलकै, तैपर सँ गिरल घरक सोग सेहो दबनहि रहलै। कनी काल गुम्म रहि मुड़ी डोलबैत बाजल-

“हँ, ई तँ सत्ते कहलह भैया।”

अपन किरदानीपर पचताइत देखि दुनियालाल बाजल-

“आब तोंही कह जे जखन दुनू भाँइ एकठाम छेलौं तखन तोरा घरक कोनो भार छेलौ। जानियेँ कऽ तँ गरीब घरमे अपना सबहक जनम भेल अछि। केहेन बढ़ियाँ दुनू भाँइ संगे बोइन-बुत्ता करै छेलौं आ मिलानसँ रहै छेलौं। अपना केते खेते अछि। लऽ दऽ कऽ सात-सात कट्ठा बाधमे आ घराड़ी अछि। जेकरा बीघा-बीघे छै ओकरो हजार टा भूर सदिकाल फूटले रहै छै, जइसँ मन घोर-घोर भेल रहै छइ। जेकरा नै छै ओ तँ सहजे भूरेमे घोंसियाएल रहैए।”

दुनियालालक विचार सुनि रूपलालक मन केराक भालैर जकाँ डोलए लगलै। ढेरो प्रश्न मनमे उठए लगलै। बेवसीक स्वरमे बाजल-

“की नीक, की अधला से बुझबे ने करै छी। लोकक मुहेँ जे सुनै छी से मानि करै छी।”

रूपलालक हारल मन देखि दुनियालालक मन विचारक रस्तापर आबि अँटैक गेल। मनमे हुअ लगलै जे की कहिऐ। एक दिस भाइक ममता दबैत रहै आ दोसर दिस स्त्रीगणक झगड़ासँ मन अकच्छ छेलइ। बिना

किछु बजनहि, दयासँ भरल दुनियालालक आँखि रूपलालकेँ पढ़ए लगल...। पछबरिया घरमे दुनू दियादनी, एक वामा करे आ दोसर दहिना करे पड़ल छेली। बीचमे मुनेसरीक बेटा चीते पड़ल रहए। दुनूक मनकेँ पानि-बिहाड़िक घटना दबने छेलइ। जइसँ नीन निपत्ता रहइ। अनासुरती मुनेसरीकेँ नैहरक एकटा घटना मोन पड़लै। घटना मनमे अबिते बाजल-

“तेसराँ, हमरा नैहरमे एक गोरेक घर अहिना बिहाड़िमे खसि पड़लै। घरवारी घरेमे रहए। वेचाराकेँ चोटो खूम लगलै। डेनो टुटि गेलै आ कपारो फुटि गेलइ। मुदा रहए कपारक जोरगर जे मरल नहि। कपारक घा तँ छुटि गेलै मुदा डेन नै जुटलै। ओहिना लर-लर करइ। बड़ कष्ट वेचाराकेँ होइ छइ। अपना खेत-पथार नै रहने बोइन करै छेलइ, मुदा समांग खसने बोहुओ छोड़ि कऽ पड़ा गेलइ। हारि-थाकि कऽ वेचारा भीख मंगैए।”

मुनेसरीक कथा सुनि तेतरीक मनमे दया उपकल। दुनूक मन आरो डरा गेल। जहिना कठियारीसँ घुमै बेर सभ ‘राम-राम सत् है, सबका यही गति है’, बजैत आँगन अबैए, तहिना तेतरियोकेँ नैहरक घटना मोन पड़ल। बाजल-

“एक बेर हमरो नैहरमे बड़का बाढ़ि आएल रहइ। एहेन बाढ़ि कहियो ने देखने रहिऐ। जलखै बेरमे एक गोरे बजलै जे बाढ़ि अबै छै, रोटी पकबैत रही, माए घास करए गेल रहए, रोटी पकाएलो ने भेल आकि घर लग पानि चलि आएल। चूल्हि तरसँ उठि बान्हपर गेलौं आकि देखलिऐ जे चानी जकाँ बाढ़ि पीटने अबैए! धाँइ-धाँइ भीतघर सभ खसए लगलै। लूटना बाध गेल रहए। बाधेसँ दौड़ल आबि घर पैसल। चाउरक कोठीमे लत्तामे बान्हि कऽ रुपैआ रखने रहए, कोठीसँ जहाँ रुपैआ निकालए लगल आकि देहेपर कोठी खसि पड़लै। माटिक गोड़ा भीज कऽ ढील भऽ गेल रहइ। कोठीए तरमे लूटना पड़ि गेल! तरेसँ हल्ला करए लगल। जाबे लोक सभ अबै-अबै ताबे घरो खसि पड़ल। वेचारा तरेमे छटपटा कऽ मरि गेल!”

तेतरीक खिस्सा सुनि मुनेसरी आरो डरा गेल। दुनू दियादिनीक देह थर-थर काँपए लगलै। नीन आरो दूर चलि गेलइ। डरे दुनू बिछानेपर एक कड़सँ दोसर कड़ लगले-लगले उनटए-पुनटए लगल, कियो किछु बजैत नहि। थोड़े कालक पछाइत मुनेसरी बाजल-

"दीदी, हमरा डर होइए।"

मुनेसरीक बात सुनि तेतरियो समर्थन करैत बाजल-

"हँ हइ कनियाँ, हमरो डर होइए। चलह पुबरिये घर। जँ मरबो करब तँ सबतूर संगे मरब।"

कहि उठि कऽ बैस गेल। मुनेसरियो बेटाकेँ उठबए लगल। बेटो जगले रहै, फुड़फुड़ा कऽ उठल। बिछान समेट तेतरी पाँजमे लेलक आ मुनेसरी बेटाकेँ कन्हा-लगा पुबरिया ओसारपर पहुँचल। ओसारपर पहुँचते तेतरी जोरसँ बाजल-

"कनी घर खोलू?"

घरेसँ दुनियालाल पुछलक-

"किए, की भेल?"

"ओइ घरमे डर होइए। अही घरमे सभ सूतब।"

"ऐ घरमे हम दुनू भाँइ छी, तखन अहाँ दुनू गोरे केना सूतब?"

"बेर-विपैतमे ई सभ लोक नै बुझै छइ। पहिने घर खोलू।"

फटक खोलि रूपलाल अपन बिछान घुसकौलक। मोख लग डिबिया रखि मुनेसरी बिछान बिछौलक। तखने सिताहल नढ़िया जकाँ सजनाक स्त्री सेहो आँगन पहुँचली।

एकटा बिछानपर दुनू भाँइ दुनियालाल आ दोसर बिछानपर दुनू दियादनी तेतरी बच्चा संग सुतैक ओरियान केलक। दुनियालाल तँ सिरमापर माथ रखि पड़ि रहल मुदा बाँकी गोरे बैसले रहल। बच्चा सेहो सुति रहल। दुनू परानी रूपलालक मनसँ डर हटबे ने करइ। होइ जे फेर ने कहीं देहेपर घर खसि पड़ए।

एक बेर बड़का भुमकम भेल। भुमकम तँ अढ़ाइए-तीन मिनट रहलै मुदा घर-दुआर, गाछ-बिरीछकेँ तँ खसेबे केलक जे केते लोको दबा-दबा मरल। तीन दिन धरि रहि-रहि केते बेर धरती डोलल। तहिना होइ जे बड़का झाँट-बिहाड़ि ने चलि गेल, मुदा कहीं छोटका सभ ने फेर घुमि-घुमि आबए। कोन ठेकान, जँ छोटकेसँ बड़को चलि आबए। तँए दुनू गोरेक मन

डेराएल छेलइ। ओना, तेतरीक मन सुतैक होइ मुदा सोचए जे पुरुख बैसल रहत आ अपने केना सुति रहब। तहूमे डिबिया जरिते अछि, डिबियो केना मिझाएब? बेर-विपैतमे इजोते मदैतगार होइए। दुनियालालकेँ तमाकुल दैत रूपलाल कहलक- “भैया, आइ बुझि पड़ल जे अपन सहोदर केहेन होइ छइ?”

ओछाइनपर सँ उठि दुनियालाल आँगनमे थूक फेक मुस्की दैत उत्तर देलक- “तखन भीन किए भेलँह? तोंही कह जे अपना दुनू गोरे सहोदर भाए छी किने। जखन सहोदरमे मिलान नै रहत तखन आन तँ आने छी। मनुक्खमे एते बुधि होइ छै, तखन तँ ई गति छै जे भाए-भाएमे दुश्मनी भऽ जाइ छइ। अगर जँ अहिना सभ मनुक्खमे होइ तखन ओहन मनुक्खसँ उपकारक कोन आश। ऐसँ नीक तँ गाइए-बरद। जे दूधो दइए आ हरो बहैए।”

दुनियालालक विचार सुनि रूपलाल उठि कऽ आँगनमे थूक फेक कऽ आबि बाजल- “भैया, धरमागती बात कहै छिअ। दुरागमनक पछाइत जे विदागरी करबैले पठौने रहऽ, ओइ दिनक बात कहै छिअ। अपनो सासु आ टोलोक मौगी सभ आबि कऽ लगमे बैसल। अपना बुझि पड़ए जे जहिना वृन्दावनमे कृष्ण गोपी सबहक संग बैस कऽ गप-सप्प करै छला तहिना हमहूँ छी। एक-मुहरी सभ स्त्रीगण कहए लगल जे अहाँक भाए बड़ छनकट अछि। केतबो कमाएब तँ भाभन्स हुअ देत। अहाँ दुनू परानी कमाएब आ ओ कोसल करत। जखन हाथ-मुट्ठी गरमा जेतै तखन भीन कऽ देत। अखन दुनू परानी जुआन छी, कमाइ-खटाइ छी। अखन नै किछु बना लेब तँ जखन धिया-पुता हएत खरचा बढ़त, तखन कएल हएत। तँए नीक कहै छी जे अखने भीन भऽ जाउ। नै तँ पाछू पचताएब।”

रूपलालक बात सुनि दुनियालाल ठहाका मारि हँसल। हँसैत ओछाइनपर सँ उठि मुँहक तमाकुल आँगनमे फेक कऽ आबि बुझबैत बाजल-

“कियो जे तोरा किछु कहलकौ आ तूँ मानि गेलेँ से अपन बुधि केतए गेल छेलौ। तूँ नै देखै छेलही जे दुनू भाँइ संगे बोइन करैले जाइ छेलौं आ आँगनमे भौजाइ भरि दिन अँगना-घरक काज सम्हारि जारैन-काठीक

ओरियान करै छेलखुन। तैपर एकटा नाङैरक घास-भूसा, खुऔनाइ-पीऔनाइसँ लऽ कऽ आश्रमी भानस-भात कऽ बरतन-बासन धरि मँजै छेलखुन, से सभ अपना आँखिए नै देखै छेलही। तोंही कह जे सत् बात की छेलै आ मौगी सबहक कान भरने तूँ की बुझलीही!"

अपसोच कऽ मुड़ी डोला रूपलाल मिरमिराइत बाजल-

"हँ भैया, ई तँ ठीके कहै छह।"

"अपने आँखिसँ जे देखै छेलही से झूठ बुझि पड़लौ आ जे झूठ बात सुनलेँ ओकरा सत् मानि लेलही। एकरे कहै छै मौगयाही भाँज। तोरे जकाँ आनो-आन मौगयाही भाँजमे पड़ि कुल-खानदानक नाक-कान कटबैए। नैहरसँ सासुर जाइ काल जे मौगी सभ कानि-कानि बजैए से की कहै छै से बुझै छीही? ओ कहै छै जे जहिना बाप-माइक घराड़ीपर हम कनै छी, तहिना बाप-दादाक घराड़ीपर घरबलाकेँ कनाएब। अरे! एतबो ने बुझै छीही जे दुनियाँमे सभ कुछ मिलि सकैए मुदा सहोदर भाए नै मिलै छइ। भाइक खातिर लक्ष्मण स्त्री, परिवार आ समाज सभ छोड़ि देलखिन मुदा भाइक संग अन्तिम समय धरि रहलखिन। आइ तोरा के काज दइले एलौ। कनियोँ जँ हमरा मनमे पाप रहैत तँ तोरा घरेमे मरैले नै छोड़ि दैतियौ। नै तँ झीक-झाकि कऽ ठाठ देहेपर खसा दैतियौ। नइ मरितेँ मुदा हाथो-पएर तँ टुटबे कैरतौ।"

नमहर साँस छोड़ैत रूपलाल अपन सिमसल आँखिकेँ मिड़ैत बाजल- "भैया, आइ बुझि पड़ैए जे सभ ठकि लेलक!"

"कान पाथि कऽ सुनि-ले। जहिना मनुक्ख सभसँ पैघ जीव ऐ धरतीपर अछि, जे बड़का-बड़का चमत्कारी काजो करैए, तहिना छुतहरो अछि। देखबीही जे जेकरा कनी बुधि-अकील छै ओ सदिकाल बुड़िबक सबहक कमाइ ठकि-ठकि मौजसँ खाइए, खेबेटा नै करैए ओकर बोहु-बेटीक संग कुत्ता-बिलाइ जकाँ इज्जतो संग बेवहार करैए।"

"भैया, आइ बुझि पड़ैए जे हमर बाप मरल नै जीबते अछि।"

पिताक रूपमे अपनाकेँ पाबि दुनियालालक हृदय पसीज गेल। बाजल- "बौआ, जे समय बीत गेल ओ आब थोड़े घुमि कऽ औत। मुदा

जाबे जीबैत रहब, तैबीच जे समय अछि ओ तँ बँचल अछि। हमरा तूँ मोजर दे आकि नै दे मुदा अपन सीमा तँ हमहूँ बुझै छी किने। अपन कमाइ खाइ छी, अपने औरूदे जीबै छी। तइले दोसराक कोन आश। अपन काज दुसैबला नै करब। जँ केकरो नीक कएल नै हएत तँ अधले किए करबै। तोरा प्रति जे काज अछि सएह ने करब।"

"भैया, आब ओंघी पिपनीपर आबि गेल। रातियो बेसी भऽ गेल। तहूँ सूतह आ हमहूँ सुतै छी।"

मुनेसरीक उनटैत-पुनटैत मन थीर भइये ने पबैत। एक दिस अपन पैछला जिनगीक बाट टुटैत देखए, तँ दोसर दिस नव बाटक बोध नै रहने बोनाह बुझि पड़इ। मुदा दुनियालालक विचार सुनि झलफलाइत बाट जरूर देखि पड़ए लगलै, जइसँ मनमे किछु बदलाउ एलइ। जँ नैहरक स्त्रीगणक नीक सिखौल रहैत तँ नीक होइत, से तँ नै भेल..!

मोम जकाँ मुनेसरीक मन पीघलए लगल। मुदा किछु बजैक साहसे ने होइ। जहिना मालती फुलक सुगन्धसँ विषधर साँप लत्तीमे लटपटाइत चेतन शून्य भऽ जाइए, तहिना मुनेसरियोँक हुअ लगल। मने-मन गलती कबूल करैत तेतरीकेँ कहलक- "दीदी, ई सुतौथ जाँति दइ छिऐन।"

मुनेसरीक बातसँ जेना तेतरीकेँ खौंझ उठल, बाजल- "तोरा एक्को पाइ लाज-सरम नै छह, जे जइ घरमे पुरुख-पात छैथ तैठाम तूँ जँतबह। एक तँ भगवान विपैत देलैन जे सभ कियो एक घरमे सुतैले एलौं। डिबिया मिझा दहक जइसँ कनी परदा भऽ जाएत आ तहूँ सुति रहऽ।"

'डिबिया मिझाएब' सुनि मुनेसरीक मन तत्-मत् करए लगल जे इजोतमे तँ देखबो करै छी, अन्हारमे की हएत की नै से देखबो करब। मुदा तैयो उठि कऽ डिबिया मिझा कले-बल पड़ि रहल।

❑ शब्द संख्या: 5532

चारि : ख

कािल्हए, दिवालीसँ एक दिन पूर्व, ओठर होइत देखि अनुप काली पूजाक हकार दिअ गेल। बहिनोक सासुर, अपनो सासुर आ मात्रिको एक्के डोइरमे। कनी घुमौन रहितो सोचलक जे पहिने बहिन ऐठाम पहुँच हकारो दऽ देबै आ अबैयोले कहि देबइ। मुदा ओइठीन अँटकब नहि। झलफल होइत-होइत सासुर चलि जाएब। रातिमे अँटैक जाएब। किएक तँ अखनो बुड़हीकेँ छैन जे केतबो धड़फड़ाएल रहब तैयो नहियेँ आबए देती। काल्हि भोरे मात्रिक होइत चलि आएब। छोड़ैबला एक्कोटा ने अछि, एक तँ ओहुना बहिनक मनमे होइत हएत जे जाधैर माए-बाप जीबै छला ताधैर ने नैहर छल मुदा भाए-भौजाइ केकर होइ छै जे हम्मर हएत। मुदा हमर बात थोड़े बुझैत हएत जे दू थान महींस अछि ओकरे पाछू भरि दिन तबाह रहै छी। ओहुना तँ सालमे एक दू-बेर अनबे करै छिऐ आ जेबो करिते छिऐ। मुदा तैयो मनमे होइते हेतै जे बिसैर गेल, तँए पहिने ओकरे ऐठाम जाएब। दोसर दिन दस-एगारह बजे घुमि कऽ अबिते अनुप देखलक जे महींस पाल खाइले बो-बाँ करैए। एक तँ रस्ताक थाकल तैपर सँ महींसकेँ डिरियाइत देखि मन तमसा गेलै मुदा लक्ष्मी पाबैन मोन पड़िते लगले मनमे खुशी एलइ। हाँइ-हाँइ कऽ खेलक आ महींस लऽ कऽ पारा लग विदा भेल। गाममे पारा नै रहने बगलक गाम पहुँचल। ओतए पहुँचते पता लगलै अखने एकटा महींसक संग दच्छिन-मुहेँ गेल। फेर ओइ गामसँ दोसर गाम विदा भेल। दोसरो गाममे पता लगलै जे दच्छिन-मुहेँ गेल। जाइत-जाइत चारि बजेमे एकटा गाछीमे महींसमे पाराकेँ लगल देखलक। जेहने देखैमे पारा भारी तेहने नमहर-नमहर सींगो। मरखाहक दुआरे महींसबला महींसकेँ गाछमे बान्हि हटि कऽ बैसल रहए। फरिक्केमे अनुपक महींसकेँ देखि पारा दौड़ल। पाराकेँ अबैत देखि अनुप हाँइ-हाँइ कऽ एकटा गाछमे महींसकेँ बान्हि, दोसर गाछपर चढ़ि गेल। तैबीच पहिलुका महींसबला अपन महींसक डोरी खोलि ससैर गेल। लग आबि पारा अनुपक महींसकेँ

गछाड़ि लेलक। लगले-लगले तीन-चारि मूठ देलकै। मूठ सुतरैत देखि अनुपक मन खुशीसँ नाचि उठल। मुदा पारा डरे गाछपर सँ उतरबे ने करए। महींस लग पारा बैस रहल। मुदा महींस ठाढ़े रहल। अनुपक मनमे होइ जे जँ महींसो बैस जाएत तँ ढड़ैक जेतइ। जइसँ पाल सुतरबे ने करत।

साँझ पड़ि गेल। अमावसिया दिन रहने दोसैर साँझ होइत-होइत अन्हार भऽ गेल। अनुपो गाछपर सँ उतैर हटि कऽ बैस गेल। अन्हार देखि अनुपक मनमे होइ जे असगरे छी, केना गाम जाएब। तहूमे तेहेन पारा शेतान अछि जे छोड़बो ने करैए। रातिक दस बजि गेल। हवो उठल आ बुन्दा-बुन्दी पानियोँ शुरू भेल। पानि पड़िते पारा महींसकेँ छोड़ि गाम दिस विदा भेल। हवो आ पानियोँ तेज हुअ लगल। एक तँ अन्हरिया राति तैपर सँ पानि-हवा जोर पकड़ने जाइत।

महींसक संग अनुप गाम दिस विदा भेल। कनियेँ आगू बढ़ल आकि झाँट-पानि आरो जोर पकड़ैत गेल। अदहा रस्ता अबैत-अबैत मुसलाधार बरखो आ बिहाड़ियो जोर पकैड़ लेलक। अवग्रहमे अनुप पड़ि गेल। अवग्रहमे पड़ल अनुप सोचए लगल जे आइ नै बँचब। अपटी खेतमे महींसो आ अपनो मरि जाएब। हाथो-हाथ ने सुझैए। ने केतौ एकोटा लोक देखै छी आ ने अपना कोनो इजोत अछि। बीच पाँतरमे केना जाएब? तहूमे अंगो ने पहिरने छी। देहमे जेहो कपड़ा अछि सेहो भीजिए गेल अछि। जाड़ो होइए।

अनुपकेँ जेना जिनगीक आश टुटि गेल। मन मानि गेलै जे आइ नै बँचब। जखन अपने नै बँचब तखन महींसे कोन काज देत। बुकौर लगि गेलइ। मुदा कानबो के सुनत? बिजलोका देखि होइ जे देहेपर ने खसि पड़ए। हवा बन्न भेल। बन्न होइते मनमे आशा जगलै मुदा घनघनौआ बर्खा होइते रहइ। गाम पहुँचैत-पहुँचैत बरखो बन्न भेल। घरपर आबि थरथराइत अवाजमे अनुप घरवालीकेँ कहलक- “हाथ-पएर कठुआ गेल अछि। कनी घूर करू।”

नसीवलाल महींस बान्हलक। भुलिया अनुपकेँ कहलक- “जाबे अहाँ धोती फेड़ब ताबे घूरक ओरियान कऽ दइ छी।”

घरवालीक बात तँ अनुप सुनलक मुदा जाड़े-कठुआ कऽ खसि

पड़ल। जाड़सँ देह सर्द-सर्द भेल। बोली बन्न भऽ गेलइ। हाँइ-हाँइ कऽ भुलिया फुटलाहा लोहियामे गोरहा-गोइठा तोड़ि-तोड़ि कऽ दऽ मटिया तेल ढारि सलाइ खड़ैर कऽ लगौलक। घूर धधकल। सुनरीकेँ भूलिया कहलक-

“बुच्ची, झब-दे करौछमे चारि ढेकरी थकुचि कऽ लहसुन आ करूतेल ला। अही घूरपर गरमा कऽ सौंसे देह मालिस कऽ देबैन।”

माइक बात सुनि सुनरी चारमे टाँगल लहसुनक मुट्ठीमे सँ एकटा ढेंसर निकालि, दाना छोड़ा सिलौटपर थकुचलक। शीशीसँ करौछमे तेल निकालि घूरपर गरमाबए लगल। तीनू गोरे– पत्नी, बेटा, बेटीक मनमे होइ जे भरिसक कठुआ कऽ मरि गेल। मुदा साँस चलैत देखि आशा बनल छेलइ। रसुनतेलासँ तीनू गोरे दुनू तरबो आ दुनू तरहत्थियोकेँ हाथसँ रगड़ए लगल। पान-सात मिनट तक रगड़लापर अनुप आँखि खोलि बाजल-

“जाड़ कनी कम भेल।”

अनुपक बाल सुनि आरो हाँइ-हाँइ तीनू गोरे रगड़ए लगल। तरहत्थी रगड़ब छोड़ि नसीवलाल चानि रगड़ए लगल। मन हल्लुक होइते अनुप बाजल- “जाड़े छाती दलकैए। कनी चाह बनाउ। जाबे भीतर नै गरमाएत ताबे जाड़ नै छूटत।”

पतिक बात सुनि भुलिया चाह बनबैक ओरियान करए लगल। चाह-पत्ती तँ घरमे रहै मुदा चिन्नी घरमे रहबे ने करइ। एते राति आ एहेन समयमे दोकानसँ चीनी केना आनैत। पतिकेँ भुलिया कहलक- “चाह पत्ती तँ घरमे अछि मुदा चिन्नी नइए।”

पत्नीक बात सुनि अनुप कहलक- “चीनी नै अछि तँ नूने दऽ कऽ बना लिअ। एहेन समयमे केतएसँ आनब।”

भुलिया चाह बनबए लगली। बेटाकेँ अनुप कहलक-

“बौआ, कनी थम्हि जा, धोती फेड़ लइ छी।”

कहि उठि कऽ धोती बदैल गंजी पहिरलक। चाहो बनल। स्टीलिया गिलासमे भरि गिलास चाह करीब 250 एम.एल; छानि भुलिया अनुपकेँ देलक। जेहने जड़ाएल देह, तेहने मुँह रहने चाह गर्म बुझिए ने पड़इ। पानियेँ जकाँ घोंटे-घोंट पिबए लगल। अदहा गिलास पीऐत-पीऐत देह

गरमेलै। देह गरमाइते हुहुआ कऽ बोखार आबए लगलै। चाह पीऐत-पीऐत बोखार आबि गेलइ। जाड़ हुअ लगलै। ओछाइनेपर पड़ि बेटाकेँ कहलक-

"बौआ, बड़ जाड़ होइए, कनी कम्मर निकालि कऽ ला।"

कम्मर ओढ़ि अनुप पड़ि रहल। मुदा जाड़ कमैक बदला बढ़ले जाइत रहइ। पुन: अनुप बाजल-

"एकटा कम्मरसँ जाड़ नै कमत। आरो ओढ़ाबह।"

घरक तीनू कम्मर ओढ़िते देह गरमेलै। देह गरमाइते बाजल-

"बौआ, देहसँ खौंत फेकैए।"

'खौंत' सुनि भुलिया बाजल-

"सरद-गरम भऽ गेल! एती रातिमे डाकडरो ऐठीम केना पठेबे। तेहेन दुरकाल समय अछि जे ओहो औत आकि नहि।"

निराश होइत अनुप बाजल-

"जँ औरूदा हएत तँ जीबे करब, नै जे रसीद कटि गेल हएत तँ डॉक्टरो बुते थोड़बे बाँचब।"

भुलिया-

"महींसक पाछू जे जान गमबै छी तइसँ नीक जे महींसे बेच लेब।"

आशा भरल स्वरमे अनुप बाजल-

"अही महींसक बलेँ तँ दूटा पाइयो देखै छी आ गुजरो करै छी। जँ एकरे बेच लेब तँ जीब केना। जिनगीमे अहिना नीक-अधला समय अबै-जाइ छै, तइले कि काजे छोड़ि देब। मरैक कोनो ठेकान छइ। चलितो काल लोक खसि पड़ैए आ मरि जाइए। तइले महींस किए उपटाएब।"

अही औज-कौल पौरु-साल गाममे किसान गोष्ठी भेल रहए। ओइ गोष्ठीमे जिलोक कृषि-पदाधिकारी आ ब्लौकक पदाधिकारी सभ सेहो आएल रहैथ। ओना, गाम-ले पहिल गोष्ठी छेलए। जइमे किसानक दुख-दर्दकेँ लगसँ देखल गेल रहइ। ओइ दिन गामोक किसानकेँ सरकारमे अपन भागीदारी बुझि पड़लै। किएक तँ अखन धरि गामक लोक सरकारक माने कोटाक चीनी आ मटिया तेल धरि बुझै छल। ओना, गोटे-गोटे साल

खराँतक गहुमो आबि जाइ छेलइ। मुदा तइमे बदलल रूप गोष्ठीमे रहए। किएक तँ किसानकेँ चारि श्रेणी- लघु, सीमान्त, मध्यम आ पैघ, किसानक रूपमे विभाजित कऽ सभ-ले सरकारी सुविधाक चरचा भेल। सीमान्त किसानकेँ एक-तिहाइ माने 33 प्रतिशत सरकारी सहायताक घोषणा भेल। एक-तिहाइ मदैतसँ लोकमे भरपुर उत्साह जगलै। खेतीक सभ विधा पशुपालन, माछ-पालन तरकारीक खेती, फल-फलहरीक खेतीक संग-संग उन्नैतशील धान, गहुम इत्यादि अन्नक खेतीमे सेहो मदैतक चरचा भेल। एक तिहाइ, माने 33 प्रतिशत सुविधा पाबि पैघ किसान आ मध्यम किसान-ले छोट-छोट कारोबार आ गाइयो-महींस पोसैक बाट खुजलै।

गोष्ठीक किछुए दिनक पछाइत पंजाब-हरियाणासँ ट्रकक माध्यमसँ बारहटा जर्सी गाए गाममे आएल। ओइमे सँ एकटा कारी रंगक गाए राजेसर सेहो दस हजारमे कीनलक। चारि मास धरि गाए नीक-जकाँ आठ किलो दूध दैत रहलै। मुदा बादमे, चारि मासक पछाइत एकसंझू भऽ गेलइ। जाधैर आठ किलो दूध गाएकेँ होइत रहलै, ताधैर दुनू परानी राजेसर सेहो हिआ खोलि मेहनैतो करए। ओना, दूधारू घासक खेती नै केने रहए। ने सुधा-दाना आ ने कोनो तरहक पौष्टिक आहारक दोकान इलाकामे रहइ। मुदा तैयो राजेसर पुरने ढंगसँ मौसरी आ मकैक दर्रा थोड़-थाड़ गाएकेँ खुअबैत रहए। छह मास बीतैत-बीतैत गाए बिसैक गेल। बच्छा तरे गाए रहै, तँए गाइयक संख्या तँ नै बढ़लै मुदा जेतबे दिन दूध भेलै ओइसँ गाइक प्रति आकर्षण जरूर बढ़ि गेलइ। किएक तँ अखन धरि गाममे एक्कोटा ओहन गाए नै भेल रहए जेकरा सेर भरिसँ बेसी दूध होइ।

ओना, गामक गाइक वंश दिनानुदिन बिगड़ैत गेल। तेकर अनेको कारणमे एकटा कारण ईहो रहइ जे श्राद्ध-कर्ममे तेहेन-तेहेन दब बच्छाकेँ दागि साँढ़ बनौल जाइत रहल जे गाइयक खाढ़े नष्ट होइत गेल। बिसकला पछाइत गाए उठबे ने कएल। आठ मास बीतैत-बीतैत राजेसर निराश भऽ गेल। लोककेँ पुछै तँ कियो-करूतेल पिअबैले कहै, तँ कियो मेनक गोभी खुअबैले कहइ। मुदा गाए उठलै नहि। हारि-थाकि कऽ मधेपुर मबेशी डॉक्टरसँ सम्पर्क केलक। गर्भाशय साफ करबैक विचार डॉक्टर साहैब देलखिन।

दिवाली दिन राजेसर गाए नेने मधेपुर मबेशी अस्पताल पहुँचल। एकटा बिमार महींस देखैले डॉक्टर साहैब भगवानपुर गेल रहैथ। गाएकेँ ढाठमे बान्हि राजेसर अस्पतालक ओसारपर तौनी बिछा, पड़ि रहल।

सूर्यास्त भेलापर डॉक्टर भगवानपुरसँ एला। डेरा अबिते पत्नी कहलकैन-

"एक गोरे दुपहरेसँ भुखे-पियासे गाइक संग बैसल छैथ, पहिने ओ देखि लियौ।"

दुपहरक नाओं सुनिते डॉक्टर चौंकला। साइकिल रखि पत्नीकेँ कहलखिन-

"तेहेन बेमारीक भाँजमे पड़ि गेलौं जे छोड़ियो नै सकै छेलौं। मुदा जखन महींस पाउज धऽ खढ़ उठौलक तखन अपनो संतोष भेल आ महींसोबला कहलैन जे आब महींस बँचि गेल। तँए एते अबेर भऽ गेल। मन गरमा गेल अछि पहिने एक लोटा पानि पिआउ आ चाह बनाउ। ताबे कपड़ा बदैल लइ छी।"

चाह पीब डॉक्टर राजेसर लग पहुँच, गाएकेँ देखि कहलखिन-

"जँए एते काल बैसलौं तँए अदहा घन्टा आरो समय लगत।"

आशा भरल स्वरमे राजेसर कहलकैन-

"तइले नै कोनो मुदा गाममे तमाशो छी आ अन्हरिया राति सेहो, तँए कनी..।"

ढढीमे गाएकेँ बन्हबा डॉक्टर साफ केलैन। साबुनसँ हाथ धोइ एकटा इन्जेक्शन देलखिन। चारि खोराक गोटी दऽ कहलखिन-

"काज तँ भऽ गेल मुदा आब गाम नै जाउ। एतै रहि जाउ, भोरे दिन-देखार चलि जाएब।"

फीस दैत राजेसर कहलकैन-

"डॉक्टर साहैब, अबेरो भेने तँ काज भइये गेल। गाममे मेलो-तमाशा छी तँए चलिए जाएब।"

एक तँ करिया कम्मर जकाँ अन्हार, दोसर कारी खुट-खुट गाए,

मने-मन राजेसर सोचलक जे हो-ने-हो कहीं हाथसँ डोरी छुटि जाएत तँ गाए हेराइए जाएत। तँए छोड़मे ससरफानी दऽ अपन गट्टामे बान्हि आगू-आगू गाए आ पाछू-पाछू अपने विदा भेल। थोड़े दूर आगू बढ़ल आकि बुन्दा-बुन्दी पानियोँ आ हवो रसे-रसे जोड़ पकड़ए लगल। हवाक संग-संग घनघनौआ बरखो हुअ लगलै। घरपर अबैत-अबैत जहिना राजेसर तहिना गाइयो जाड़े कठुआ गेल। राति ढहल। गाए टाँग पटकए लगलै। लगले-लगले उठबो-बैसबौ करइ आ बो-बाँ सेहो।

समय तेहेन भऽ गेलै जे पुन: डॉक्टर ऐठाम जाइक साहसे ने भेलइ। ने अपना गाममे मबेशी डॉक्टर आ ने लग-पासक कोनो गाममे। हारि कऽ करूतेल-मटिया तेल मिला, सौंसे देह औंस बोराक नूरी बना दुनू परानी गाएकेँ ससारए लगल। थोड़े काल ससारि मरीच पीस करूतेलमे मिला काँइरसँ पिऔलक। मुदा गाइक रोग हटलै नहि। धीरे-धीरे बढ़िते गेलइ। भोरहरबामे खूब जोरसँ डिरिया कऽ गाए मरि गेल। गाएकेँ मरिते दुनू परानी राजेसर कानए लगल। भोरहरबाक कानब सुनि दुनू परानी डोमन दौग कऽ आएल। अबिते राजेसरकेँ डोमन पुछलक-

"भैया, की भेलह?"

डोमनक प्रश्नक उत्तर नै दऽ राजेसर कनिते रहल। लगमे अबिते डोमन देखलक जे चारू पएर छिड़िएने गाए मरल अछि। मुँहपर तरहत्थी दऽ डोमन बाजल-

"भैया, चुप हुअ। कमाइबला बेटा मरलापर लोक सवुर करिते अछि, ई तँ सहजे नाङैर छी।"

डोमनक बात सुनि राजेसर बाजल-

"गाए मरि गेल तेकर दुख ओते ने अछि जेते बैंकक करजाक अछि। एक तँ सरकार लोककेँ मदैत करैए आकि गरदैनमे फाँस लगबैए। जखन गाए नै नेने रही तखन कहलक जे तेकरी सरकार देत आ बाँकी दू हिस्सा बैंकसँ करजा भेटत। काज सुगम देखि लेलौं। बुझबे ने केलिऐ जे गरदैनमे फँसरी लगबैए। छूट-ले बैंकबला कहलक जे मधमन्नीसँ कागत आनि कऽ दिअ तखन ओइ रुपैआक मिनहा लोनमे भऽ जाएत। जाबे तक ओ कागत

नै देब ताबे तक सोल्होअना रुपैआक सूदि चलैत रहत। अपने देखल-सुनल नहि। कोटक मंशीकेँ जा कऽ सभ बात कहलिऐ तँ ओ तैयार भऽ कऽ ओइ ओफिस गेल। पाछूसँ अपनो गेलौं। ओफिस जखन गेलौं तँ कहलक जे पान साए रुपैआ लगत, तखन कागत देब। अहिना दौड़-बड़हा करैमे हजारसँ ऊपरे खर्च भऽ गेल। रुपैआक किस्त नै देने छेलिऐ। बैंकमे जखन हिसाब करबए लगलौं तँ कहलक जे छह मासक सूदि मूरमे जमा भऽ गेल, आब ओकरो सूदि लगत। तैबीच गाइयो मरि गेल! आब की करब?”

❑ शब्द संख्या: 1944

चारि : ग

दिवालीकेँ शुभ दिन बुझि सुरतिया भोरेसँ दुनू परानी खपड़ाक भट्ठा लगबए लगल। बीस हजार खपड़ाक भट्ठाक मनमे खुशी रहइ। बीचमे थोपुआ आ चारू कात नड़िया खपड़ाक भट्ठा लगौलक। थोपुआ खपड़ा मोट होइ छै तँए कातमे लगौलासँ नीक जकाँ नै पकैए। आमदनीक खुशी मनकेँ तेना खुर-खुरा देने रहै जे दुनू परानीकेँ काजक भीड़ बुझिए ने पड़इ। दुनियाँक सभ किछु बिसैर मन आमदनी देखि तरे-तर हँसइ। जहिना कोनो कनैत बच्चाकेँ गुदगुदी लगौलासँ हँसीक लाबा फुटैत, तहिना दुनू परानी सुरतियोकेँ होइ। भट्ठा लगि गेल।

एक तँ सुखार-रौदियाह समय, दोसर कातिक मास। कातिक मासमे चैत-बैशाख जकाँ ने हवा-बिहाड़िक शंका आ ने झाँट-पानिक। तँए ने भट्ठाक ऊपर छाँही देलक आ ने कातमे टाट लगौलक। पहिल साँझ ऊक-बाती फेर सुरतिया भट्ठा लग बैस निंगहारि-निंगहारि देखए लगल जे केतौ किछु छुटि तँ ने गेल। फुलेसरी भानस करए गेल। चूल्हि पजाइर अदहन दइते मनमे उठलै जे अधिक लटारम करैमे बेसी देरी लगत, तइसँ नीक खिचड़ी आ अल्लू चोखा बना लेब। बैसारी लोक ने तरूआ-बगहरूआ बना जीहक चस्की पुरबैए। पाबैने दिन छी तँ की छी। कोनो कि पाबैनेकेँ सीमा-नाङैर छै, जेकरा रहै छै ओ सभ दिन खाइए। खाइए पाछू जे समय बीता लेब तँ खाइक ओरियान केना हएत।

फेर मनमे उठलै, जे अपने फुरने नै करब हुनको पुछि लइ छिऐन। चूल्हि तरसँ उठि फुलेसरी पति लग आबि पुछलक-

"ओना, आइ तँ लक्ष्मी दिन छी, सभ तरूआ-बगहरूआ बनौत, से की विचार।"

सुरतिया मने-मन बीस हजार खपड़ाक दाम जोड़ैत रहए। बारह हजार थोपुआ अछि, जेकर दाम बारह हजार भेल। साए-पचास फुटियो

जाएत तैयो, नइ बारह हजार तँ पौने बारहे हजार रहह, आ आठ हजार नड़िया अछि जे आठ साए रुपैए बीकत। ओहूमे पच्चीस-पचास अधपक्कू रहत आकि फुटि-भांगि जाएत, तैयो नइ चौसैठ साए तँ छह हजार हेबे करत। कहुना-कहुना तँ सतरह-अठारह हजार हेबे करत...।

बाजल- “बुढ़ भऽ गेलौं आ नाक लगले अछि। एतबो नै बुझै छिऐ जे भट्ठा लगौने छी, आगि देबै तँ भरि राति ओगैर कऽ रहए पड़त। जगरनामे अधपेटे खेनाइ नीक होइ छै आकि चढ़ा कऽ। जाउ खिचड़ी आ अल्लू चोखा बना लेब।”

अपन विचारसँ पतिक विचार मिलिते फुलेसरीक मन खुशीसँ नाचि उठल। मुस्कियाइत बाजल-

“पावनिक दिन छी, तखन..?”

“जाउ-जाउ। जेकरा रहै छै ओकरा लिये सभ दिन होलीए-दिवालीए रहै छै आ जेकरा नइ रहै छै ओकरा लिये सभ दिन एकादसीए।”

खा-पी कऽ फुलेसरी बच्चा सभकेँ सुता देलक। रातिक साढ़े नअ बजैत रहइ। सुरतिया भट्ठामे मौसरी-दालि छिटैत बाजल-

“जेहेन मौसरी-दालि लाल तेहेन भट्ठा लाले-लाल..!”

कहि आगि देलक। सुखार समय धुधुआ कऽ आगि पजैर गेल। आगिक पजरब देखि सुरतिया पत्नीकेँ कहलक-

“ऐ बेरक खपड़ासँ पूजी बढ़ा लेब। दू आदमीकेँ आरो रखि लेब। कहुना-कहुना जँ दसो भट्ठा हाथ लगल तँ लाखक कमाइ भइये जाएत। पूजीए ने पूजी बढ़बै छइ। गाममे देखिते छिऐ जे जेकरा दस बीघा जमीन छै ओ अपनो साल भरि खाएत से नइ होइ छइ। हम तँ सहजे नंगा-फरोस छी। तहन तँ लुरिये-बुधि तेहेन अछि जे...।”

फुलेसरीक बुधिमे पतिक बात नै अँटल। छोट बुधिमे पैघ बात केना अँटैत। मुदा पति-पत्नीक बीच कि कोनो शास्त्रार्थ होइए, सुयोग कविक कविता जकाँ तुक मिलौबैल होइए। विषय-वस्तु किछु रहौ वा नै रहौ मुदा तुकबन्दी जँ नीक रहल तँ ओ श्रेष्ठ कविताक श्रेणीमे आबिए जाइए। पतिक प्रश्नक उत्तर दैत फुलेसरी बाजल- “ऐ बेर अपनो घरपर खपड़ा दैये

देब।”

‘अपन घर’ सुनि सुरतियाक मनमे उठलै, जहिना घर बनौनिहारकेँ अपना रहैले घर नै रहै छै तहिना तँ हमरो अछि। जाबे बिराटनगरमे नोकरी करै छेलौं ताबे पेटो चलैमे कोताहिये होइ छेलए। मुदा आब जँ बेसी कमाइ हुअ लगल तँ घरो बनाइए लेब!

बुन्दा-बुन्दी पानियोँ आ संग-संग हवो उठल। मेघ दिस देखि सुरतिया बुदबुदाएल-

“मेघो कहाँ देखै छिऐ। एकटा छोटका टुकड़ी बुझि पड़ैए। नै औत बर्खा। मुदा हवा ने एकभग्गू कऽ दिअए। जँ हवा जोर भेल तँ एक भाग काँचे रहत आ दोसर भाग झाम बना देत।”

हवा तेज होइत गेल आ मेघो पसरैत गेल। पूबसँ वादल आबि-आबि सघन हुअ लगल। जहिना-जहिना बर्खा बढ़ए लगल, तहिना-तहिना हवो बढ़ए लगल। तरतरा कऽ जोरगर बरखो आ बिहाड़ियो आबि गेल। झाँट-पानि देखि सुरतियाक आशा राइ-छित्ती भऽ गेल। मास दिनक मेहनतक संग-संग पूजियो नष्ट भऽ गेल। टुटल मने पत्नीकेँ कहलक- “सभ किछु दुइर भऽ गेल!”

पतिक बात सुनि फुलेसरी गौंआँकेँ दोख लगबैत बाजल-

“ई सभ किरदानी गौंआँ सबहक छिऐ। जखन गाममे काली-पूजाक अरघेना केलक तँ पहिने भगता बजा पूजा कऽ काली-महरानीसँ वाक् लऽ लैत, से करबे ने केलक आ अपने फुरने पूजा शुरू कऽ देलक! ओकरा सभकेँ की बिगड़लै। देत कियो हरजाना!”

फुलेसरीक जोर-जोरसँ बाजब सुनि सुरतिया डपटैत कहलक-

“यएह सभटा बुझै छइ। राजा-दैवक कोनो ठेकान छइ। केकरो हाथमे छै जे केकरो दोख लगबै छिऐ। कोनो कि अपनेटा नोकसान भेल। केते लोकक घर खसल हेतै, चीज-वौस दुइर भेल हेतै आकि अपनेटा भेल?”

पतिक बात सुनि फुलेसरीक तामस गौंआँपर सँ हटि पड़ोसनीपर पहुँचल। पड़ोसनीकेँ गरियाबए लगल- “तेहेन मरमी मौगी सभ अछि जे

अनकर नीक सोहाइ छइ। बेटा दऽ दऽ डानि सीखने अछि आ अनकर गरदैन कटैए। जहिना हमर भट्ठा नोकसान भेल तहिना ओकरो सातो पुरखाकेँ उड़ाहि देबइ।”

सुरतियाक घरक बगलेमे एकटा मसोमातक घर। जेकरा सभ स्त्रीगण डाइन बुझैत। ओकरे ठेकना-ठेकना फुलेसरी गरियबैत। गारि तँ ओहो मसोमात सुनैत मुदा नाओं नै सुनि कान ठाढ़ केने रहए, जखने नाओं लेत तखने देखा देबइ। केहेन घनिकपन्ना होइ छै से सभ निकालि देबइ।

पत्नीक क्रोध देखि सुरतिया सोचलक जे एक तँ जे नोकसान भेल से भेबे कएल तैपर सँ अनेरे झगड़ा सेहो ठाढ़ हएत। हमरासँ कि कमजोर ओ मसोमात अछि। दियादियो बेसी छै आ अपनो दुनू बेटा बुफगर छइ। हो-ने-हो कहीं आबि कऽ मारि ठानि दिअए। तखन तँ पूजियो गेल आ ऊपरसँ मारियो खाएब। पत्नीकेँ पोल्हबैत कहलक-

“की हेतै, कियो कपार लऽ लेत। भगवान जे भोग-पारसमे देने हेता ओ हेबे करत। जे नै देने हेता से अपनो केने थोड़े हएत। तइले एते आगि-अंगोरा होइक कोन काज छइ। नोकसाने की भेल, खपड़ा गलि कऽ माटि हएत, ओकरा फेर खपड़ा पाथि सुखा कऽ भट्ठा लगा लेब। जरनो भीजबे ने कएल ओकरो सुखा लेब। गिरहत सभकेँ देखै छिऐ हर-जन लगा खेती करैए आ बाढ़िमे दहा जाइ छै तँ की ओ मरि जाइए आकि खेती छोड़ि दइए। तहिना हमरो भेल। भगवान समांग देने रहैथ। सभ किछु फेर भऽ जाएत।”

पतिक बात सुनि फुलेसरीक मन थीर भेल। मुदा तैयो मन खौंझाएले रहइ। बाजल-

“भगवानो दुष्टे छैथ। जानि-जानि कऽ गरीबे लोककेँ सतबै छथिन। जहिना ओ करै छथिन तहिना ने हमहूँ सभ करै छिऐन। ने एकोटा उपास करै छी आ ने एको दिन पूजा करै छिऐन।”

पत्नीक बात सुनि मुस्की दैत सुरतिया बाजल-

“अच्छा आब भऽ गेल। जहिना ओ केलैन तहिना अहूँ करिते छिऐन। सधम-बधम भऽ गेल।”

मछुआ सोसाइटी बनने किछु गोरे तँ उठि-बैसला आ किछु गोरे गोपलखत्तामे चलि गेला। ओना, सोल्होअना पोखैर सोसाइटीमे अखनो धरि नहियेँ गेल अछि मुदा जे गेल तेकरो मुआबजा पोखैरबलाकेँ तँ नहियेँ भेटल जे सोसाइटी बनने नव पनिदार मालिकक जन्म जरूर भऽ गेल। किएक तँ एक गोरेक हाथमे अंचल भरिक पोखैर आबि गेल। जइसँ पर्याप्त उत्पादित पूजी हाथ लगि गेलइ। संग-संग सरकारी खजानाक लूट सेहो शुरू भेल। मनमाना ढंगसँ सोसाइटीक सचिव आ सरकारी तंत्र, दुनू मिलि कऽ गामक अमूल्य पूजी लूटब शुरू केलक।

ओइ सोसाइटीसँ एकेटा पोखैर आ एकटा खानगी पोखैर डेढ़ हजार सलियाना-किस्तपर फुदना माछ पोसैले लेलक। सोसाइटीबला पोखैरक महार, बिनु देख-रेख भेने ढहि-ढुहि कऽ सहीट भऽ गेल छेलइ। मुदा रामधनबला पोखैरक महार, नीक मुँह कान रहने, जीअत छइ।

शुरूहे अखाढ़मे फुदना एकटा वेपारीसँ गंगाक जीरा कीनि सैरातबला पोखैरमे देलक। आ दोसर पोखैरमे तमुरियाक हेचरीसँ जीरा कीनि कऽ आनि देने रहए। गंगाक जीरा रौहु, नैन, भाकुर रहै आ तमुरियाक जीरा, सिल्वरकाफ रहए। सिल्बरकाफ साले भरिमे दू-दू-तीन-तीन किलोक भऽ जाइत, जखन कि रौहु-नैन तँ कम बढ़ै छै मुदा भाकुरक बाढ़ि अधिक होइ छइ। पानिक सतहक हिसाबसँ तीनू माछ रहै छै, तँए तीनू मिला कऽ देल जाइए।

शुरूहे अखाढ़ेमे जे आद्रामे बर्खा भेल रहै, ओइमे दुनू पोखैर भरि गेल रहए। पोखैरक पानि आ जीराक सुतरब देखि दुनू परानी फुदनाक मन चपचप करैत रहइ जे भगवान दुख हेरलैन। कहुना-कहुना तँ बीस हजारसँ ऊपरेक आमदनी हएत। जहिना खूब फड़ल आमक गाछी, खूब उपजल खेत आ खूब दुधगरि गाए बिएलासँ खुशी किसानकेँ होइत, तहिना फुदनो दुनू परानीक मनमे होइ। जइसँ दुनू परानी बेरा-बेरी तीन-तीन बेर पोखैरक घाटपर घन्टा-घन्टा भरि बैस माछक बच्चाकेँ एमहर-सँ-ओमहर हेलैत देखए। घरपर अबैक मने ने होइ।

माछक कारोबारसँ फुदनाक परिवार पहिलेसँ जुड़ल। मखान खर्ड़ब, माछ मारि बेचब, परिवारक जीविका रहइ। मुदा तीन-सलिया रौदी भेने

फुदना कण्ठी लऽ लेलक। माछक रोजगार कोन जे माछ खाएबो छोड़ि देलक। माछक गन्ध फुदनाकेँ पहिने नीक लगै मुदा आब जी ओकिऐ लगै छइ। गामक कीर्तन मण्डलीमे शामिल भऽ अष्टयाम, नवाहमे कीर्तन करैले सेहो जाए लगल आ भनडारा सेहो पुरए लगल। लाट लगने एक हाथ हरमुनियाँ आ ढोलक बजौनाइ सेहो सीख लेलक। पाछू-पाछू कीर्तन गबैत-गबैत गौनाइयो सीख लेलक। दाढ़ियो-केश बढ़ा लेलक आ पतलखरीक चानन सेहो करए लगल। समैयो संग देलकै। नव रोजगार ठाढ़ भेल। कीर्तन मण्डलीक सट्टा सेहो हुअ लगलै। काजो हल्लुक आ प्रतिष्ठाक संग-संग खेनाइयो नीक भेटै आ पाइयोक आमदनी नीक भऽ गेलइ। मुदा घरवाली साकठे रहल।

जहिना माछक विन्यास बनबैमे सितिया लूरिगर तहिना खाइयोमे जीविलाहि। गामक छौड़ा सभ आ जनिजातियो सभ, ओकरा बगुला भगत कहैत। घरमे एक्केटा थारी-लोटा रहइ। जहीमे फुदनो खाए आ सितियो। एते बात जरूर रहै जे कहियो फुदना घरवालीकेँ माछ खाइसँ मनाही नै केलक। फुदना देखबो करै जे नैहरसँ सनेसमे माछे अबै छइ। नहियोँ-नहियोँ तँ तीन-चारि खेप मासमे आबिए जाइ छइ। सितियाक पिता माछक कारोबारी छथिन। पोखैरोबला सभसँ आ मधेपुरोक वेपारीसँ माछ कीनि-कीनि आनि आ नफ्फा लगा कऽ गामे-गामे घुमि कऽ बेच लइ छैथ। जइसँ नीक कमाइ होइ छैन। खेत-पथार तँ नै कीनलैन मुदा नीक जकाँ गुजर करैत घरो नीक बनौने छैथ।

एक दिन फुदनाक सार टुनटुनमा दू किलोक अण्डाएल रौहु नेने एलैन। नमहर-नमहर कुट्टिया काटि सितिया माछ तरए लगल।

माछक सुगन्धसँ फुदनाक मन मचकी जकाँ डोलए लगलै। जहिना शरीरमे पुरन रोग समय पाबि जगि जाइए, तहिना फुदनोकेँ भेल। गरदैनसँ कण्ठी निकालि लाचारीक मुस्की दैत पत्नी लग आबि बाजल- "दूटा कुट्टिया आ चूरा भुजि कऽ नेने आउ?"

पतिक बात सुनि व्यंग करैत सितिया बाजल- "तीन सालमे केते घाटा भेल से बुझै छिऐ? रौहु माछ खेनिहारकेँ कहियो आँखिक ज्योति कमै छइ। बुढ़ाड़ियो तक ओहिना चक-चक देखैत रहैए। अखन चूल्हि

तरसँ केना उठब। घरमे चूरा नै अछि। दोकानसँ अदहा किलो नेने आउ। ताबे हम अण्डाकेँ तरै छी।”

जहिना चोरकेँ गरपर रुपैआ देखने देहमे तेजी आबि जाइ छै, तहिना फुदनोकेँ आबि गेल। जेबीसँ दसटकही निकालि दोकान गेल। सात रुपैआमे अदहा किलो चूरा कीनि कऽ आबि चूल्हिए लग बैस पत्नीकेँ कहलक-

“ताबे एकटा लाउ।”

सितियाक इच्छा रहबे करइ। अनेरे दुनू परानी दु-दिसाह भेल छी। जइसँ अनेरे सदिकाल रक्का-टोकी होइत रहैए। तरल अण्डा आ चूराक भूजा सितिया पतिकेँ देलक। जहिना कोनो वस्तु अधिक दिनक पछाइत भेटलासँ आनन्द अबैत तहिना फुदनाकेँ माछ-चूरा खाइमे आबए लगल।

फुदना सासुर गेल। ससुरक घरमे धड़ैनपर एकटा छोटका घुमौआ जाल सैंत कऽ रखल देखलक। जाल देखि मनमे एलै जे अनेरे ई जाल रखले-रखले दुरि भऽ जाएत, तइसँ नीक जे नेने जाइ। छोटका सारकेँ जाल उतारि देखबैले कहलक। जाल मांगि गाम नेने आएल। गाममे केकरो बुझले नै रहै आ ने केकरो लग बजबे कएल। ओजार देखि फुदना तरे-तर खुशी रहए। तेसरे-चारिमे दिनसँ ओ पोखैर सभमे साँझू पहरकेँ चोरा-चोरा माछ मारए लगल। अपनो खाए आ उगरै तँ बेचियो लिअए।

पोखैरबला सभ धपबए लगल। होइत-होइत एक दिन फुदना पकड़ा गेल। तत्काल तँ पोखैरबला किछु नै कहलकै, खाली जाल छीन लेलक। दोसर दिन भोरे पोखैरबला पनचैती बैसौलक। पूर्वासायक जरूरते ने रहै किएक तँ जाले गबाह रहइ। पंच सभ पच्चीस बेर कान पकैड़ कऽ उठै-बैसैले आ एक साए रुपैआ दण्ड केलक। मुदा जाल घुमा देलकै। आँगन अबिते पत्नी मुहेँ-काने खुब दुत्कारलक। पत्नीक बातसँ फुदनाकेँ जानसँ ऊपर ग्लानि भेल। कान पकैड़ बाजल-

“आइ दिनसँ कहियो एहेन काज नै करब।”

पतिक बात सुनि सितिया अपन हौंसली दैत कहलक-

“लिअ, एकरा बन्हकी लगा माछ पोसैले एक-दूटा पोखैरक बनोबस

कऽ लिअ। अपन कारोबार रहत, जेते मन हएत खेबो करब आ गुजरो करब।”

दिवाली दिनक घनघोर बर्खासँ सैरातबला पोखैरक माछ दहा गेल। बाधक पानिक सलाढ़ पोखैरमे लगि गेल। बर्खा छुटला पछाइत दुनू परानी फुदना टॉर्चक हाथे माछ देखए गेल। पोखैरक सलाढ़ देखि फुदनाकेँ बघजर लगि गेल। बकार बन्न भऽ गेलइ। दुनू हाथ माथपर लऽ महारपर बैस रहल। टॉर्च नेने सितिया घाटपर जा बारलक तँ एक्कोटा माछ नजैरपर पड़बे ने केएल। माछ नै देखि सकदम भऽ गेल। मने मन सोचए लगल जे सभ केलहा डुमि गेल। मुदा गलती अपनो भेल जे महारकेँ बन्हलौं नहि। जँ मोटगर आड़ियो जकाँ मुहकेँ बान्हि देने रहितिऐ तँ एहेन दिन नै देखितौं। मुदा आब सके कोन। जे चलि गेल ओ फेर घुमि कऽ थोड़े औत। घुमि कऽ पति लग आबि चुपचाप ठाढ़ भऽ गेल। फुदना सोचैत, लोक कमा कऽ स्त्रीकेँ गहना-जेबर कीनि-कीनि दैत अछि आ हम एहेन करमघट्टू छी जे जेहो गहना छेलै सेहो पानिमे बोहा देलिऐ। एक तँ माछ भाँसल, तैपर सँ हौंसलियो चलि गेल...।

फुदना किछु बजबे ने करैत। पतिकेँ देखि सितिया बाजल-

“माथा-हाथ देलासँ थोड़े माछ घुमि औत। तखन तँ आगू की करब से सोचू। चलू ओहू पोखैरकेँ देखिऐ जे ओहो भँसि गेल आकि बँचल अछि।”

मने-मन फुदना सोचलक, हमर बाजब उचित नै हएत। किएक तँ जनीजाति बेटोसँ पैघ गहनाकेँ बुझैत अछि। तँए वएह कि बजैए सएह सुनी। आगू-आगू टॉर्च नेने सितिया आ पाछू-पाछू चुपचाप फुदना दोसर पोखैर देखए विदा भेल।

पोखैरक चारू महार घुमि कऽ देखि मुस्की दैत सितिया बाजल-

“जीरासँ जे किछु आमदनी होइत से तँ नहियेँ हएत। मुदा एक्को पोखैर जँ बँचि गेल तँ अहीसँ दुनू पोखैर अबाद भऽ जाएत।”

पत्नीक बात सुनि फुदना बाजल-

“पहिने तँ भेल जे जहिना ओ पोखैर दहा गेल तहिना ईहो दहा गेल

हएत। मुदा भगवान रच्छ रखलैन जे एकटा बँचल अछि। तेते ने जीरा सुतरल अछि जे एकटाकेँ के कहए जे एकटा आरो पोखैर भऽ जाएत, तेकरो अबादि लेब। जेते छेहर बच्चा रहै छै ओते बेसी बाढ़ि होइ छइ।"

फुदनाक बात सुनि सितियाक मनमे एकटा नव विचार जगलै। मने-मन सोचए लगल जे भने दहार भऽ गेल। कोनो कि हमरेटा पोखैर दहाएल, एहेन-एहेन केते गोरेक दहाएल हेतइ। आब सोसाइटीबला आ पोखैरबला अगधाएत थोड़े, तेहेन पूजी अछि जे पोखैरबला सभ खुशामद करए औत। सस्तेमे दोसरो पोखैर हाथ लगि जाएत। भगवान जहन दइपर होइ छथिन तँ अहिना ने छप्पर फारि कऽ दइ छथिन। बाजल-

"गलती अपनो सबहक भेल जे पोखैरक मुँह मजगूतसँ नै बान्हि देलिऐ। जँ से बान्हल रहैत तँ एहेन दिन थोड़े देखतौं। काल्हि भोरे पाँचटा टल्लाबला जन कऽ कऽ मजगूतसँ मुँह बान्हि देबइ। अखन कातिके छी बहुत समय अछि। बैशाख-जेठमे मछहैर हएत। भने पोखैर उपो-उप भरि गेल।"

पत्नीक बात सुनि फुदना बाजल-

"जँए एते पूजी लगेलौं तँए थोड़े आरो लगा देबइ। दू मन खैर आनि कऽ सेहो दइए देबइ। ओना, देखै छिऐ जे केते गोरे खादो दइए। मुदा अपना तँ ओते ओकाइत नइए। ऐ साल कहुना-कहुना कऽ लिअ। ऐगला सालसँ नीक जकाँ करब। कोनो की अग्गह-बिग्गह पोखैरे जोतलासँ थोड़े होइ छै, जेतबे करब नीक जकाँ करब।"

❑ शब्द संख्या: 2373

चारि : घ

कालीपूजा समितिक सदस्य होइक नाते भोला भोरेसँ स्थानक काजमे जुटल रहए। केना नै जुटैत? जे परिवारसँ उठि समाजक काजकेँ अपन काज बुझैत अछि ओ केना ओकरा छोड़ि सकैए। जहिना ब्रह्मक अंश जीव होइत तहिना ने बेकती समाजक अंग छी। स्थानक काजक दुआरे जलखैयो करए भोला घरपर नै आएल। नहेबो नै केलक। हाथ-पएर धोइ खेलक आ पुन: विदा होइत पत्नीकेँ कहलक-

"हमर कोनो ठेकान नै अछि तँए मालो-जाल आ पाबैनोक सभ ओरियान कऽ लेब।"

पानि-बिहाड़ि जखन आएल तखन भोला आ मंगल वृन्दावनक रासक आगूमे ठाढ़ भऽ हियासि-हियासि देखै छला जे केतौ कोनो गड़बड़ी तँ नै भऽ रहल अछि। मुदा तेहेन भयंकर रूपमे पानि-बिहाड़ि आएल जे मनक सभ विचार सबहक मनेमे सड़ि गेल।

मंचक घटना सम्हारि भोला घरपर आबि बीरार देखए गेल। बीरारमे बिहैनक दशा बिगड़ल देखि निराश भऽ गेल। आमदनीक आशा टुटि गेलइ।

जहिना भोला छोट किसान तहिना छोट कारोबारियो। पनरहे कट्ठाक आँट-पेटक किसान। मुदा दुनू परानी एहेन मेहनती जे सात गोरेक परिवार हँसी-खुशीसँ चलबैत। ओना, चारिटा बच्चा लिधुरिया रहै मुदा जेठका बारह बर्खक। बलदेब मिड्ल स्कूलमे पढ़बो करैत आ घर-गिरहस्तीक काजमे संगो-साथ दइत। स्कूलोक दशा तेनाहे सन। पाँच साए विद्यार्थीक स्कूलमे तीनिटा शिक्षक। तहूमे एकटा नेतागिरिये करैत। पढ़बै-लिखबैसँ ओते मतलब नहि, जेते आँफिसक दौड़-बड़हासँ। सिरिफ लोकेक काजे ऑफिस नै जाए, बल्कि स्टाफो सबहक काज करैत। जइसँ आमदनियोँ नीक आ पैघ लोकक बीच बैस समैयो गूदस करैत। स्कूलसँ ओतबे मतलब जे मासो दिनक हाजरी बना दरमाहा उठबैत। समाजमे

केकरो किछु कहैक साहसे नहि। थाना-बहानासँ लऽ कऽ कोट-कचहरी धरिक धुड़फन्दा लोक, तँए कियो आँखि केना उठा सकैए। तहूमे सरकारी पार्टीक नेतागिरी करैत।

स्कूलक ढील-ढालसँ भोला खुशीए रहए। किएक तँ बलदेब माल-जालक पूरा भार उठा नेने। कुट्टी काटब, खाइले देब, पानि पियाएब, घर-बाहर करब, थैर खड़ैब, गोबर उठाएब बलदेवक बान्हल ड्यूटी। अइले ने पिताकेँ अढ़बैक जरूरत आ ने कोनो चिन्ता। मुदा तँए की बलदेव पढ़ए नहि? पढ़बो करए। भरि दिन ने माल-जालक नेकरम करै मुदा बारह घन्टाक राति तँ बँचइ। दोसैर साँझ होइते भोला मुस्तैज भऽ धिया-पुता लग बैस नजैर रखैत।

पढ़ैमे बलदेव ओते चन्सगर नहि, रहबो केना करैत? जखन स्कूलेकेँ केन्सर धेने रहत, तखन हाथ-पएर केते क्रियाशील रहत। मुदा तँए कि बलदेव सोलहन्नी भुसकौले रहए से नहि। इमानदारीक छह घन्टाक मेहनतसँ कियो इंजीनियर तँ कियो डॉक्टर, कियो ओकील, तँ कियो प्रोफेसर बनि जाइए, तँ तीन घन्टाक मेहनतसँ बलदेव किए ने पास करत। साले-साल किलास टपिते रहए। भोलो खुशी, किएक तँ बच्चेमे बाबाक मुहेँ सुनने रहए जे- 'उत्तम खेती'।

नोकरी आ गुलामीमे की अन्तर छइ। कमा कऽ जिनगी जीबैक लूरि जँ भऽ जाए तँ ऐसँ बेसीक जरूरते की। जहिना राजतंत्रमे रजेक बेटा राजा होइत तहिना ने प्रजातंत्रोमे मंत्रियेक बेटा मंत्री आ हाकिमेक बेटा ने हाकिम बनत। तइले आनक सेहन्ता, सेहन्ता नै तँ आरो की भऽ सकै छइ?

पनरहे कट्ठा खेत रहितो भोला गामक किसानक गिनतीमे अबैत। खेती करैक अपन ढंग। खाली बरसातेक मसिममे धानक खेती करए, बाँकी समयमे तरकारीक खेती करए। ओना, बरसातोक मसिममे पाँचो कट्ठा चौमासमे तरकारीए उपजबैत रहए। बाँकी दसो कट्ठामे कतिका धान करैत रहए।

पिताक अमलदारीमे ओइ दसो कट्ठामे रोहनियाँ-मरूआक बीआ पाड़ि रोपैत आ मरूआ काटि अगहनी धान रोपैत। मुदा मरूआक बिसवासू खेती नै रहइ। गोटे साल पचता पानि भेने बीये बुड़हा जाइ, गोटे

साल बेसी बर्खा होइ तँ दहाइए जाइ। किएक तँ मरूआ पनिसहू नै होइए मुदा जइ साल समगम समय होइ तइ साल दसो कट्ठामे दस मन भऽ जाइ। मरूआकेँ किसान पवित्र अन्न मानैए किएक तँ ओइमे सूरा-फाड़ा नै लगै छइ।

ओना, आन-आन पाबैनमे मरूआ अशुद्ध अन्न मानल जाइए मुदा जितिया पाबैनमे शुद्ध भऽ जाइए। जहिना कुमारि कन्या बिआहमे पवित्र मानल जाइए मुदा चुमौनमे बालो-बच्चावाली अपवित्र बनि जाइए। पावनिक जोड़ो मनुक्खे जकाँ अछि जहिना कुमार बर-कन्याक बिआहक संग-संग दोती बर-कन्याक बिआह सेहो होइते अछि, तहिना मरूआक रोटी आ साग, चाहे माछक मिलानसँ जितिया पाबैन होइए। ओना, आन-आन पाबैनमे मरूआ, साग आ माछ बर्जित अछि।

धानोक वएह हालत होइत। जइ साल रौदी होइ तइ साल मरहन्ना भऽ जाइत आ जइ साल बेसी बर्खा होइ तइ साल दहा जाइत। समगम समय भेने दसो कट्ठामे दस मन धान भऽ जाइत।

अन्नक खेतीकेँ भोलाक पिता जुआ बुझि खेतियो बदललक आ बीआक कारोबार बढ़ौलक। ओना, रामझिमनी, झिमनी, भाटा, मेरिचाइ, सजमैन, घेरा, कदीमा आ सागक बीआ तँ अपने बना लिअए मुदा कोबीक बीआ बनौल नै होइ। हाटो-बजारमे कोबीक गोट्टा-बीआ नै बिकाइत रहए। एक बेर हरिहर क्षेत्रक मेला गेल तँ हाँजीपुरमे कोबीक गोट्टा-बीआ बिकाइत देखलक। दोकानदार लग बैस कोबी बीआक भाँज बुझए लगल। दोकानदार रघुनीकेँ माने भोलाक पिताकेँ कोबी बीआ बनबैक लूरि बता देलक। नीक किस्म बुझि रघुनी सभ कथूक बीआ कीनि लेलक। बीआ कीनला पछाइत दोकानदार “लक्ष्मी सीड” कम्पनीक नाओंसँ पाँचटा पोस्ट-कार्ड दैत बाजल-

“जइ चीजक बीआ कीनैक हुअए ओकर नाओं आ ओजन लिखि कऽ पठा देब। ऐठामसँ हम पार्सल कऽ देब।”

रघुनीक जिनगीमे नव मोड़ आएल। ओइ सालसँ बिहैनक कारोबार करए लगल। पिताक संग-संग भोलो सीख लेलक। पछाइत अपनो

तरकारी-खेती आ बीओक कारोबार, करए लगल...।

कृषि मंत्री आ प्रधानमंत्री शास्त्रीजीक नेतृत्वमे खेतीमे हरित क्रान्तिक कार्यक्रम बनल। कार्यक्रम बनैक कारण रहै देशक भूख मेटबैले अमेरिकासँ गहुम कर्ज लेब। औझुका जकाँ ओइ समय जनसंख्यो नै रहै मुदा तैयो पेट भरैमे मकमकीए रहए। जइ देशक माटिक जोड़ा दुनियाँक कोनो कोणमे नै छै, श्रमशक्ति भरपुर छै, मसिम अनुकूल छै, तैठाम केते लाजिमी बात छी जे ओइ देशक लोक अन्न बिना मरए। जे बात शास्त्रियोजी आ जगजीवनो बाबू बुझि “जय-जवान, जय किसान”क नारा देलैन। खाली नारेटा नै देलैन खेती-ले योजना बना क्रियान्वित सेहो केलैन।

अदौसँ अबैत खेतीमे नव जागरण भेल। हरक जगह ट्रेक्टर, करीनक जगह दमकल-बोरिंगक संग-संग नव-नव औजार किसान तक पहुँचल। नव-नव बीआक अनुसन्धान भेल। कृषिक महत बढ़ने शिक्षाक विकास भेल। उपजा-ले रासायनिक खाद, कीट-नाशक दवाइ इत्यादिक उपयोग शुरू भेल। जइसँ खेतीक उत्पादनमे आश्चर्यजनक वृद्धि भेल। देशक किसानमे नव चेतनाक सिरजन भेल।

मुदा भारत सनक देशमे जेते आ जइ गतिए विकास हेबा चाही से नइ भेल। ओना, जइ राज्यक सरकारोक नजैर आ किसानोक नजैर खेती दिस बढ़ल ओ जरूर विकास प्रक्रियाकेँ पकड़ने रहल। मुदा जइ राज्यमे से नइ भेल ओइ राज्यक कृषि पुन: ठमैक गेल। ओना, मिथिलांचलक संग आरो-आरो संकट छइ। जइ कारणेँ विकास-प्रक्रिया आगू बढ़ैक कोन बात, ठमकैक कोन बात जे पाछुए-मुहेँ ससरए लगल। जेकर कारण छेलै बाढ़िक विभीषिका। एहेन-एहेन पहाड़ी धार सभ अछि जे खाली पानिएसँ नाश नै करैत बल्कि खेतक माटि काटि-काटि नव-नव धारो बनबैत अछि आ उपजाउ माटिकेँ सेहो भँसा-भँसा बाउलसँ भरैए। जइसँ खेतक उर्वराशक्तिये चौपट कऽ दैत अछि। नव धार बनने गामो घर उजैर जाइए। खेत-पथार सेहो नष्ट भऽ जाइए, तँए जरूरी अछि धारक ऐ उपद्रवकेँ नियंत्रित करब। जाधैर से नइ हएत ताधैर बिसवासू खेती मात्र कल्पना बनि रहत।

पचास-साइठ वर्ष पूर्व कोसीक पुलमे फाटक लगा दुनू दिस माने

पूवो आ पच्छिमो, नहरक योजना बनल। मुदा अखनो धरि जइ रूपेँ ओकर उपयोग हेबा चाही से नइ बनि सकल अछि, तेकर अतिरिक्तो सरकारी-उदासीनताक चलैत एहेन बेवस्था बनि गेल अछि जे कोसीए इलाकाक-इलाका दहाइत रहैए।

ओना, कोसीक पुबरियो आ पछबरियो भागमे मुख्य नहर बनल। ओइसँ नहरक शखो सभ सोलहन्नी तँ नहि मुदा थोड़-थाड़ सेहो बनि गेल। मुख्य नहरक भीतर सीमेंट-ईंटाक जोड़ाइयो भेल। मुदा बनौनिहारक, ठीकेदारक बदनीयतीसँ तेहेन काज भेल जे जहाँ-तहाँ ढहि-ढहि नहरकेँ भरि देने अछि। नहरक मुख्य बहाव बन्न भेने आ बाढ़िक प्रकोपसँ मुख्य नहर जहाँ-तहाँ टुटितो अछि। ओना, साले-साल मरम्मतो होइत अछि आ टुटितो अछि। मुदा तैयो थोड़-थाड़ लाभ किसानकेँ होइते छइ। जेतए-जेतए पानिक सुविधा उपलब्ध अछि, ओइ-ओइ इलाकाक किसानक जिनगीमे क्रान्तिकारी बदलाउक सम्भावना बनि गेल अछि। मुदा सरकारी-तंत्रक चलैत जेते लाभ हेबा चाही से नइ भऽ पबैत अछि। ओना, शाखा-नहर पूर्णरूपेण तैयारो नै भेल अछि। तहूसँ दुर्भाग्य ई भेल जे पैछला साल कुसहामे पुबरिया बान्ह टुटने पुबरिया इलाका तँ नाश भइये गेल, जे नहरक रूपे-रेखा चौपट भऽ गेल। जइसँ पूर्वतते स्थिति बनि गेल अछि।

कोसीए नहर जकाँ बोरिंग-दमकलक योजनाक दशा सेहो अछि। छोट किसान-ले नब्बे प्रतिशत सब्सिडीमे बोरिंग आ तिहाइ सब्सिडीमे दमकल देब शुरू भेल। मुदा सीमित दायरामे योजना समटा गेल। जइसँ गामक पाँचसँ दस प्रतिशत खेत धरि पानि पहुँचैक सुविधा भेल। मुदा वेपारीक चालिसँ घटिया बोरिंगक पाइप आ घटिया दमकल किसानक हाथ आएल। जे तीन-साल बीतैत-बीतैत सभ बिगैड़ गेल। ने एक्कोटा बोरिंग काजक रहल आ ने दमकल। मुदा बैंकक कर्जक बोझ किसानपर लदले रहल। जे चक्रवृद्धिक दरसँ सुदि सहित मूलधनक असुलीमे किसानक सिरिफ गाइए-महींस नै खेतो-पथार बीकैत अछि। खेतीक उपजाक कोन बात जे लोकक खेतो हाथसँ निकैल रहल अछि।

जहिना किसान पानि-ले पहिने लल छेलए तहिना फेर भऽ गेल। पानिक चलैत खेतियो पाछुए-मुहेँ ससैर गेल। जे किसान अपन पूजी लगा

बोरिंग-दमकल कीनि खेती करै छैथ ओ खादक वेपारी आ बीआ वेपारीक हाथक खेलौना बनि गेल छैथ। घटिया खाद आ घटिया बीआक चलैत हुनको खेतीक हालत आरो चौपट भेल छैन। गोटे साल नीक खाद भेटल तँ बीआ लऽ कऽ डुमि गेल नै जँ बीआ नीक भेटल तँ खाद लऽ कऽ डुमि गेल। खेती चौपट भेने गामक लोक पड़ा कऽ पंजाब, दिल्ली, बम्बइ, कलकत्ता चलि गेल जइसँ गामक-गाम सून भऽ गेल अछि। ओना, पाछू घुमि कऽ देखलापर नै बुझि पड़ैत जे मिथिलांचलमे पहिनेसँ कम जनसंख्या अखन अछि, मुदा श्रमशक्तिक अभाव जरूर भऽ गेल अछि। तहिना उपजाउ माटिक सेहो ह्रास भऽ गेल अछि। नीक माटि बाउलमे बदैल गेल अछि। सोलहन्नी तँ नहि मुदा अदहा नै तँ तिहाइक दशा जरूर बिगैड़ गेल अछि। जे गाम कहियो अन्नक बखारी छल ओ आइ राजस्थान सदृश मरूभूमि बनि गेल अछि। गाछ-वृक्षसँ सजल गाम वस्त्र-विहीन नारी सदृश बेनग्न भऽ गेल अछि। ओना, जेहो बँचल अछि तहूमे पानिक अभाव, खाद बीआक गड़बड़ीसँ नर-कंकाल जकाँ गामक सकल बनि गेल अछि।

सभ किछु होइतो भोला चैनसँ गृहस्ती करैत अछि। आ गृहस्तक गौरवसँ मण्डित अछि। किएक तँ जेते खेतबला पड़ाइन केलक ओ अपन खेत-पथार तँ नै लऽ कऽ गेला। खेत तँ गामेमे रहल। भोला सन-सन खेतिहरकेँ स्वर्ण-अवसर भेटल। अखन धरि जे बटाइ प्रथा छल ओइमे सुधार भेल। पहिने बटेदारकेँ उपजाक अदहा बँटबारा होइ छेलइ। जइसँ बटेदार सदिकाल घाटामे रहै छला। घाटाक खेती देखि बटेदार बटेदारी छोड़ि बोइने-बुत्ताकेँ नीक बुझए लगला। मुदा बटाइमे सुधार भेने मनखपक चलैन भेल। धानक बँटबारा पनरह किलो प्रति कट्ठा जमीनबलाक हिस्सा आ बाँकी बटेदारक। तहिना गहुमोक उपजाक बँटबारा हुअ लगल अछि। तरकारीक खेती सेहो तहिना हुअ लगल अछि।

दुइए बेकती भोला, तँए केते खेती करत। मुदा तैयो एक बीघा बटाइ खेती करैत अछि। ओना, अपनो पनरह कट्ठा खेत छइहे। ओइ एक बीघा खेतमे गरमा धान काटि अगते गहुमक खेती कऽ लैत अछि। गहुमो अगते भऽ जाइ छइ। गहुम काटि खेत पटा “पूसा बैशाखी” खेरही कऽ लैत अछि। यएह ओकर फसल चक्र छइ। सालो भरि मारि-धूसि खेबो करैत

अछि आ खेतबलार्कें सेहो दैत अछि।

तरकारीक खेतीमे सेहो सुधार केलक। आब ओ हाँजीपुरक बीआ मंगाएब छोड़ि हाइब्रीड बीआ नामी-गामी कम्पनी सभसँ मंगा अपनो खेती करैत अछि आ बिहैन सेहो बेचैत अछि। जइसँ सभ दिना काज सेहो रहै छै आ आमदनियोँ बढ़ियाँ होइ छइ।

गाममे काली पूजाक मेलाक अन्दाजसँ पनरह घूरमे बीआ पाड़लक। किएक तँ इलाकाक लोक भोलाक बीआर्कें जनैत अछि। सभ जनैत अछि जे भोलाक बीआ सन कोनो वेपारीक बीआ नै होइ छइ। नीक बीआ रहितो आन वेपारीसँ सस्तेमे बेचबो करैत अछि। मुदा ऐ बेर वेचारार्कें गरदैनकट्टी भऽ गेलइ। तेहेन बर्खा भेल जे चौमासमे दनार फोड़ि देलकै जइसँ सौंसे बीरार माटिसँ भरि गेलइ। बीआक दशा देखि भोलार्कें ठकमुड़ी लगि गेल। मुदा निराश नै भेल। एते आशा रहबे करै जे एक बेरक ने नष्ट भेल। फेर पाड़ि लेब।

❑ शब्द संख्या: 1793

चारि : ङ

दोकानक छिजानैत देखि दुनू परानी ललितक मन विचलित भऽ गेल। साल भरिक मेहनतकेँ नष्ट होइत देखि सुरजी तुरैछ कऽ पतिकेँ कहलक- “जेकर बनरी सएह नचाबे। कोन दुरमतिया अहाँकेँ कपारपर चढ़ि गेल जे मिठाइक दोकान केलौं। हलुआइक काज जे आन जाति करत तँ अहिना हेतै किने।”

एक तँ पूजी नष्ट होइत ललित देखए दोसर पत्नीक गनजन सुनि मन थरथर कँपए लगलै। करुआएल मने बाजल-

“कोनो काज कोनो जातिक बान्हल नै छइ। जेकरा जे लूरि रहतै से किए ने ओ काज करत। कोनो की अपनेटा बेरबाद भेल आकि सबहक भेलइ।”

“सबहक किए ने हेतइ। गौंआँ सभ ने अकरहर केलक। बिना काली महरानीक वाक् नेनहियेँ गाममे पूजा किए ठानि देलक। पहिने भगताकेँ बजा पूजा ढारि वाक् लऽ लैत। से तँ केलक नहि। देवियो-दुर्गाकेँ हँसीए-ठट्ठा बुझलक। तँए ने एना भेल।”

पत्नीक बात सुनि ललित मुँह बन्न कऽ चुप्पे रहल।

चारि साल पहिने ललित नोकरी करैले बिराटनगर गेल। हलुआइक दोकानमे नोकरी भेलइ। पहिने तँ कोनो मिठाइ बनबैक लूरि नै रहै मुदा रहैत-रहैत सभ मिठाइयो आ आनो-आनो चीज बनबैक लूरि भऽ गेलइ। दू सालक पछाइत मनमे एलै जे जखन सभ लूरि भऽ गेल तखन अनेरे किए नोकरी करै छी। से नइ तँ गामेमे जलखैयो आ मिठाइयोक दोकान खोलब।

गाम आबि सोचलक तँ मनमे एलै जे ऐठाम मिठाइ दोकान चलैबला नै अछि। कहियो काल कियो-कियो मिठाइ कीनैए। तइमे दोकान थोड़े चलत। एकटा चाहक दोकान छै ओकरो देखै छिऐ जे सभ दिन उधारी-

दुआरे गहिंकी सभसँ झगड़े होइत रहै छइ। फेर घुमि कऽ विराटेनगर जाइक मन भेलइ। मुदा नोकरी करैबला परिवार सबहक दशा देखि मन नै मानलकै। मासे-मास रुपैआ पठबैत रहू मुदा घरक कोनो ठर-ठेकान नहि। ने धिया-पुता स्कूल जाइए आ ने घरेवाली कोनो काज करैए। अपने गाममे रहब तँ सभ किछु सुढ़िया जाएत। गामोमे की काजक कमी छइ।

फेर मनमे उठलै जे आब तँ गामोमे तेते भोज-काज होइए जे उठो काज करब तैयो परदेससँ बेसीए कमा लेब। पहिने जकाँ की आब लोक थोड़े भतभोज करैए। आब तँ हर्हियो-सुर्हियो बरियातीकेँ पुड़ी-मिठाइ खुअबैए आ श्राद्धोक भोज मिठाइयेक होइ छइ। हजार-हजार, डेढ़-डेढ़ हजार रुपैआ मिठाइ बनौनिहार लइ छइ। बिआह ने सीजनल होइए। मुदा सराधक तँ कोनो सिजीन नै होइ छइ। दोसरो काज ठाढ़ कऽ लेब आ जइ दिन काज भेटत तइ दिन काजो कऽ लेब। पच्चीसो-पचास काज सालमे पकड़ाएत तैयो पच्चीस-पचास हजारक कमाइ भइये जाएत। पाबैनो आ भारो-दौरमे लोक मिठाइक चलैन केने जा रहल अछि। अखन शुरूआती समय अछि। तँए अबूह बुझि पड़ैए। मुदा जखन काज शुरू करब तखन अनेरे काज बढ़ए लगत। पहिलुका जकाँ तँ आब लोकक हालतो गड़बड़ नहियेँ छइ। पहिने लोककेँ भरि पेट खेनाइयो ने होइ छेलै मुदा आब तँ से बात नै रहल। जेना-जेना हालत सुधरतै तेना-तेना खेनाइयो-पीनाइ आ आनो-आन काज सुधरतै। तहूमे की सभ गाममे थोड़े हलुआइ अछि। जखने लोक बूझत आकि आनो-आनो गामबला सभ आबि-आबि काज करैले कहत।

सोचैत-विचारैत ललित, गामेमे रहि अपन कारोबार करैक निर्णय कऽ लेलक। निर्णय करिते मिठाइ बनबैक सँचो आ बरतनो-जात कीनलक। पाँचे दिनक पछाइत फागुनक लगन पकड़ा गेलइ। बाप रे! एहेन लगन कोनो साल नै भेल छेलइ। पनरह-सोलहटा बिआहक दिन। बुढ़-ठेंर सभ उठि जाएत, तहूमे की कोनो सरकारी नोकरी छी जे जेते दरमाहा तँइ भेल ओतबे रहत। जखने काजक धुमसाही हेतै तखने कारीगरक कमाइ बढ़तै। जहिना कम वस्तु रहने दाम बढ़ैत अछि आ बेसी वस्तु भेने दाम घटैत अछि तहिना, ने कम काज रहने रेट कमत आ बेसी काज भेने रेट

बढ़त। टोटल-नफा मिला कऽ ने मासक हिसाब हएत।

सोलहो लगनमे ललित चौबीस हजार रुपैआ कमाएल। तैपर सँ अपूछ खेनाइ-पीनाइक संग किछु-किछु उगरहला समानो भेलइ। मासो दिन व्यस्त रहल। मुदा कमाइक संग एकटा रस्तो भेटलै। ओ ई जे अन्तिम लगनक काज करए गेल तँ घरवारी घरपर नहि। बरियातीक भोजन बनबै आ खुअबै-पिअबैक बरतन भाड़ापर आनए गेल रहए। गप-सप्प करैक समय ललितकेँ भेटल। गप-सप्पक क्रममे बुझलक जे दू हजार रुपैआ बरतन-बासनक भाड़ा लगतै। ललित बाजल तँ किछु ने मुदा मने-मन हिसाब बैसौलक जे जेते दू दिनक मेहनतमे कमाएब ओते तँ बरतने-बासन कमाइत अछि। मनमे जँचि गेलइ।

सभ बरतनक हिसाब जोड़लक तँ बुझि पड़लै जे जेते पूजी लगाएब ओते नमहर कारोबार हएत। तत्काल तँ ओते पूजियो नइ अछि आ ने समान रखैक जगह। से नइ तँ पहिने एकटा घर बनाएब जरूरी अछि। जखन घर भऽ जाएत, तखन बहुत तँ नइ मुदा एक बरियाती-जोकर सभ बरतन-बासन ताबे कीनि लेब, फेर बुझल जेतइ। जेना-जेना पूजी होइत जाएत तेना-तेना कारोबार बढ़बैत जाएब।

नव कारोबार देखि ललितक मनमे खुशी एलइ। खुशी अबिते नजैर दौगलै इजोतपर, जेनरेटरपर। मुदा टेन्ट आ जेनरेटर-ले समांग सेहो चाही। असगरूआ बुते केना हएत। अपने कारीगिरी करब आकि ओइमे बरदाएब। सोचैत-सोचैत मन घुरियाए लगलै। फेर मनमे एलै जे टेन्ट-जेनरेटरमे ने अपन रहब जरूरी अछि मुदा बरतनमे तँ से नइ हएत। गिनती कऽ कऽ देबै आ लेबइ।

साल भरिक उत्तर ललित दोसरो काज ठाढ़ कऽ लेलक। दोहरी कमाइ हुअ लगलै। ललितक आमदनी आ काज देखि गामक लोक बाजए लगल जे ललितक कपार जगि गेलइ। केना नै जगैत? सुतल कपार माने बुधिकेँ जगौलासँ ने जगै छइ। जँ से नइ जगाएब तँ ओहिना ने सूतले रहत।

दोहरी कारोबार भेला पछाइतो ललितकेँ किछु समय बैसारी बुझि पड़लै। बैसारी-ले सोचए लगल जे एकरा केना काजमे आनब। अपना

खेत-पथार नहि। मुदा संयोग नीक रहल। एक गोरेक माए दुखित पड़ल। वेचाराकेँ लहेरियासराय इलाज करबए जाइक रहैक। ललितक आमदनी गामक सभ बुझए लगल। अपन लाचारी देखबैत मकशूदन ललित लग आबि बाजल- “भाय, विपैतमे पड़ि गेल छी। माएकेँ तेहेन बेमारी भऽ गेल अछि जे लहेरियासराय लऽ जाए पड़त। तमोरियाक डॉक्टरकेँ बेमारी जँचैक मशीने ने छैन। तँए कहलैन जे बिना लहेरियासराय गेने इलाज नै भऽ सकत।”

मकशूदनक बात सुनि ललित बाजल- “हमरा की कहै छी। जँ देहक काज हुअए तँ अखने संगे चलब।”

“नहि, समांगक काज नै अछि ललित भाय, रुपैआक जरूरत अछि।”

फेर ओंगरीसँ देखबैत मकशूदन बाजल- “अहाँक घरे लगहक दसो कट्ठा खेत भरना दऽ देब। पनरह हजार रुपैआ सम्हारि दिअ।”

मकशूदनक मजबुरी देखि ललितक मनमे एलै जे बेमारी, आ बच्चा सभकेँ पढ़ैले रीणो-पैंच कऽ कऽ मदैत करैक चाही। एहेन समैयक मदैत सिरिफ लेने-देन नहि, घरमक काज सेहो छी। घरसँ पनरहो हजार रुपैआ निकालि कऽ दऽ देलक। रुपैआ लैत मकशूदन बाजल- “भाय, कागत बना लएह?”

कागतक नाओं सुनि ललित अवाक् भऽ गेल। मने-मन सोचए लगल जे कोनो की केबाला लेलौं हेन जे लिखा-पढ़ी कराएब। भरना-ले लिखा-पढ़ीक कोन जरूरत छइ। समाजमे केतबो छल-प्रपंच आबि गेल मुदा अखनो समाज समाजे छी। गाममे एहेन-एहेन लोक छैथ जे दोसराक बच्चाकेँ पढ़ैमे, इलाजमे, माए-बापक क्रिया-कर्ममे ओहुना मदैत कऽ दइ छथिन, तहन कागत-पत्तर बनबैक कोन जरूरत अछि। जँ मनमे बेइमानी औतैन तँ नै देता। मुदा जमीन तँ हमरो कब्जामे रहत। समाज की ऐ बातकेँ नै बुझता। जँ समाजमे बेइमानी-शैतानी बढ़ि गेल अछि तँ ईहो बात तँ छिपल नै अछि जे केतेको गोरे माइयो-बापकेँ खाइ-पीबैमे तकलीफ करैए। भीन कऽ दैत अछि, ई बेइमानी-इमानदारी तँ आदमी-आदमीक बीचक विचार अछि।

ऐ नजैरसँ देखलापर मकशूदनकेँ बेइमान केना कहबैन। अपन मुँहक अहार काटि कऽ माइक इलाज करबए जा रहल छैथ। जइ आदमीमे एते इमानदारी छैन, हुनकासँ कागत बनाएब जरूरी नहि। अखनो गाममे ढेरो भरना एहेन अछि जेकर लिखा-पढ़ी नै भेल अछि। जँ बेइमानीए करता तँ अपन माए-पितियाइन बुझि बूझब जे समाज सेवा केलौं। जँ रजिष्ट्री कराएब तँ अदहा खर्च हमरो हएत आ अदहा हुनको हेतैन। बेर-बेगरतामे एक पाइक महत, एक लाखक बरबैर भऽ जाइए।

सोचि-विचारि ललित बाजल- "भाय, अहाँ माएकेँ इलाज करबयौन। लिखा-पढ़ीक जरूरत नै अछि।"

हाथमे रुपैआ अबिते मकशूदनक मनमे बिसवास जगि गेल जे माइक इलाज हेबे करत। काजोक एहेन संयोग होइए जे नीक होइक रहत तँ कोनो काजमे बाधा नै हएत। मुदा अधला होइक रहत तँ अनेरो काज सभमे ओझरी लगैत रहत।

दस कट्ठा जमीन हाथमे एने ललितक मन खुशीसँ गदगद भऽ गेल। तैबीच सुरजी आबि बाजल- "जँ फेनो रुपैआ माङैथ तँ फेन देबैन।"

पत्नीक बात सुनि ललितक मन आरो खुशी भऽ गेल। बाजल- "किए?"

"अहाँ खेत-पथारक बात नै ने बुझै छिऐ। कनीए-कनीए देने जखन बेसी भऽ जाएत तखन कबल्ले लिखा लेब।"

पत्नीक बात सुनि एकाएक ललितक मनमे अस्सी मन पानि पड़ि गेल। बुदबुदाएल- "देखू ऐ दुनियाँक रीति। एक घर कानै एक घर गीत।"

तुरैछ कऽ बाजल- "जखन किछु बुझैक हएत तखन पुछि लेब। जाउ, अँगना-घरक काज देखू गऽ।"

सुरजी चलि गेल। ललित सोचए लगल जे पहिने अनका खेतमे काज करै छेलौं, जे अढ़ा दइ छल से कऽ दइ छेलिऐ। काजक ने लूरि अछि मुदा काजेक लूरि भेने तँ लोक गिरहस्त नै ने बनि जाइए। गिरहस्ती-ले काजक लूरिक संग कोन समय कोन चीजक खेती हएत सेहो बूझब जरूरी अछि। तेतबे नहि, केहेन समय भेने केहेन खेती कएल जाएत। केतेको प्रश्न

अछि।

फेर ललितक मनमे एलै जे खेत तँ बड़ सुन्दर अछि, घरे लग अछि आ बगलमे बोरिंगो छइ। तँए एहेन खेती करब जे अधिक-सँ-अधिक उपजा हएत। बारह मासक साल होइ छइ। साल भरिपर मसिम बदलैए। जहिना-जहिना मसिम बदलत तहिना-तहिना खेतियो माने फसलो बदलब। नीक हएत जे पहिने गरमा धानक खेती कऽ लेब, जे चारि मासमे भऽ जाएत। धान काटि अल्लुक खेती कऽ लेब, जे तीन मासमे भऽ जाएत। अल्लु उखारि पिऔज कऽ लेब, जे बैशाख अबैत-अबैत भऽ जाएत। कमो खेत रहने बेसी उपजा हएत। संगे आरो कारोबार सभ अछि, कारीगरो छी, बेसी समैयो ने बँचैए।

गाममे मेला भेने ललित मिठाइक बढ़ियाँ दोकान केलक। मुदा झाँट-पानिक दुआरे बनौल मिठाइयो आ समानो सभ दुइर भऽ गेलइ। मुदा सबहक क्षति देखि ललितक मन घबड़ाएल नहि। कोनो की कर्जा लऽ कऽ दोकान केने छी जे एक दिस सभ नोकसान भेल आ दोसर दिस महाजन कपारपर चढ़त। भरि राति दोकानेक चीज-वौस सम्हारैमे दुनू परानीकेँ लगि गेल।

पाँच दिन पहिने ललित दसो कट्ठामे कुफरी अलंकार अल्लु रोपने रहए। समस्तीपुरसँ बीआ अनने रहए। भोरमे जखन खेत देखलक तँ ठेहुन भरि पानि खेतमे, देखिते निराश भऽ गेल। एक तँ दोकानक पूजी नष्ट भऽ गेलै, दोसर खेतियो डुमि गेल। सभ अल्लू माटिए तरमे सड़ि जाएत। तेते पानि लगल अछि जे मास दिन जोतैयो-जोकर नै हएत जे दोहराइयो कऽ रोपि लेब।

खेतसँ आबि ललित पेटकान लाधि देलक। मनमे एलै, छह मासक कमाइ डुमि गेल। मुदा फेर हूबा केलक जे अही सबहक संग की अपनो पराण गमा लेब। जहिना सभकेँ भेल, तहिना हमरो भेल। जहिना सभ दिन काटत, तहिना हमहूँ काटब। तइले अनेरे सोगा कऽ की हएत।

❑ शब्द संख्या: 1609

पाँच

भरि राति जहिना गामक लोक जगले रहि गेल तहिना मेलो देखनिहार आ दोकानो-दौरी केनिहार जगले रहल। मुदा अपनापर सभकेँ अचरज लगै जे राति सुतैबला छी ओइमे केना दिनोसँ बेसी काज केलौं। अन्हार गुप-गुप राति, ने इजोत आ ने चान। अमावसियो ओहन जइमे घनघोर करिया-वादल आबि आरो अन्हार कऽ देने। आध पहर रातिए-सँ दोकानदारो आ नाचो-तमाशाबला भागए लगल। ओना, गाड़ी-सवारीक अभाव गाममे मुदा मोबाइल जे ने करए। राता-राती केतएसँ ओते गाड़ी आबि भोर होइत-होइत कदबा कएल खेत जकाँ बना देलक से नै कहि।

गौंओँ-अनगौंओँ सभ अपन-अपन जान बँचल देखि खुशी छल। अपन-अपन समांगक गिनती करै काल कियो-कियो खुशियो आ कियो-कियो समांगसँ लऽ कऽ आनो-आनो चीजक नोकसान देखि कम-सँ-बेसी धरि दुखियो छल। मुदा दैवक डांग देबाक शक्ति नै बुझि अपन-अपन भाग्यकेँ कोसि कने-मने बेथितो छल। वृन्दावनक रास, मुजफ्फरपुरक नाटक, मेल-फिमेल कौव्वाली आ महिंसोंथाक मलिनियाँ नाच पार्टी, चारू पार्टी अदहा-अदहा रुपैआ पहिनहि, माने सट्टे बनबै काल लऽ नेने रहए, तँए कमिटिक भेँट करब जरूरी नै बुझि अनरोखे डेरा तोड़ि लेलक। कारण रहै जे स्टेजबला घटना सभकेँ थरथरी पैसैने छेलइ। जखने घटना भेल तखने थाना-बाहानक दौग-धूप शुरू हएत। जखने दौग-धूप शुरू हएत तखने जे फाँटिपर पड़त, जहलक हवा खाएत..! तइमे नीक जे कनी थाले-खिचार ने छै, जान बँचत तँ देहेक साबुनसँ कपड़ो खीचि लेब। मुदा ऐठामसँ पड़ाएबे नीक हएत...।

तहिना बनियोँ-बेकाल सोचैत, एक तँ पूजी गेल तैपर सँ अनेरे कोट-कचहरीमे जे बरदाएब, तइसँ नीक जे बँचल रहब तँ कमा लेब।

अनगौंआँक-तँ-अनगौंआँ बुझए मुदा गामक गिनतीमे देवनाथ आ

जोगिन्दर कमैत रहए। रातिए दुनू मरि गेल आकि पड़ा गेल, ई बात मंगलक मनकेँ झकझोड़ैत रहैन।

गाममे जेते पाहुन-परक आएल रहैथ सबहक मनमे होइत रहैन जे केतए एलौं तँ केतौ नहि। तैपर सँ जहिना झाँट-पानिमे गाछपर रहैबला चिड़ै-चुनमुनीकेँ होइत, तहिना पहुनाइ करैबला पाहुन सभकेँ होइत रहैन मुदा कहथिन केकरा आ सुनतैन के? लोक अँगना-घरक टाट-फरक सोझरौत आकि...। ओना, जेठक रौदमे तपल धरतीपर बिहड़िया हाल भेने जेहेन सुगन्ध माटिसँ निकलैत तेहेन नहि। कोन दोग देने जाड़ो चलि आएल सेहो ने कियो देखलक। जहिना जवानीक आगमनसँ शरीर सभ अंगक सौन्दर्य छिटका अपना दिस आकर्षित करैत, तहिना धरतियोक पियाससँ जरल मन छाँक भरि पानि पिबते शक्ति पाबि आलिंगन-ले दुनू बाँहि पसारि अपन प्रियतमकेँ बरहमासा सुनबए लगल।

पियाससँ सुखाइत किसानोक कण्ठ पानि पिबते तृप्त भऽ प्रियतम दिस आँखि उठा-उठा देखए लगला। देखए लगल जे अखन धरि पियाससँ मरनासन्न भऽ गेल छेली, एकाएक आब ओ केते शक्तिवान भऽ गेली जे नव सिरजनक शक्तिसँ लऽ कऽ सुखाएल-जरल जजात तकमे जान फूकि देलैन।

अखन धरि गामक किसान धानक खेतीमे बँटाएल छैथ। बँटैबाक अनेको कारणमे दू कारण प्रमुख अछि। पहिल, खेतक बनाबट आ मनक सोच। दोसर, साबीकसँ अबैत खेती, उपजबैक ढंग आ आधुनिक वैज्ञानिक ढंग।

जैठाम अदौसँ अबैत खेती रासायनिक खाद, समुचित पानि माने पटबन आ उन्नत बीआक संग नव तकनीकक माने नव लूरिक अभावमे पाछुए-मुहेँ लुढ़कैत गेल अछि, ओकरा आगू-मुहेँ केना बढ़ौल जाए, ई मूल प्रश्न सबहक सोझहामे ठाढ़ अछिए।

देशक बढ़ैत जनसंख्या की खाएत, ई विचार तँ खेतक मालिके माने किसानेकेँ करए पड़तैन। मुदा किसानो तँ खेतकेँ खतियाने-दस्तावेज धरि बुझै छैथ..! जखन कि, एहेन परिस्थितिमे हमरा की करए पड़त, ई ने बुझए पड़तैन। ओना, नै बुझैक अनेको कारणमे एकटा ईहो अछि जे चाहे

जे कोनो प्रचार माध्यम् हुअए वा प्रवचन देनिहार, ओ अखन धरि किसानक स्वरूपकेँ झाँपि कऽ रखने छैथ। जेकरा इमानदारीसँ किसानक बीच रखए पड़त। जँ से नइ तँ छह साए बरख पूर्व, जे लगभग पच्चीसो पीढ़ी होएत, तुलसीदास 'विनय पत्रिका'मे समाजक दशा देखलैन- 'खेती न किसान को..।'

जँ किसानक खेती मरि जाए, वेपारीक वेपार तँ भिखमंगोकेँ के भीख दऽ सकत? जँ भिखारीकेँ भीख नै भेटैन तँ पार्वती महादेव सन भिखमंगाक संग कए दिन रहती?

प्रश्न मात्र खेतियेक नै जीवनक छी। आइक जेहेन समय भऽ गेल अछि ओइ अनुकूल जाधैर अपनाकेँ नै बनाएब, समैयक संग नै चलब ताधैर बच्चा जकाँ लुढ़ैक-लुढ़ैक खसिते रहब। मुदा समैयक संगो हएब धिया-पुताक खेल नहि। धरतीपर सभसँ श्रेष्ठ जीव मनुक्ख रहितो एक-दोसरसँ करोड़ो कोस हटल छी। जहिना विशाल बोनमे लाखो-करोड़ो प्रकारक गाछ-बिरीछसँ लऽ कऽ झार-झूरसँ लऽ कऽ माटिमे सटल घास धरि रहैए तहिना मनुक्खोक बोनमे अछि। एक दिस अज्ञानक अन्तिम छोड़पर रहनिहार तँ दोसर दिस चानपर बास करैबला। मुदा जहिना बोनमे छोटसँ छोट जन्तुसँ लऽ कऽ बाघ, सिंह, हाथी धरिक भोजनो आ रहैयोक बेवस्था अछि, तहिना ने मनुक्खोक बोनमे अछि। अनेको तरहक बाट आ विचार अदौसँ अबैत रहल अछि। एक पुरुख-नारीक सम्बन्धकेँ धर्मक श्रेणीमे रखनिहार अपनहि निअम तोड़ि निआमक छैथ। जिनकर देखा-देखी बढ़िते गेल अछि। जइसँ सदिकाल नव-नव विचारक संग नव-नव बाट बनि रहल अछि। मुदा जहिना समुद्रमे अमूल्य रत्नसँ लऽ कऽ घोंघा-सितुआ-धरि आनन्दसँ रहैए, तहिना ने समाजोमे अछि। मुदा तँए की सघन खरहोरिमे चलनिहार नै छैथ? जरूर छैथ। जे खरहोरिमे एक इंच खाली जगह नइ रहनौं खढ़क गाछकेँ दुनू हाथे बिहिया-बिहिया एक भागसँ दोसर भाग पार करिते छैथ! आइक सघन जिनगी एहने भऽ गेल अछि। मुदा प्रश्न उठैत जे सीना तानि आगू-मुहेँ बढ़ल जाए आकि पीठ देखा पाछू-मुहेँ ससरल जाए?

जाधैर सीना तानि आगू-मुहेँ नै बढ़ब ताधैर असीम शान्तिक गाछ

लग केना पहुँचब? जँ से नइ पहुँचब तँ अनेरे किए अन-पानिकेँ दुइर करै छिऐ। जिनगीक सफलताक सर्टिफिकेट सिरिफ कठिन साधनासँ भेटै छै, नै कि कट-पीस रस्तासँ। जाधैर असीम शान्ति नै पाएब ताधैर जिनगीक सफलताक सर्टिफिकेट केना पाबि सकब?

मेघौन रहने सुरूज अबेर कऽ ओछानि छोड़लैन। मुदा तँए की अकासमे उड़ब चिड़ै बिसैर गेल। गोसाँइकेँ जगबैत ढोलिया गोवर्धन पूजा करबए गाम दिस विदा भेल। मनमे खुशी। किएक नै खुशी रहतै, खेत जोतनिहार-किसानसँ लऽ कऽ गाए पोसनिहार किसान धरिकेँ ऐठाम जेबाक छै किने। आमदनियोँ नमहर तँ मेहनैतो कम नहि। गोवर्धन पूजा-ले कियो करमी लत्तीक भाँजमे तँ कियो ठेका-गरदामीक ओरियानमे जुटल। कियो दोकानसँ रंग आनि गरदामी रंगैत तँ कियो रंग-बिरंगक गाछ-पात-बुट्टीक ओरियान, सोनहाउन-ले करैत। स्त्रीगण सभ भिने बताहि भऽ गोधन महराजक संग-संग धान-मरूआक बखारी बनबैत। मुदा मनमे एकटा शंका रहबे करैन जे ढोलिया ने कहीं पहिनहि आबि जाए। वेचाराकेँ सौंसे गाम घुमए पड़तै आकि कोनो हमरे ऐठाम भरि दिन रहने पेट भरतै। कियो खरिहाँन बनबै पाछू बेहाल तँ कियो जन-बोनिहार मिलि चाह-पान करैत।

ओना, समैयक फेरमे पड़ि कियो भोरमे सूप नै बजौलैन। हो-ने-हो दरिदरा कहीं निर्विरोध सालो भरिले फेर ने रहिए जाए। मुदा साले-साल सूप बजा-बजा भगेनौं तँ रहिए जाइए, जहिना परशुराम क्षत्रियकेँ मेटबैले दर्जनो बेर सामुहिक हत्या केलैन मुदा तैयो क्षत्रिय रहिए गेला। हो-ने-हो कहीं एहने जिबठगर दरिदरोहो ने तँ अछि..?

झाँट-पानिक चलैत काली-पूजाक जे दशा भेल ओ तँ भेबे कएल जे केतेको समस्या समाजक बीच आनि कऽ रखि देलक। जहिना घर बन्है काल एक-एक वस्तुक ओरियान करए पड़ैत तहिना घरक करइ पड़त।

साइकिल उठा मंगल काली-पूजा समितिक बैसार करैले समितिक सदस्य-सबहक ऐठाम विदा भेला। सभसँ पहिने देवनाथ ऐठाम पहुँचला। देवनाथकेँ दरबज्जापर नै देखि जोरसँ सोर पाड़लैन- “देवनाथ जी, औ देवनाथ जी..?”

मुदा कारकौआ धरिक कुचरब नै सुनि पुन: दोहरौलैन- “देवनाथ

जी, यौ देवनाथ जी..?”

देवनाथक नाओं सुनि पत्नी आँगनसँ निकैल, बजली- “काल्हि बेरू पहर जे घरपर सँ निकलला ओ अखन धरि कहाँ एला हेन। कालीए स्थानमे छैथ।”

काली स्थानक नाओं सुनि मंगल चौंकैत बजला- “कालीए स्थानमे बैसार छी, वएह कहैले आएल रहौं। जँ ओतै हेता तँ भेँटे भऽ जेता नै जँ घरपर आबि जाथि तँ कहि देबैन।”

कहि मंगल जोगिन्दर ऐठाम एला। ओकरो पता नहि। बीसो सदस्य ओइठाम पहुँच मंगल घरपर आबि साइकिल रखि काली स्थान विदा भेला।

एका-एकी एगारह गोरे काली स्थान पहुँचला। गप-सप्प शुरू भेल। जीबछ मंगलकेँ पुछलखिन- “सिंहेसर भाय किए ने एला?”

जीबछक बात सुनि मंगल बजला- “ओ तँ घरोपर नै छला। घुरए लगलौं तँ माए भेटली। पुछलयैन तँ वएह कहलैन- ‘आध पहर रातिए खाटपर टाँगि दुखाकेँ डॉक्टर ऐठीन लऽ गेलइ।”

“की भेलै दुखा काकाकेँ?”

“वएह कहलैन जे ओहो मेले देखए गेल रहए। जखन पानि-बिहाड़ि आएल तँ घरपर पड़ाएल। रस्तामे एकटा घुच्चीमे पएर पड़ि गेलै, खसि पड़ल। ठेहुने टुटि गेलइ।”

‘ठेहुन टुटब’ सुनि अपसोच करैत जीबछ बजला- “बाप रे! जुलुम भऽ गेलइ। वेचाराकेँ ने अपना बेटा छै आ बेटियो सासुरेमे रहै छइ। घरोवाली हफ्सियेक रोगी छथिन। हे भगवान! तहूँ बड़ अन्यायी छह। जेकरा दुख दइ छहक ओकरा मुरदा जकाँ एक-एकटा चेरा चढ़ैबते रहै छह। हम तँ बुझबे ने केलिऐ नै तँ इलाजक खर्च मदैत कऽ दैतिऐ। नीक केलक सिंहेसर। एहेन-एहेन बेरपर जे बेटा समाजमे ठाढ़ हएत, वएह ने भारत माताक सपूतक प्रथम श्रेणीमे औत।”

मंगल- “जीबछ भाय, हमहूँ तँ बहुत नहियेँ पढ़ने छी, किएक तँ स्कूल-कौलेजमे लोक परीक्षा पास करैले पढ़ैए। ज्ञानक पाठ तँ जिनगीमे उतरला बाद पढ़ैए। जे काज सिंहेश्वर भाय करए गेला ओ आइक समाजक

मांग छी। मुदा एहेन-एहेन काज करैबला बेटा अदौसँ जन्म लैत आएल अछि। समाजक मुख्य सेवा मे एहेन-एहेन काजकेँ रखल गेल अछि। जे सेवा अदौसँ चन्दनक गाछ जकाँ जन्म लऽ बढ़ैत-बढ़ैत फुलाइत-फड़ैत रहल ओ ठमैक कऽ मौला रहल अछि, सुखि रहल अछि। सुखिए नै रहल अछि ऐ गतिए सुखि रहल अछि जे किछु दिनक पछाइत कोकैन कऽ उकैन जाएत!"

मंगलक बात जीबछ दुनू कान ठाढ़ केने आँखि चिआरि कऽ मुँह बौने सुनै छला। जहिना मुहसँ नीक वस्तु खेलापर मनमे खुशी होइत, कानसँ सुनलापर मुहकेँ हँसेबो करैत आ हृदयकेँ गुदगुदेबो करैत, आँखि विवेकक आँखिकेँ सेवा करए पहुँच जाइत, तहिना जीबछोकेँ मंगल बातसँ भेल। बाजल-

"भाँइमे कियो दादा हुअए! बच्चा, भलेँ उमेरमे बेसी छिअ मुदा भऽ गेलिअ बगुरक गाछ जकाँ, जे जहिए-सँ जनमलौं तहिए-सँ काँट-कूशमे गना गेलौं। गिनतीए हिसाबसँ काजो भेल। मुदा आब समाजक एक खुट्टाक रूपमे जिनगी बिताएब। जइ स्थानकेँ भगवान मारि देलखिन, ओइ स्थान पर बैसल छी। अपना सबहक पुरना राजा केहेन छेलखिन।"

मंगल बजला-

"ओ ओहन राजा छला जे एक-एक आदमीक जिनगीमे पैसल रहैथ। एते सिपाही रखने छला जे समैयक हिसाबसँ कियो आगू-पाछू नै हुअए तैपर सदिकाल आँखि गड़ौने रहै छला।"

"हुनकर फुलवारी केहेन छेलैन?"

"हुनकर फुलवारीक जोड़ा दुनियाँक कोनो राजा नै लगा सकला। ओना, किछु राजा जरूर अपन धन, बल, जन लगौने छैथ।"

"फुलवारीक गाछ सभ केहेन छइ?"

"फुलवारीक बीचमे विवेकक गाछ छइ। विवेकक बगलेमे मन आ बुधिक गाछ छइ। तेकर काते-कात सेवाक गाछ छै, जे सदिकाल हरीक हरिअरीपर नजैर रखैए।"

मंगलक बात सुनि भुवन बजला- "मंगल, काल्हि धरि समाजक जइ

काजमे लगल छेलौं, नीक आकि बेजए, सम्पन्न भऽ गेल। अखन जे गाम तहस-नहस भऽ गेल अछि, पहिने ओकरा देखैक अछि। जखने झाँट आएल तखने किछु-ने-किछु सभकेँ झँटनहियेँ हएत। सतनाकेँ सेहो नहियेँ देखै छिऐ?"

"रस्ते कातमे ओकर जामुनक गाछ छेलै सएह रस्तेपर खसि पड़लै। रस्ते बन्न भऽ गेल छै, तेकरे काटै-खोंटैले गेल।"

"निरधन किए ने आएल?"

"ओकरा तँ आरो बड़का फेड़ा लगि गेलइ। चारिये कट्ठा अपना खेत छइ। जइमे कतिका धान केने अछि। गहींरगर खेत छै धान सुतैर गेलइ। कालीए पूजा दुआरे पाकल धान खेतेमे रहलै, नइ कटलक। एक तँ बौना धान, दोसर ऊपरका खेत सबहक पानि ओलैर कऽ चलि गेल। निपुआंग धान डुमि गेलइ। पानियोँ बहैबला नहियेँ छइ। तहूमे अगहनी धान तँ कनी डँटगरो होइ छै मुदा गरमा तँ गरमे छी।"

"झोलिया किए ने आएल?"

"एक्केटा घर छै सेहो खसि पड़लै। घरक सभ किछु भीज गेल छइ। ओकरे सम्हारैमे लगल अछि।"

एक्के बेर सभ बाजल-

"जेतबे गोरे आएल छी ओतबे गोरे विचारि लिअ। जे सभ नै एला, हुनका सभकेँ कहि विचार बुझि लेब।"

साठिक दशक। किसानक बीच भारी भुमकम भेल। जहिना अनुकूल वातावरण बनने भारी बर्खा, भुमकम आ अन्हड़-तूफान अबैत तहिना खेतपर ठाढ़ रहैबलाक बीच भेल। एक दिस आजादीक दिवाना गाम-गाम जन्म लऽ अंग्रेज भगौलक तँ दोसर दिस समाज सेवा करए आगू सेहो आएल। देश भक्त सिपाही पर्याप्त देशक भीतर तैनात भऽ गेला। अंग्रेज भगौलहा-फलक गाछ सोझमे छेलैन। केना नै दोसरो-तेसरो गाछ रोपैले तैयार होएब? दुनियाँक जेते जीव-जन्तु अछि सभ सुखसँ जिनगी बितबए चाहैए। मनुक्ख तँ सहजे मनुक्ख छैथ, सभ जीवसँ ऊपर। ओ की नै बुझै छैथ जे प्रशान्त सुख पाबि लोक आध्यात्मिक पुरुष बनि सकैए। के

नइ चाहता जे मातृभूमि स्वर्गोसँ सुन्दर बनए।

एक दिस जमीन प्रतिष्ठाक मूल अधार बनि चुकल अछि तँ दोसर दिस राजा-रजबारक अन्त भेने मालगुजारीक शासन समाप्त होइतिक फल सोझमे आबि गेल। राजशाही अन्त भेने रसीदक माध्यमसँ औना-पौना दाममे जमीन बीकए लगल। बकास्त जमीनक लड़ाइ गाम-गाममे शुरू भेल। एक जबरदस भूखण्डमे बटाइदारी आन्दोलन- 'जे जमीनकेँ जोते-कोड़े ओ जमीनक मालिक छी'क नारा अकासमे उठल। धरती अपन जीवन-ले बलि मंगै छैथ, से भेल। सिकमी बटाइक कानून बनि लागू भेल। जेतए बटेदार तैयार भेल ओतए बटाइदारी हक भेटल। जेतए तैयार नै भेल ओतए अखनो लटकले अछि।

आम जमीन सभपर दसनामा संस्था सभ ठाढ़ हुअ लगल। स्कूल, अस्पताल बनए लगल। मनुक्खक मूल समस्या दिस जनमानसक नजैर दौड़ल। जइसँ तियाग-भावनाक जन्म भेल। लोअर प्राइमरी स्कूलसँ लऽ कऽ मिड्ल, हाइ स्कूल धरि बनए लगल। गोटि-पँगरा कौलेजो बनल। सरकारोक धियान शिक्षा दिस बढ़ल, जइसँ पढ़ै-लिखैक वातावरण बनए लगल। तैबीच भूदान आन्दोलन सेहो शुरू भेल। दानकेँ धरम बुझि जमीन दान हुअ लगल। गाम-गाममे भूदान कमिटीक गठन भेल। जइ गाममे कमिटी सक्रिय भऽ काज केलक ओइ गामक जमीन भूमिहीनक बीच आएल, मुदा जइ गाममे सक्रिय रूपमे काज नै भेल ओइठाम लड़ाइक अखड़ाहा बनल अछि। जइ भूदान आन्दोलक उदेस 'देशक छठम हिस्सा जमीन भूमिहीनक बीच आबए' अखनो सरकार चारि डिसमिल बास-भूमि दइक शक्ति नै रखने अछि।

गामक लोकक पड़ाइन भेने गाममे रहि खेती केनिहारकेँ स्वर्ण-अवसर भेटल। जमीनोक रूप बदलल। प्रतिष्ठाक वस्तु बुझल जाइबला जमीन रुपैआमे बदैल गेल। बैंकक सूदिक हिसाबसँ जमीनक उपजा बुझल जाए लगल। उपजाक अदहाबला बँटाइदारी प्रथा ढील भेल। मनखप, पट्टा, मनहुन्डा इत्यादिक जन्म भेल। पनरह किलो कट्ठा धानक उपजा आ दस-सँ-पनरह किलो कट्ठा गहुमक उपजा बँटाए लगल।

कोसी नहर आ नव-नव सड़क बनने चौक-चौराहाक संग-संग

बोनिहारकेँ काजो बढ़ल। मुआबजाक रुपैआ सेहो सहायक भेल। शिक्षा मित्रक बहालीक संग एन.एच.डब्लू. सेहो किछु मदैत केलक। सड़क बनने गाड़ी-सवारीक धन्धा सेहो जन्म लेलक।

मिथिलांचलमे एक नव वर्गक जन्म भेल, किसान वर्ग। मुदा ऐ वर्गक क्षेत्र छिड़ियाएल अछि। हरित-क्रान्ति एने जमीनक, माने खेतक भाग्य चमकल। मुदा जइ रूपमे चमकबाक चाही तइ रूपमे नहि। जँ एक रूपमे चमकैत तँ जहिना कहियो मिथिला दुनियाँक गुरु मानल जाइ छल तहिना फेर प्रतिष्ठित भऽ जाइत। तइमे कमी अछि।

देशमे अखनो कम क्षेत्र अछि जइमे मिथिलांचल एते इंजीनियर, डॉक्टर, वैज्ञानिक, साहित्यकार इत्यादि अछि। दुर्भाग्य ई जे ओ लोकैन मिथिला छोड़ि दुनियाँ भरिमे छिड़ियाएल छैथ। बाध्यतो छैन, ने कल-कारखाना अछि जे इंजीनियर ओइमे काज करता, आ ने स्वास्थ-ले समुचित जगह अछि जइमे डॉक्टर अपन अँटावेश करता। ने विज्ञानक शोध संस्था अछि जइमे वैज्ञानिक अपन चमत्कार देखौता आ ने पढ़ै-लिखैक समुचित बेवस्था अछि जइमे साहित्यकार अपन प्रतिभाकेँ निखारता।

गंगा ब्रह्मपुत्र मैदानी इलाका रहैत मिथिलांचल अनेको नदीसँ सकबेधल अछि। नदियो ओहन-ओहन उपद्रवी अछि जे इलाकाक इलाकाकेँ सदिकाल रूप बिगाड़िते रहैए। लोकक जिनगी एहेन दुब्बर बनि गेल अछि जे जएह लोकैन मिथिलांचलमे ठाढ़ छैथ ओ धैनवादक पात्र छैथ।

किसान वर्ग बनने जातिवादक बन्हन ढील भेल। केतेको एहेन धन्धा, खेतीसँ लऽ कऽ लघु उद्योग धरि, अछि जे खास जातिक सीमामे बान्हल छल ओ टुटि कऽ कोनो धन्धा कोनो जातियेक बीच नै रहल। मुदा जहिना कोसीमे डुमल इलाका पुन: कहियो जागि चहटी रूपमे जन्म लइए आ पुन: ओइपर बसि मनुक्ख पूर्ववत गाम बना लइए, तहिना करैक जरूरत अछि।

जातिगत पेशा बदैल जाति-बेवस्थाकेँ ढील जरूर केलक मुदा राजनीतिक कुचक्र समाजमे नव समस्याक रूपमे ठाढ़ भऽ विकासकेँ

बाधित कऽ रहल अछि। अनेको तरहक नव-नव बाधा उपस्थित भऽ रहल अछि। मुदा तँए की मिथिला मरूभूमि भऽ गेल जे कर्मयोगी पैदा करब छोड़ि देलक। कथमपि नहि।

सम्मिलित रूपमे तँ नहि, मुदा छिट-फुट रूपमे एहनो-एहनो किसान छैथ जे लाख आफत-आसमानीसँ मुकाबला करैत सोनाक स्तम्भ बनि चमैक रहला अछि। निश्चित क्षेत्र तँ निर्धारित नै कएल जा सकैए, किएक तँ सीमा-विहीन अछि, मुदा ऐ बातकेँ नकारलो नहियेँ जा सकैए जे खेतमे ओते धान उपजा रहला अछि जे जापानसँ मुकाबला करैले ठाढ़ छैथ। तहिना गहुमो, दालियोक आ फलोक अछि। अखनो हजारो ट्रक आम बाहर जाइए। एक इलाकाक तरकारी दोसर इलाका जाइए। हजारो ट्रक मसाला आन-आन राज्य जाइए। एक इलाकाक दूध दोसर-तेसर इलाका धरि बिकाइत अछि।

अखन धरिक अनौपचारिक बैसक जे समाजमे होइत रहल अछि ओ प्रोफेसर दया बाबू आ पूर्व प्रोफेसर कमल बाबूकेँ एलासँ औपचारिक रूपमे बदलए लगल। काली स्थान पहुँचते कमल बाबू बजला- “अखन धरिक समाजक, गाम-गामक, इतिहास हराएल अछि, ओकरा पहिने पकड़ू। तँए जरूरी अछि जे एकटा रजिष्टर कीनि लिखित रूपमे काज करू।”

कमल बाबूक बात सुनि मंगल सोचलैन जे लगले रजिष्टर केतएसँ आनब, से नइ तँ आइक बैसक कागतक पन्नेपर कऽ निचेनसँ रजिष्टर आनि ओइपर लिखि देबइ। तेकर कारण मनमे नचैत रहैन जे दुनू गोरे, दयोबाबू आ कमलोबाबू, बेसी काल अँटकता नहि, जोरो केना करबैन। जँ जोरो करबैन तँ पट-दे कहि देता जे गाम-समाज अहाँक छी, अपना ढंगसँ चलाउ। मुदा गामक लोक तेहेन गँरि-मुराह अछि जे धरमेक काज स्कूलो आ माइयो-बापक सेवाकेँ कहता आ अपने भरि दिन बैस झूठ-फूसमे समय बर्बाद कऽ समाजकेँ तनो-भगन करैत रहता। अन्यायक अखाड़ा समाज बनि गेल अछि। एहेन परिस्थितमे खाली “सामाजिक न्यायिक” नारा देलासँ समाज सुधैर जाएत..?

मुस्की दैत मंगल प्रोफेसर दया बाबूकेँ कहलखिन- “श्री मान्, अपने

तँ चारि साल पढ़ौने छी तँए अपनेपर अधिकार अछि जे जे नै बुझै छी ओ अखनो पुछि सकै छी। मुदा बाबाकेँ किछु पुछैक अधिकार तँ नै अछि। भलेँ ओ अपने हमरा मनक सभ सबालक जवाब दऽ दैथ।"

मंगलक पेटक बात जेना कमल बाबू बुझिते रहैथ तहिना बड़बड़ाए लगला-

"रौतुका घटना सुनि हृदय पाथरपर खसल ऐना जकाँ चूर-चूर भऽ गेल अछि। ...आँखिक नोर पोछैत-

"मुदा दोख केकर लगौल जाएत। किछु दोखी अहूँ सभ छी जे बादमे कहब। अखन एतबे कहब जे काल चक्रकेँ रोकब असान नहि। ई कालचक्र छल। तँए प्राश्चित कऽ लेब जरूरी अछि। दू मिनट सभ उठि हुनका लोकैनक क्षतिक स्मरण कऽ लिअ। रजिष्टरक पहिल पाँतिमे शोक प्रस्ताव लिखि काजकेँ आगू बढ़ाउ।"

शोक व्यक्त कऽ बैसते कमल बाबू पुछलखिन-

"समिति केते गोरेक बनौने छेलौं?"

"एक्कैस गोरेक?"

"एक तरहक अछि। अखन केते गोरे छी?"

"एगारह गोरे।"

"आरो गोरे?"

"दू गोरे हराएले छैथ, एगारह गोरे हाजिरे छी, आठ गोरे दोसर-दोसर जरूरी काजमे लगल छैथ।"

"हूँ, रौतुका झाँट तँ सभकेँ झँटनहि हेतैन।"

कहि एकाएक किछु सोचैत पुन: बजला-

"बाउ मंगल आ अनुज दयाबाबू, जहिना हम खुशीसँ जीवन-यापन कऽ रहल छी, तहिना चाहब जे अहूँ सभ जीबी, ओहूसँ नीक जिनगीक बाट बना आगूक पीढ़ि-ले दिऐ।"

कमल बाबू बजिते रहैथ आकि नेंगरो आ बौनो एक्के बेर बाजल-

"जहिना दयाकक्का पढ़ल छैथ तहिना मंगलो कौलेजक सीढ़ि

होइत कोठरी तक पहुँचल छैथ, मुदा हम सभ तँ जिनगी भरि कोदारिये किलासमे पढ़ैत रहलौं तँए...।”

ठहाका मारि उठि कऽ ठाढ़ होइत प्रोफेसर कमलनाथ समितिकेँ सम्बोधित करैत बजला- “नेंगरा आ बौकूकेँ हमर बधाइ। जे अपन सीमा देखलक। बाउ नेंगर आ बौकू, बधाइ ऐ दुआरे दुनू गोरेकेँ देलौं जे समाजक जबरदस समस्याक जड़ि पकड़लौं। अपना समाजमे ई भारी समस्या अछि जे कियो अपने सीमा-सरहद नै बुझए चाहै छैथ, तखन ओ धारक रेत जकाँ चलैत समयसँ केना जुटि सकता। जहिना पानिक रेतमे ठाढ़ भेने अपनो जान अवग्रहमे रहै छै जे रेतमे खसि, भँसिया कऽ मरि ने जाइ। तैठाम जँ कियो दस-बीस सेरक मोटरी माथपर रखने हुअए, ओकर गति ओइ रेतपर केहेन हेतै? तँए जहिना अट्टालिका बनबै काल सभसँ पहिने ईंटाकेँ देखि लेल जाइ छै, जँ से नइ देखल जाएत तँ नकटेरहीपर जहिना सभ लट्टू होइए तहिना ने हएत।”

कमल बाबू बजिते रहैथ आकि दुनू गोरे, नेंगरा आ बौका आँखिमे आँखि मिला हँसए लगल। आँखि उठा सभापर सभ नजैर दौगौलैन। कियो गम्भीर तँ कियो मुँह बाबि बुझैक परियास करैत। मुदा दुनूक हँसी हँसा देलकैन। मोन पड़लैन हुगली नदी। अपना इलाकाक जेते धार अछि ओ उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ बहैए भलेँ गंगाक ओइ कातक दच्छिनेसँ उत्तर-मुहेँ बहैत हुअए। मुदा हुगली, जे समुद्रसँ जुड़ल अछि, सोलह घन्टा एक दिसा-सँ-दोसर दिसामे बहैए आ आठ घन्टा विपरीत दिसामे। तहिना बाबाक आत्मा आ कोदारिक किलासमे पढ़निहारक आत्मा, मिलि कऽ शिवलिंग सदृश नव परमात्माक मन्दिर बना रहला अछि।

नेंगरा आ बौकू मुस्कियाइत मुड़ी निच्चाँ कऽ लेलक। दया बाबू आ मंगलकेँ गम्भीर देखि प्रोफेसर कमलनाथ बजला-

“रौतुका घटना दुखद भेल। मुदा ओ तँ काल्हुक भेल। कालक तीन गति छै- बीतल, वर्तमान आ अबैबला। जे समय बीत गेल वएह समय वर्तमान आ भविसक रस्ता देखबैए। एक हिसाबे रौतुका घटना अहाँ सभकेँ एक सीमापर आनि कऽ छोड़ि देलक। ढंगसँ एकरा बुझैक जरूरत अछि।”

आँखि उठा मंगल पुछलकैन- “कनी सोझरा कऽ कहियौ?”

“देखू अपन समाजमे केतेको पाबैन-तिहार अछि। नीको आ अधलो अछि। नीककेँ पकैड़ चलैक अछि। कोनो रातिए-टा धर्मक काजमे समय बाधा उपस्थित केलक, एहेन बात नै अछि। परिवारो सभमे देखै छी जे पावनिक सभ ओरियान भेला उत्तर कोनो अप्रिय घटना घटलासँ पूजो-पाठ आ खाइयो-पीबैमे बाधा उपस्थित भऽ जाइए। मुदा की देखै छिऐ?

..यएह ने देखै छिऐ जे पावनिक काजकेँ उसारि आगूमे उपस्थिति घटनामे लोक लगि जाइए। तहिना पारिवारिक पाबैन नै बुझि सामाजिक बुझि सोग कम करू। एहेन-एहेन सामाजिक काज- कालीपूजा, दुर्गापूजा इत्यादि सभ गाममे होइते अछि सेहो बात नै अछि। कोनो-कोनो गाममे होइतो छै आ कोनो-कोनोमे नहियोँ होइ छइ। समाज-ले, गाम-ले अनिवार्य नै अछि। मनक शान्ति-ले होइए।

..अखन अहाँ सभ ओइ सीमापर ठाढ़ छी जैठामसँ दूटा रस्ता फुटैए। पहिल, ऐगलो साल करब की नहि? समाजक विचार देखए पड़त। ऐ प्रश्नपर समाज बँटा गेल छैथ। अधिकांश लोकक मनमे ई हेतैन जे गाममे पूजा नै धारलक। तँए आगूओ नै हेबा चाही। मुदा किछु गोरे एहनो हेता जे चाहितो हेता। प्रश्न उठैए, जँ अहिना ऐगलो साल हुअए, तहन? फेर प्रश्न उठैए पूजा ओरियाने भरि रहल संकल्पित नै भेल।

..ओना, ऐठाम दूटा विचार अबैए, पहिल समाजक संकल्प आ दोसर पूजा प्रक्रिया शुरू होइत समैयक संकल्प। जे नै भेल। तँए आगू-ले विचारक मुद्दा बनि गेल अछि। फेर प्रश्न उठैए जे बेकतीगत रूपमे सभ घरे-घर वा मने-मन तँ करिते छैथ। ओना, सामाजिको स्तरपर हएब जरूरी अछि मुदा कोन रूपेँ हुअए, ई विचारणीय प्रश्न अछि। अखन धरि जइ तरहक सार्वजनिक मेलाक रूप रहल ओ आइ-ले, माने वर्तमान-ले केते नीक अछि, ऐपर विचार करए पड़त। पहिने कहि देलौं जे गामक इतिहास लिखल जाएत। जे अखन धरि रजे-रजबारक सुरा-सुन्दरीसँ लऽ कऽ कहियो-कहियो खेत-पथार-ले तँ कहियो मनोरंजन-ले होइत रहल। एक राजा-रानी राजगद्दीक सुख भोगैथ आ बाँकी सभ सीढ़ीपर ठाढ़ भऽ-भऽ एक-दोसरकेँ रोकबो करैत आ पाछू-मुहेँ धकेलबो करैत। यएह इतिहास

अपना सबहक रहल अछि।..तँए अपन समाजकेँ जेते नीक रस्तासँ आगू लऽ जाए चाहब, ओ अहाँ सबहक काज छी। मुदा समाज जेकरा बुझै छिऐ ओ मनुक्खक समाज नहि, साबेक बोझ सदृश अछि। जहिना साबेक जौरसँ घर तँ बान्हल जाइत मुदा अपन नमहर बोझ बन्हैमे केते बदमाशी करैए ओ तँ बन्हनिहारे सभ बुझैत हेता। तहिना लोकोक अछि। एक दिस समटब दोसर दिस छिड़ियाएत आ दोसर दिस समटब तेसर दिस छिड़ियाएत। ऐमे ओहू वेचाराक दोख नै छइ। कियो पेटक पाछू वौआ रहल अछि, तँ कियो मलिकानाक पाछू। मलिकाना केहेन तँ हम विधाता बनि बजै छी! अहाँकेँ आदेश मानै पड़त। वाह! वाह! भाय, विधाता बनैसँ पहिने अपन रजिष्टर सार्वजनिक करू जे हमहूँ अपना समाजक इतिहास रजिष्टरमे लिखि देखब जे केते गोरेक सवारी हवाइ जहाज छी, केते गोरेक ए.सी. कार आ केते गोरेकेँ चरणबाबूक टेक्सी।

..तँए जहिना अदौमे कोनो गाम जे बसल ओइमे पहिले-पहिल एक-दू-तीन-चारि परिवार आएल। जे अखन देखिते छी, केहेन झमटगर भऽ गेल अछि, तहिना असगरोक चिन्ता नै कऽ आगूक...।”

बिच्चेमे बौकू बाजल- “बाबा, छौड़ा सभ भोरे माछ पकड़ैले बाध दिस गेल से कनी ओकरा सभकेँ देखैक अछि जे माछे पाछू अपनो डुमल आकि बँचल आएल?”

बौकाक बात सुनि ठहाका मारि बाबा बजला-

“बौकू, जिनगीमे सभसँ पैघ सुख प्राप्त करब होइए। जेकरा सुख भेट गेलै ओकरा भगवान भेट गेलखिन। मुदा सुख केकरा कहबै से अखन नै कहबह। तहूँ धड़फड़ाएल छह। एहेन समयमे तोरा रोकब उचित नै बुझै छी। मुदा एतबे बुझि लएह जे दुख भागब सुखक आएब छी।”

आँखि उठा मुस्की दैत दयानन्द बजला-

“भाय साहैब, इतिहास लिखैक विचार तँ देलखिन मुदा पैछला इतिहास बुझल छैन की नहि, से कहाँ कहलखिन?”

“दयाबाबू, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता। अखन जइ समयमे सभ बैसल छी ओ बैसैक नै करैक समय छी। केते लोकक घर खसल हेतै,

केतेकक माल-जाल नष्ट भेल हेतै, केतेकेँ हाथ-पएर टुटल हेतै, एहेन समयमे हाथपर हाथ दऽ विचार करैक नै अछि। जेतए जे नीक गर लागए, ओतए ओइ गरे दलमलित भेल गामकेँ असथिर करू, सभ पड़ोसीए छी। समैयो बदलत। समुद्रसँ उठल केहनो वादल रहैए मुदा ओहो रसे-रसे बदैले जाइए।

..तँए अन्तिम बात यएह कहब जे आशाक संग जिनगीकेँ आगू-मुहेँ ठेलैत पहाड़पर चढ़ा अकासमे फेक दियौ।” ❑ शब्द संख्या: 3811

❑❑❑

❑❑

❑

Notes